जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौन सिटी

Rashtradoot

फोनः- 230200, 230400 फैक्सः- 07469-230600 वर्षः 17 संख्याः 227 प्रभात हिण्डौन सिटी, शनिवार 21 जून, 2025 पो. रजि.SWM-RJ-6069/2017-18 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

राहुल गांधी, अब देश का प्रधानमंत्री बनने को तैयार ही नहीं, तत्पर हैं

पहली बार वे अपने जन्म दिन, 19 जून को आयोजित ''फंक्शन'' में भाग लेने, 18 जून की रात को भारत लौट आए

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 जून। राहुल गांधी अब वह अनिच्छुक राजनीतिज्ञ नहीं रहे, जैसा उन्हें वर्षों तक बताया जाता रहा है।

कांग्रेस के उच्च पदस्थ सूत्रों का कहना है कि अब वह स्वयं को देश के सर्वोच्च पद के लिए तैयार मानते हैं। इससे भी अधिक, अब वह भारत के प्रधानमंत्री बनने के लिए उत्सुक और इच्छुक हैं।

यह परिवर्तन विपक्ष के नेता बनने के बाद आया जब उन्होंने इस पद के साथ आने वाली सत्ता और प्रभाव का अनुभव किया। इसके साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चारों ओर व्याप्त सत्ता की ताकत, पद और प्रतिष्ठा ने भी उन्हें बहुत प्रभावित किया है।

राहुल गांधी का जन्मदिन पार्टी के कई लोगों के लिए आंखें खोलने वाला रहा और अब कांग्रेस के भीतर यह चर्चा ज़ोर पकड़ रही है कि राहुल अब प्रधानमंत्री पद की ज़िम्मेदारी संभालने के लिए तैयार हैं।

राहुल गांधी के लिए उनका जन्मदिन हमेशा एक निजी मामला रहा है। वह अक्सर 19 जून को देश से बाहर रहते थे, न ही कांग्रेसजनों से मिलते थे और न ही शुभकामनाएं देने आने वाली भीड़ से।

- आज से पहले राहुल का जन्म दिवस, एक प्राइवेट मामला होता था तथा 19 जून को प्रायः विदेश में रहते थे, शायद आम कार्यकर्ता से मिलने से कतराने के कारण।
- पर, अब यह हिचकिचाहट खत्म हो गई है तथा पार्टी के कार्यकर्ताओं को सूचित कर दिया गया था कि दोपहर में दो बजे राहुल एआईसीसी में आयेंगे, जन्म दिन पर उनके अभिवादन स्वीकार करने।
- पहली बार राहुल के जन्म दिवस पर दिल्ली के प्रमुख अखबारों में पूरे पृष्ठ के विज्ञापन छपे, राहुल गांधी को जन्म दिन की बधाई देते हुए।
- राहुल गांधी में यह परिवर्तन तब से आया है, जब से वे संसद में ''लीडर ऑफ ऑपोज़िशन'' (विपक्ष के नेता) बने हैं तथा इस पद से जुड़ी गरिमा, प्रतिष्ठा व अधिकार से काफी प्रभावित हुए हैं तथा जिस प्रकार का रोब, रूतबा व महत्व मोदी को मिला, प्र.मंत्री के रूप में, वे मानते हैं, उन्हें भी मिलना चाहिए।
- वे यह भी मान रहे हैं कि उनका ''कास्ट कार्ड'' उन्हें प्र.मंत्री पद तक पहुँचायेगा और उनकी प्र.मंत्री की कुर्सी तक की पद यात्रा अब आसान भी हो गई है, क्योंकि मोदी कमज़ोर पड़े हैं, भाजपा व संघ के मतभेदों के कारण तथा नीतीश कुमार की बीमारी व शारीरिक कमज़ोरी के कारण, वे बिहार में जरूर जीतेंगे। साथ ही अमेरिका व ट्रंप अब मोदी का उतना समर्थन नहीं कर रहे, जो पहले करते थे।

इस बार सब कुछ बिल्कुल अलग था, जिसने सभी का ध्यान खींचा।

अपने जन्मदिन की पूर्व संध्या पर वह दिल्ली लौटे।

यह वापसी उनकी मां सोनिया गांधी की तबीयत के कारण नहीं थी, क्योंकि उन्हें उसी सुबह अस्पताल से छुट्टी मिल गई थी और राहुल उन्हें घर लाने गए थे।

अप्रत्याशित रूप से वह 24 अकबर रोड स्थित एआईसीसी कार्यालय पहुंचे। उनके आने से पहले संदेश दिया गया था कि वह दोपहर 2 बजे वहां आएंगे। उन्होंने वहां मौजूद कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं से

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विशाखापट्टनम में योग करेंगे प्र.मंत्री

नयी दिल्ली, 20 जून। देश और दुनिया भर में कल 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जायेगा और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम में सामूहिक योग कार्यक्रम का नेतृत्व करेंगे तीन लाख से अधिक लोगों के साथ योगासन करेंगे।

राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित इस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री के साथ केंद्रीय आयुष राज्य मंत्री और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री प्रतापराव जाधव और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू भी शामिल होंगे।

- अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित योग संगम कार्यक्रम में प्रधानमंत्री तीन लाख लोगों के साथ योग करेंगे। देश भर में दस लाख से अधिक स्थानों पर योग संगम से तालमेल कर योगाभ्यास किया जाएगा।

विशाखापत्तनम में आयोजित इस कार्यक्रम में 'योग संगम' पहल के तहत देश भर में 10 लाख से अधिक स्थानों के साथ एक साथ योग किया जाएगा।

यह कार्यक्रम सुबह साढे छह बजे शुरू होगा और पौने आठ बजे संपन्न होगा। इसमें देश भर से अभूतपूर्व भागीदारी की उम्मीद है। देश में विभिन्न जगहों पर आयोजत सत्रों में दो करोड़

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ईडी ने वरिष्ठ अधिवक्ता वेणुगोपाल को भेजे गए सम्मन को रद्द किया

सम्मन भेजने का कारण था, वेणुगोपाल द्वारा अपने ''क्लाइंट'' को दी गई कानूनी सलाह

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 जून। नवीनतम घटनाक्रम के तहत एनफोर्समैंट डायरैक्टोरेट (ईडी) प्रवर्तन निदेशालय ने वरिष्ठ अधिवक्ता प्रताप वेणुगोपाल को दिया गया समन को तत्काल प्रभाव से वापस ले लिया है। यह समन उनके द्वारा एक क्लाइंट को दी गई कानूनी सलाह के संबंध में जारी किया गया था।

गौरतलब है कि, 18 जून को ईडी ने वेणुगोपाल को समन जारी किया था, जो एम/एस केयर हेल्थ इंश्योरेंस को एम्प्लॉयी स्टॉक ओनरशिप प्लान (ईएसओपी) के संबंध में दी गई कानूनी सलाह के विषय में था। यह ईएसओपी पूर्व रिलिगेयर एंटरप्राइजेज की अध्यक्ष डॉ. रश्मि सलूजा को जारी किया गया था। इससे पहले, इसी तरह के समन वरिष्ठ अधिवक्ता अरविंद दातार को भी जारी किए गए थे, जिन्हें बाद में वापस ले लिया गया था।

सुप्रीम कोर्ट एडवोकेट्स-ऑन-रिकॉर्ड एसोसिएशन ने भारत के मुख्य

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- इसी प्रकार के सम्मन वरिष्ठ अधिवक्ता अरविंद दातार को भी भेजे गये थे, पर, फिर ईडी को उस सम्मन को भी वापस लेना पड़ा था।
- सुप्रीम कोर्ट की ''एडवोकेट्स-ऑन रिकॉर्ड'' की एसोसिएशन ने सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश को पत्र लिखा, जिसमें ईडी द्वारा वरिष्ठ व प्रतिष्ठित अधिवक्ता वेणुगोपाल को भेजे गये सम्मन की निंदा की। पत्र में यह लिखा था कि ईडी द्वारा सम्मन भेजने की कार्यवाही का ''व्यापक'' दुष्प्रभाव पड़ेगा, कानूनी कार्यवाही की निर्भयता से अपनी कानूनी राय देने के अधिकार पर'' तथा ''क्लाइंट व वकील'' के विश्वास के रिश्ते की नींव हिल जायेगी।
- ईडी के सहायक निदेशक (मुम्बई) ने तुरंत प्रभाव से सम्मन को वापस लिया।
- एडवोकेट ऑन रिकॉर्ड की एसोसिएशन ने पत्र में यह भी मांग की थी कि सुप्रीम कोर्ट स्पष्ट ''गाइडलाइन'' बनाये, जिससे ऐसे वरिष्ठ अधिवक्ताओं की, उनके अपने ''क्लाइंट'' को दी गई सलाह को आधार बनाकर वकीलों को सम्मन भेजने की प्रक्रिया की पुनरावृत्ति न हो।

'आरक्षण की 50 प्रतिशत सीमा हटाने के लिए संविधान संशोधन लाया जाए'

कांग्रेस ने कहा कि आगामी मानसून सत्र में वह जोर-शोर से यह मांग उठाएगी

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 जून। कांग्रेस ने शुक्रवार को बिहार आरक्षण कानून को संविधान की नवीं अनुसूची में शामिल करने, आरक्षण पर लगी 50 प्रतिशत की सीमा हटाने के लिए संविधान में संशोधन करने और अनुच्छेद 15(5) को लागू करने की अपनी मांग दोहराई, जो निजी शैक्षिणक संस्थानों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, ओबीसी और ईबीसी को आरक्षण प्रदान करता है।

पार्टी के महासचिव (संचार प्रभारी) जयराम रमेश ने कहा कि निश्चित रूप से पार्टी इन तीन महत्वपूर्ण मुद्दों को आगामी मानसून सत्र में संसद में उठाएगी, जो सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

जयराम रमेश ने ट्वीट किया, प्रधानमंत्री शुक्रवार को बिहार गए। बिहार में हैं। पूर्व की इंडिया गठबंधन सरकार द्वारा कराए गए जाति सर्वेक्षण के आधार पर, बिहार सरकार ने अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, ओबीसी और ईबीसी के लिए 65 प्रतिशत आरक्षण प्रस्तावित किया था। यह प्रस्ताव वर्तमान में न्यायालयों विचाराधीन है।

उन्होंने कहा कि बिहार में डबल इंजन सरकार लगभग हार मान चुकी है।

उन्होंने आगे कहा, लेकिन कांग्रेस लंबे समय से जो तीन माँगे कर रही है, वे 65 प्रतिशत आरक्षण को हकीकत बना सकती हैं।

जयराम रमेश ने बिहार आरक्षण कानून को संविधान की नवीं अनुसूची

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता, जयराम रमेश ने यह भी बताया कि बिहार की इंडिया ब्लॉक सरकार ने कास्ट सर्वे के बाद जो विधेयक पारित किए थे और जिन्हें अदालत में चुनौती दी गई है, उन्हें संविधान की नवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग भी पुरजोर तरीके से उठाई जाएगी।
- कांग्रेस अनुसूचित जाति, जनजाति, ओबीसी व आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों को प्राइवेट सैक्टर में आरक्षण देने वाले संविधान संशोधन के क्रियान्वयन की मांग भी उठाएगी। डॉ. मनमोहन सिंह के कार्यकाल में लाया गया यह संविधान संशोधन 11 साल से ठंडे बस्ते में है।

एक्सिओम मिशन -4 फिर से स्थगित

चेन्नई, 20 जून। भारतीय अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला को अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) की यात्रा पर ले जाने वाले एक्सिओम-4 मिशन को फिर से स्थगित कर दिया गया है। यह मिशन 22 जून को निर्धारित था।

एक्सिओम स्पेस ने शुक्रवार को एक नवीनतम अपडेट में कहा कि नई लॉन्च तिथि की घोषणा आने वाले दिनों में की जाएगी। मिशन शुरू में 29 मई के लिए निर्धारित किया गया था। मिशन को मौसम, एलओएक्स रिसाव और अन्य तकनीकी गड़बड़ियों की वजह से इसे कई बार स्थगित किया है। इस मिशन में आईएसएस में अंतरिक्ष यात्रियों को 14 दिनों तक रहना है और इस अवधि में वे वहां पर 60 अनुसंधान करेंगे। इनमें से सात माइक्रोग्रेविटी अनुसंधान इसरो के हैं। भारत, अमेरिका, हंगरी और पोलैंड की चार अंतरिक्षयात्रियों की टीम अंतरिक्ष यात्रा पर जाने के लिए तैयार है।

- भारतीय अंतरिक्ष यात्री शुभाशुं को अंतरिक्ष स्टेशन ले जाने वाला यह मिशन 22 जून को निर्धारित था

इज़रायल खुशी मना रहा है, ईरान की हवाई युद्ध लड़ने की ताकत पर पूरी तरह छा कर

पर, विश्व इस प्रमुख ऑयल इण्डस्ट्री पर कुप्रभाव की कल्पना करके कांप रहा है

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 जून। पिछले दो हफ्तों में अपने व्यापक हवाई अभियान के जरिए, इज़रायल ने वह हासिल कर लिया है जिसे कई लोग असंभव मानते थे: ईरान का 90 प्रतिशत लाँगरेंज एयर डिफैंस सिस्टम निष्क्रिय कर दिया है और लगभग आधी मिसाइल लॉन्चिंग क्षमता को बेअसर कर दिया गया है। लेकिन जहाँ तेल अवीव इस सैन्य सफलता का जश्न मना रहा है, वहीं दुनिया एक और खतरे के लिए तैयार हो रही है, एक अस्थिर मिडिल ईस्ट और आसमान छूती तेल की कीमतें, जो वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं को झटका दे सकती हैं।

इज़रायली हवाई हमलों की पहली लहर के साथ ही तेल बाज़ारों में तुरंत प्रतिक्रिया देखी गई। ब्रैंट क्रूड की कीमत 90 डॉलर प्रति बैरल से बढ़कर 105 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर पहुँच गई। यह उछाल सिर्फ ईरानी तेल निर्यात में रुकावट के कारण नहीं है, जो पहले से ही प्रतिबंधों के तहत है, बल्कि यह भविष्य को लेकर गहराते भय का संकेत है। ईरान ने होरमुज़ जलडमरूमध्य (स्ट्रेट ऑफ होरमुज़) को बंद करने की धमकी दी है, जो एक संकीर्ण समुद्री मार्ग है और जहाँ से दुनिया का लगभग 20 प्रतिशत तेल गुज़रता है। हालाँकि, यह मार्ग अभी खुला है, लेकिन टैंकर यातायात काफी धीमा हो गया है, और कुछ मामलों में जहाज़ों को अफ्रीका के केप ऑफ गुड होप के जरिए लंबा और महँगा रास्ता लेना पड़ा है।

इस चिंता को खाड़ी क्षेत्र से होकर गुज़रने वाले जहाज़ों के लिए बीमा प्रीमियम में अचानक हुई वृद्धि ने और बढ़ा दिया है।कई प्रमुख शिपिंग कंपनियों ने इस क्षेत्र में परिचालन रोक दिया है, और तेल कंपनियाँ डिलीवरी में देरी की सूचना दे रही हैं। इसके जवाब में, अमेरिका, भारत और चीन अपने रणनीतिक तेल भंडार से तेल जारी करने पर विचार कर रहे हैं, ताकि, स्थिति को कुछ समय के लिए संभाला जा सके। लेकिन ये उपाय केवल अस्थायी राहत दे सकते हैं। अगर सैन्य संघर्ष और तेज़ हुआ, या फिर, ईरान समर्थित लड़ाकों ने सऊदी अरब या यूएई के तेल ढांचों पर हमला किया तो दुनिया एक गंभीर आपूर्ति संकट का सामना कर सकती है।

रणनीतिक परिणाम भी उतने ही चिंताजनक है। इज़रायल ने ईरान का

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- कई ऑयल कम्पनियों ने अपने टैंकर्स में ''स्ट्रेट ऑफ होरमुज़'' में जाने से रोक दिए हैं तथा ऑयल के दाम कुछ दिनों में ही 90 डॉलर प्रति बैरल से बढ़कर 105 डॉलर प्रति बैरल हो गये हैं।
- इसके अलावा इंश्योरैंस कम्पनियों ने इन टैंकर्स को इन्श्योर करने की कीमत में भी भारी वृद्धि कर दी है।
- साथ ही, यमन हाउथीस, लेबनान के हिजबुल्लाह जैसे समुद्री लुटेरों व आतंकवादियों ने ईरान के कमज़ोर पड़ जाने के बाद अपनी गतिविधियाँ बढ़ा दी हैं।
- सभी आशंकित हैं, यह अनिश्चितता क्या कहर ढायेगी। इसका अंदाज़ा लगाना ही कठिन है।

विमान हादसा: 223 मृतकों के डीएनए सैंपल मैच हुए

अहमदाबाद, 20 जून। गुजरात के अहमदाबाद में हाल में हुए विमान हादसे में मारे गए 223 लोगों के डीएनए सैंपल का मिलान हो गया है तथा अब तक 204 मृतकों के शव उनके परिजनों को सौंपे जा चुके हैं।

- अहमदाबाद सिविल अस्पताल के अधीक्षक राकेश जोशी ने यह जानकारी देते हुए कहा कि 204 शव उनके परिजनों को सौंपे जा चुके हैं।

अहमदाबाद सिविल अस्पताल के अधीक्षक डॉ. राकेश जोशी ने शुक्रवार को कहा कि 220 रिश्तेदारों से संपर्क किया गया है। सिविल अस्पताल में उपचाराधीन दो व्यक्तियों के शव भी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

क्या वियतनाम, अफगानिस्तान, क्यूबा और ईरान के असफल प्रयासों से कुछ नहीं सीखा अमेरिका ने?

हर बार अमेरिका असफल हुआ तथा ''अग्ली अमेरिकन'' की छवि पाई, जो अब तक पूरी तरह नहीं बदल पाई है

- डॉ. सतीश मिश्रा -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 20 जून। अमेरिका ने वियतनाम, अफगानिस्तान और उससे भी पहले ईरान में मिली नाकामियों से कोई सबक सीखा है या नहीं- यह चीज राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प के इस कदम से तय होगी कि वे अपने सहयोगी इज़राइल और ईरान के बीच पश्चिम एशिया में छिड़े संघर्ष में अमेरिका को झोंकने का फैसला करते हैं या नहीं।

जब यह रिपोर्ट लिखी जा रही थी, तब तक ट्रंप ने यह स्पष्ट नहीं किया था कि अमेरिका आधिकारिक रूप से इज़राइल के युद्ध में शामिल होगा या नहीं। लेकिन इतिहास गवाह है कि वियतनाम, अफगानिस्तान, क्यूबा और यहां तक कि ईरान में भी अमेरिका की दखलअंदाजी ने उलटा असर डाला और अमेरिका की छवि ''अहंकारी अमेरिकी'' (अगली अमेरिकन) के रूप में उभरी। फिलहाल वॉशिंगटन युद्ध की तैयारियों को अंतिम रूप देता दिखाई दे रहा है - यह कोई दिखावे की चाल है या असली योजना, इसका पता जल्द ही चल जाएगा। पिछली बार जब अमेरिका ने तेहरान में तख्ता पलट किया था, तो उसका अंजाम अच्छा नहीं रहा था।

ईरान और पश्चिम के बीच तनाव का इतिहास एक निर्णायक घटना से जुड़ा है, सन् 1953 में ईरान में अमेरिकी सीआईए और ब्रिटिश एमआई6 द्वारा समर्थित तख्तापलट हुआ था, जिसमें ईरान के लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित प्रधानमंत्री मोहम्मद मोसद्देग को हटा कर, शाह मोहम्मद रज़ा पहलवी को सत्ता में वापस लाया गया था और राजशाही की बहाली की गई थी। अजीब विरोधाभास था, दो लोकतांत्रिक सरकारों-अमेरिका और ब्रिटेन-ने एक निर्वाचित सरकार को गिरा कर राजतंत्र बहाल किया- और उसे अपनी जनता के सामने विजय के रूप में प्रस्तुत किया।

ईरान की रणनीतिक स्थिति और विशाल तेल भंडार इसे वैश्विक शक्तियों, विशेष रूप से अमेरिका और ब्रिटेन, के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बना देता है।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, ब्रिटेन ने ईरान में अपनी एक मजबूत उपस्थिति बनाई, ताकि वह सोवियत संघ (जो उस समय उसका सहयोगी था) तक तेल की आवश्यक आपूर्ति सुनिश्चित कर सके और हिटलर के द्वारा शासित जर्मनी को क्षेत्र के तेल संसाधनों से दूर रखा जा सके।

युद्ध के बाद भी ब्रिटिश प्रभाव बना रहा, खासकर - ऐंग्लो-ईरानियन ऑयल कंपनी जो अब ब्रिटिश पेट्रोलियम का हिस्सा है) के माध्यम से। यह व्यवस्था 1951 में उस समय टूटी, जब मोसद्देग के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी और लोकतांत्रिक सरकार ने ईरान की संसद के जरिए तेल उद्योग का राष्ट्रीयकरण कर दिया।

यह निर्णय ईरान के संसाधनों की पुनः प्राप्ति के रूप में तो देखा गया,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- अमेरिका के सी.आई.ए. व ब्रिटेन की इंटैलिज़ैंस एजेंसी एम.आई.सिक्स ने इन प्रयासों की शुरुआत 1953 में ही कर दी थी। प्रजातंत्रीय तरीके से चुनी गई प्र.मंत्री मोहम्मद मोसद्देग की सरकार को अपदस्थ करके, शाहे मोहम्मद रिज़ा पहलवी को पुनः गद्दी पर स्थापित करके।
- चुनी गई सरकार को अपदस्थ करने का प्रमुख कारण था, ईरान की जमीन के नीचे ऑयल का अपार भंडार।
- यह ही कारण था, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जर्मनी के हाथों में ''ऑयल भंडार'' न पहुँचे, इसे रोकने के लिए अमेरिका व ब्रिटेन ने सोवियत यूनियन के लिए एक ''सप्लाई कोरिडोर'' बनाया था।
- पर, 1951 में मोसद्देग की निर्वाचित सरकार ने संसद में विधेयक पास कर, ईरान की ऑयल इण्डस्ट्री का नैशलनाइज़ेशन कर, अमेरिका व ब्रिटेन की योजना को फेल कर दिया था।

पासपोर्ट आवेदन के लिए पति के हस्ताक्षर की जरुरत नहीं

चेन्नई, 20 जून। मद्रास हाईकोर्ट ने कहा कि किसी महिला को पासपोर्ट के लिए आवेदन करने से पहले अपने पति की अनुमति लेने या उसके हस्ताक्षर करवाने की जरूरत नहीं है। जस्टिस एन आनंद वेंकटेश ने यह फैसला हाल ही में रेवती नाम की महिला की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया। रेवती ने अधिकारियों को निर्देश देने की मांग की थी कि वे उनके पति के हस्ताक्षर की अनिवार्यता के बिना ही एक नया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- मद्रास हाईकोर्ट ने याचिकाकर्ता रेवती की याचिका पर यह फैसला दिया और पासपोर्ट कार्यालय को पासपोर्ट जारी करने का आदेश दिया।

विचार बिन्दु

सफलता का केवल एक ही रहस्य है, साधारण चीजों को असाधारण तरीके से करना। –जॉन डी. रॉकफेलर

राजस्थान: आर.जी.एच.एस. पेंशनरों को परेशानी, सरकार की उदासीनता

RGHS राजस्थान सरकार द्वारा शुरू की गई एक महत्वाकांक्षी योजना है, जिसका उद्देश्य सरकारी कर्मचारियों, पेंशनरों, विधायकों, पूर्व विधायकों और अन्य पात्र लाभार्थियों को नकद रहित चिकित्सा सुविधाएँ प्रदान करना है। सितंबर 2021 में शुरू हुई यह योजना सेंट्रल गवर्नमेंट हेल्थ स्कीम (CGHS) की तर्ज पर तैयार की गई थी। इसका लक्ष्य लगभग 13 लाख सरकारी कर्मचारियों कके परिवारों को, जिसमें 8 लाख सरकारी कर्मचारी और 3.28 लाख पेंशनर शामिल हैं, उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना रहा है। योजना के तहत नकद रहित उपचार, प्रति परिवार 5 लाख रुपये तक का वार्षिक कवरेज (गंभीर बीमारियों के लिए अतिरिक्त 5 लाख रुपये), आउटडोर मरीजों (OPD) के लिए 20,000 रुपये की सीमा, और इनडोर मरीजों (IPD) के लिए कैशलेस उपचार की सुविधा प्रदान की जाती है। लेकिन इसके बावजूद, पेंशनरों को इस योजना के तहत कई गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जो इसकी उपयोगिता को कम कर रहा है। पेंशनरों की समस्याओं की लगातार अनदेखी सरकारी उदासीनता, घोटालों पर घोटालों ने इसकी विश्वसनीय को हिलाकर रख दिया है। सरकार को समस्त। जानकारी है लेकिन कोई इस पर प्रामाणिक चर्चा के लिए तैयार नहीं है। होना यह चाहिए कि योजना के परिमार्जन हेतु अन्य राज्यों की सर्वोत्तम प्रथाओं को शामिल करते हुए इसे विश्वसनीय बनाया जाए। पेंशनर्स इस समाज में सरकार के अघोषित और अवैतनिक एम्बेसडर हैं सरकार की प्राथमिकता में इन्हें सर्वोच्च स्थान मिलना चाहिए।

पेंशनरों की समस्याएँ उए के कार्यान्वयन में कई खामियों को सिद्दत से उजागर कर रही हैं। पहली और सबसे बड़ी समस्या दवाइयों की अनुपलब्धता है। पैनल में शामिल फार्मेसी स्टोर्स पर जीवन रक्षक और नियमित दवाएँ अक्सर उपलब्ध नहीं होतीं हैं। उदाहरण के लिए, बारां और कोटा जैसे जिलों में पेंशनरों ने बताया कि फार्मेसी स्टोर्स ने RGHS के तहत दवाएँ देना बंद कर दिया, क्योंकि सरकार ने उनके बकाया भुगतानों में महीनों की देरी की है। एक रिपोर्ट के अनुसार, RGHS के तहत फार्मेसी स्टोर्स के 500 करोड़ रुपये से अधिक के बिल लंबित पड़े हैं। इससे पेंशनरों को निजी तौर पर दवाएँ खरीदनी पड़ रही हैं, जो उनकी सीमित पेंशन आय पर भारी बोझ डाल रहा है। कई बुजुर्ग पेंशनरों ने अपनी बचत खर्च करने या गहने बेचने की शिकायत की है, खासकर मधुमेह, उच्च रक्तचाप, और हृदय रोग जैसी पुरानी बीमारियों के इलाज के लिए। दूसरी प्रमुख समस्या नकद रहित सुविधा का वास्तविकता में लागू न होना है। RGHS का दावा है कि यह योजना लाभार्थियों को सरकारी और पैनल में शामिल निजी अस्पतालों में नकद रहित उपचार प्रदान करती है। जबकि पेंशनरों को शिकायत की है कि अनेक अस्पताल कैशलेस सुविधा प्रदान नहीं करते और उन्हें इलाज के लिए पहले नकद भुगतान करना पड़ता है। इसके बाद प्रतिपूर्ति की प्रक्रिया इतनी जटिल और समय लेने वाली है कि कई बुजुर्ग इस प्रक्रिया को पूरा नहीं कर पाते।

जयपुर के एक 75 वर्षीय पेंशनर ने बताया कि उनके हृदय शल्य चिकित्सा के लिए 3 लाख रुपये का बिल निजी तौर पर चुकाना पड़ा, और प्रतिपूर्ति के लिए दावा जमा करने के बावजूद भुगतान नहीं मिला। यह प्रक्रिया विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के पेंशनरों के लिए और भी कठिन है, जो डिजिटल प्लेटफॉर्म और कागजी कार्रवाइयों से परिचित नहीं हैं उनकी हालत बहुत खराब है। वृद्धावस्था में दंत समस्या सबसे अधिक गम्भीर होती है लेकिन आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि दंत चिकित्सा और इससे जुड़ी अन्य सामान्य स्वास्थ्य सेवाओं को RGHS के दायरे से बाहर रख छोड़ा है। पेंशनरों, विशेष रूप से वृद्धों, को दंत समस्याओं जैसे रूट कैनाल, डेन्चर, या दाँतों की सफाई के लिए निजी क्लीनिकों पर निर्भर रहना पड़ता है। सरकार ने दंत चिकित्सा पर नाम मात्र की आपूर्ति का प्रावधान कर छोड़ा है। आज अगर एक वृद्ध व्यक्ति को यदि अपने दांतों का पूरा ढांचा लगवाना पड़े तो दो से तीन लाख रुपए खर्च करने होंगे सरकार इस पर ध्यान नहीं दे रही है। इसके अलावा, कुछ विशेष जांचें जैसे एमआरआई, सीटी स्कैन, या कैंसर स्क्रीनिंग भी कई अस्पतालों में RGHS के तहत कवर नहीं होतीं। इससे पेंशनरों को अतिरिक्त खर्च वहन करना पड़ता है।

उदाहरण के लिए, एक पेंशनर ने बताया कि उनकी कैंसर स्क्रीनिंग की लागत RGHS में शामिल नहीं थी, जिसके लिए उन्हें 50,000 रुपये निजी तौर पर खर्च करने पड़े। इसी तरह पैनल में शामिल अस्पतालों की अपर्याप्त सुविधाएँ और अनावश्यक जांचें हैं। कई निजी अस्पतालों में बुनियादी सुविधाओं जैसे पर्याप्त बेड, विशेषज्ञ डॉक्टर, या उन्नत उपकरणों की कमी है। इसके विपरीत, कुछ अस्पताल अनावश्यक जांचें और लंबे समय तक भर्ती करके RGHS फंड का दुरुपयोग करते हैं। जयपुर के एक निजी अस्पताल में एक पेंशनर को सामान्य बुखार के लिए 10 दिन तक भर्ती रखा गया और 28 जांचें की गईं, जो चिकित्सकीय रूप से अनावश्यक थीं। यह न केवल पेंशनरों के लिए परेशानी का कारण बनता है, बल्कि योजना के संसाधनों का दुरुपयोग भी करता है। सरकारी अस्पतालों में भी स्थिति बेहतर नहीं है, जहाँ बेड की कमी, लंबी प्रतीक्षा अवधि, और विशेषज्ञ डॉक्टरों की अनुपस्थिति आम समस्याएँ हैं। पेंशनर्स के प्रतिपूर्ति प्रक्रिया में देरी और अस्वीकृति है जो उनके लिए बड़ी परेशानी का कारण है। जब पेंशनरों को नकद भुगतान करना पड़ता है, तो वे ऑनलाइन RGHS पोर्टल के माध्यम से दावा जमा करते हैं। जिसमें अनेक मामलों में दावे तकनीकी कारणों जैसे अपूर्ण दस्तावेज या अस्पष्ट नियमों के कारण अस्वीकार कर दिए जाते हैं। 2024 में एक सर्वेक्षण में पाया गया

जयपुर के एक 75 वर्षीय पेंशनर ने बताया कि उनके हृदय शल्य चिकित्सा के लिए 3 लाख रुपये का बिल निजी तौर पर चुकाना पड़ा, और प्रतिपूर्ति के लिए दावा जमा करने के बावजूद भुगतान नहीं मिला। यह प्रक्रिया विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के पेंशनरों के लिए और भी कठिन है, जो डिजिटल प्लेटफॉर्म और कागजी कार्रवाइयों से परिचित नहीं हैं उनकी हालत बहुत खराब है।

कि RGHS के तहत 30% से अधिक दावे 3-6 महीने से अधिक समय तक लंबित रहते हैं। यह देरी पेंशनरों के लिए वित्तीय तनाव का कारण बनती है, खासकर उन लोगों के लिए जो पहले ही इलाज पर अपनी बचत खर्च कर चुके हैं। सरकारी उदासीनता ने इन समस्याओं को और गंभीर किया है। सबसे पहले, बकाया भुगतानों में देरी ने फार्मेसी स्टोर्स और अस्पतालों को उए के तहत सेवाएँ देने से हतोत्साहित किया है। 2024 तक, अनुमानित 500 करोड़ रुपये के बिल लंबित थे, जिसके कारण कई अस्पतालों ने कैशलेस सुविधा बंद कर दी। दूसरा, निगरानी तंत्र की कमी ने घोटालों को बढ़ावा दिया है। उदाहरण के लिए, राजस्थान मेडिकल सर्विस कॉरपोरेशन लिमिटेड में 343 करोड़ रुपये का टेंडर घोटाला सामने आया, जिसमें फर्जी बिलिंग और अधिकारियों की मिलीभगत शामिल थी। तीसरा, पेंशनरों के बीच जागरूकता की कमी एक बड़ी समस्या है। कई पेंशनरों को RGHS के नियमों, पात्रता, और प्रक्रियाओं की जानकारी नहीं है। सरकार ने इसके लिए जागरूकता अभियानों पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया। चौथा, RGHS का प्रशासनिक ढांचा बार-बार बदल रहा है, जैसे कि हाल ही में वित्त विभाग से चिकित्सा विभाग को योजना हस्तांतरण की है, जिसने भ्रम और अक्षमता को बढ़ाया है। RGHS में घोटाले इस योजना की विश्वसनीयता को और कम कर रहे हैं। फर्जी बिलिंग एक प्रमुख समस्या है, जिसमें अस्पताल अनावश्यक जांचें और भर्ती करके RGHS फंड का दुरुपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए एक जांच में पाया गया कि जयपुर और उदयपुर के कुछ अस्पतालों ने सामान्य बीमारियों के लिए 5-10 लाख रुपये के बिल बनाए, जो चिकित्सकीय रूप से अनुचित थे। इसके अलावा, 2000 करोड़ रुपये के फर्जी बिलों का मामला सामने आया, जिसमें दवाइयों और उपकरणों के लिए फर्जी टेंडर शामिल थे। इन घोटालों में अधिकारियों, डॉक्टरों, और निजी कंपनियों की मिलीभगत की बात सामने आई है। नकली दवाएँ और फार्मेसी स्टोर्स पर जीवन रक्षक दवाओं की अनुपलब्धता ने भी पेंशनरों का विश्वास तोड़ा है। इन समस्याओं के समाधान के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं। पहला, प्रशासनिक सुधार जरूरी हैं। एक स्वतंत्र निगरानी समिति का गठन किया जाए, जिसमें चिकित्सा विशेषज्ञ, पेंशनर प्रतिनिधि, और ऑडिटर शामिल हों। यह समिति नियमित रूप से अस्पतालों और फार्मेसी स्टोर्स की जाँच करे। अस्पतालों और स्टोर्स को समय पर भुगतान के लिए एक ऑनलाइन ट्रैकिंग सिस्टम लागू किया जाए। दूसरा, पेंशनरों की सुविधा के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाएँ, जिसमें हिंदी में सरल जानकारी उपलब्ध कराई जाए। प्रत्येक जिले में RGHS शिकायत निवारण केंद्र स्थापित किए जाएँ, और मौजूदा हेल्पलाइन (181) को और प्रभावी बनाया जाए। दंत चिकित्सा और विशेष जांचों को RGHS के दायरे में शामिल किया जाए। तीसरा, घोटालों की रोकथाम के लिए ऑनलाइन ऑडिट सिस्टम लागू किया जाए, जिसमें AI और मशीन लर्निंग का उपयोग हो। फर्जी बिलिंग में शामिल अस्पतालों को पैनल से हटाया जाए और उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाए। चौथा, RGHS पोर्टल और मोबाइल ऐप को बुजुर्गों के लिए सरल बनाया जाए, जिसमें हिंदी भाषा और वॉयस कमांड का विकल्प हो। एक डिजिटल ई-वॉलेट सिस्टम शुरू किया जाए, जिसमें पेंशनरों के चिकित्सा रिकॉर्ड और शेष राशि की जानकारी हो। इसी प्रकार अन्य राज्यों की सर्वोत्तम प्रथाएँ RGHS को बेहतर बनाने में मदद कर सकती हैं।

केंद्र सरकार स्वास्थ्य योजना (CGHS) में देश भर में 300 से अधिक शहरों में पैनल अस्पतालों का व्यापक नेटवर्क है। RGHS को भी अन्य राज्यों में अस्पतालों का विस्तार करना चाहिए। CGHS की तरह ऑनलाइन दवा वितरण शुरू किया जाए। तमिलनाडु की मुख्यमंत्री व्यापक स्वास्थ्य बीमा योजना (CMCHIS) में ऑनलाइन दावा ट्रैकिंग और त्वरित निपटान की प्रणाली है, जिसे RGHS में लागू किया जा सकता है। तमिलनाडु का PPP मॉडल भी अस्पतालों की संख्या बढ़ाने में उपयोगी हो सकता है। केरल की करुणा स्वास्थ्य योजना में गंभीर बीमारियों के लिए विशेष कवरेज और सामुदायिक भागीदारी के उदाहरण अपनाए जा सकते हैं। दिल्ली की आयुष्मान भारत योजना में मोबाइल स्वास्थ्य क्लीनिक ग्रामीण क्षेत्रों के लिए उपयोगी हो सकते हैं। स्पष्ट है कि RGHS में पेंशनरों की समस्याएँ, जैसे दवाइयों की अनुपलब्धता, नकद रहित सुविधा का अभाव, और घोटाले, इस योजना की कमजोरियों को दर्शाते हैं। सरकारी उदासीनता ने इन समस्याओं को और बढ़ाया है। प्रशासनिक सुधार, तकनीकी उन्नयन, और अन्य राज्यों की सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाकर RGHS को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। यह योजना पेंशनरों के लिए एक महत्वपूर्ण सहारा बन सकती है, बशर्ते सरकार इन समस्याओं को गंभीरता से ले और त्वरित कदम उठाए। पेंशनर्स के प्रति सरकार का सौहार्द पूर्ण रवैया स्वयं सरकार की शाख को बढ़ाने वाला होगा। वरिष्ठ नागरिकों की हिफाजत और उनका सम्मान किसी भी समाज की संवेदनशीलता का प्रमाण होता है आशा है सरकार इस दिशा में समुचित कदम उठाएगी।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र मोहन शर्मा,
वरिष्ठ साहित्यकार शिक्षाविद् और चिन्तक

पाली जिले के लिये वरदान जवाई बांध परियोजना - जल संरक्षण की मजबूत मिसाल

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की मंशा है कि प्रदेश में जल की कमी न हो, प्रदेश हरा-भरा और स्वच्छ हो

सौरभ सिंगारिया

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की मंशा है कि प्रदेश में जल की कमी न हो, उसका संरक्षण और संग्रहण किया जाए जिससे प्रदेश खुशहाल बने, साथ ही प्रदेश में वृहद स्तर पर पौधारोपण किया जाए जिससे कि प्रदेश हरा-भरा बने।

इसी लक्ष्य प्राप्ति के लिए राज्य में ने वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान 5 जून, 2025 से प्रांरभ किया है जिसमें जल संरक्षण संठाहण, पर्यावरण संरक्षण व पौधारोपण , स्वच्छता और इसके लिये जागरूकता को महत्व दिया है।

जवाई बांध - पाली की लाइफलाइन :-इस बाँध का शिलान्यास जोधपुर महाराजा उम्मेदसिंह द्वारा 13 मई, 1946 को किया गया था। परियोजना की कुल लागत 2.60 करोड रूपये थी। बांध निर्माण कार्य 1957 में पूर्ण हुआ। निर्माण के बाद 1973 में प्रथम बार गेट खोल कर पानी की निकासी की गई एवं बांध का गेज 60.00 फिट से बढ़ाकर 61.25 फीट किया गया।

बांध में पानी की आवक बढाने के लिये वर्ष 1969 से 1978 के मध्य सेई अपर्वतन योजना का कार्य किया गया। सेई बांध से 6776 मीटर लम्बी सुरंग के माध्यम से जवाई बांध में पानी का अपर्वतन प्रारम्भ किया गया। वर्ष 2006 के दौरान सेई बांध की उचाई 8.25 मीटर से बढाकर 10.93 मीटर की गई जिसमें जवाई बांध को अतिरिक्त 516 मीट्रिक घन फीट पानी उपलब्ध हो सका। निर्माण के 63 वर्षो में अब तक अब तक जवाई बांध मात्र 9 बार ही पूर्ण भरा एवं वर्ष 1973 से 2017 के बीच आठ बार जवाई बांध के गेट खोलकर पानी को जवाई नदी में छोडा गया।

पेयजल में प्रमुख स्त्रोत :- जवाई बांध से वर्तमान में सिरोही जिले के शिवगंज कस्बे एवं पाली जिले के शहरों समेत 9 कस्बों सुमेरपुर, देसूरी, रानी, जैतारण, मारवाड़ जंक्शन, रायपुर, रोहट, सोजत व बाली तथा 985 गांवों को पेयजल उपलब्ध कराया जा रहा है।

सिंचाई से किसानों को लाभ :- जवाई बांध से 57 गांवों के 38671.00 हैक्टेयर (पाली जिले के 33 गांव एवं जालौर जिले के 24 गांवों के 38600 किसान सिंचाई सुविधा से लाभान्वित होते है।

नहरों की स्थिति :- जवाई कमाण्ड क्षेत्र में मुख्य नहर 23.10 किमी. लम्बी है। इस नहर की 5 वितरिकाए हैं, जिनकी लम्बाई 133.30 किमी. एवं 16 माइनर नहरों की लम्बाई 97.40 किमी. है। इनके द्वारा कुल 233.80 किमी. लम्बाई की पक्की नहरों द्वारा सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है।

जल संगम :- जवाई कमाण्ड क्षेत्र में सरकार व किसानों के बीच तालमेल व सिंचाई में सरकार की ओर से पारदर्शिता के लिये किसानों के लिये 15 जल उपभोक्ता संगम है। इनके सहयोग से जल वितरण समिति की बैठक में पारित प्रस्ताव व निर्णयों के अनुसार टेल से हेड तक खसरों के क्षैत्रफल के अनुसार काश्तकारों को समय आवंटित कर बाराबंदी व्यवस्था से सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई जाती है।

जवाई बांध में पानी लाने वाली सेई बांध की सुरंग को 1.5 मीटर गहरा करने हेतु कार्य प्रगति पर है। इस कार्य के बाद जवाई को 840 मीट्रिक घन फीट प्रतिवर्ष अतिरिक्त पानी उपलब्ध होगा।

वर्तमान में जवाई का जल स्तर 60 फीट है। जवाई बांध और इसके आसपास का क्षेत्र पिछले कुछ समय से देश के पर्यटन मानचित्र पर नया सितारा बनकर उभरा है। जवाई लेपर्ड सवारी देश-विदेश के सेलिब्रिटी के बीच आकर्षण का केन्द्र बना है जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था में जबर्दस्त परिवर्तन आया है।

सौरभ सिंगारिया
सहायक निदेशक, पाली
सूचना एवं जनसंपर्क
विभाग, राजस्थान

म्यूचुअल फंड्स को भी डीमैट में लाना क्यों ज़रूरी है?

सुनील दत्त गोयल

भारत में पूंजी बाजार लगातार विकसित हो रहा है। भारतीय वित्तीय बाजार में डिजिटलीकरण की क्रांति ने पिछले दशकों में अभूतपूर्व परिवर्तन लाए हैं। टेक्नोलॉजी, पारदर्शिता और निवेशकों के हितों की रक्षा को ध्यान में रखते हुए भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) और सरकार ने समय-समय पर कई दूरदर्शी निर्णय लिए हैं। स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध सभी सिक्योरिटीज को 100ः डीमैट (डिमैटेरियलाइज्ड) फॉर्मेट में लाना ऐसा ही एक कदम था, जिसने शेयर बाजार में धोखाधड़ी की संभावनाओं को कम किया और लेनदेन को त्वरित एवं पारदर्शी बनाया। सेबी और सरकार डिजिटलीकरण का ढिंढोरा तो पीटती हैं, मगर म्यूचुअल फंड्स के मामले में जानबूझकर पिछड़ापन क्यों बनाए हुए हैं? शेयरों और प्राइवेट कंपनी शेयरों को डीमैट में बदलकर उन्होंने दिखा दिया कि वे जानते हैं कि कैसे धोखाधड़ी रोकी जाती है। फिर इस 72 लाख करोड़ के एक महत्वपूर्ण निवेश के साधन म्यूचुअल फंड्स को डीमैट में अनिवार्य करने की दिशा में अब तक कदम क्यों नहीं उठाया गया? क्या यह जानबूझकर की गई लापरवाही है?

देश की एसेट मैनेजमेंट कंपनियां (ए एम सी) करोड़ों निवेशकों का पैसा संभालती हैं। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एम्फी) द्वारा जारी नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, मई 2025 के अंत में कुल एयूएम 72.18 लाख करोड़ था। यह पिछले महीनों की तुलना में पर्याप्त वृद्धि और साल-दर-साल उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाता है, जिसमें उद्योग का एयूएम अप्रैल 2025 में 70 ट्रिलियन का आंकड़ा पार कर गया है।

यह बात समझ से परे है: म्यूचुअल फंड्स का वॉल्यूम आज लिस्टेड सिक्योरिटीज के वॉल्यूम के लगभग बराबर है। इसके बावजूद यह पारंपरिक और जटिल व्यवस्थाओं में फंसा हुआ है। म्यूचुअल फंड यूनिट्स को 100ः डीमैट में लाने से न केवल निवेशकों का काम आसान होगा, बल्कि पूरे बाजार में क्रांतिकारी बदलाव होगा। जैसे आरबीआई हर रोज डॉलर और विदेशी मुद्राओं की दर तय करता है, वैसे ही म्यूचुअल फंड्स की एनएवी तो रोज घोषित होती है, फिर यही यूनिट्स उसी दिन के भाव पर क्यों नहीं खरीदी-बेची जा सकतीं? क्या तकनीक नहीं है, या फिर इच्छाशक्ति की कमी है?

वर्तमान स्थिति और चुनौतियां

वर्तमान में, म्यूचुअल फंड्स में निवेश के लिए निवेशकों के पास दो विकल्प हैं - या तो स्टेटमेंट ऑफ अकाउंट (एसओए) के माध्यम से या फिर डीमैट अकाउंट के माध्यम से। हालांकि, डीमैट फॉर्मेट एक विकल्प मात्र है, अनिवार्य नहीं। इससे कई समस्याएं उत्पन्न होती हैं, जैसे रिडेम्पशन में देरी, पेपरवर्क की अधिकता, और निवेशकों के लिए अपने पोर्टफोलियो का समग्र दृश्य प्राप्त करने में कठिनाई। भारत में म्यूचुअल फंड उद्योग का आकार विशाल है। मई 2025 तक, भारतीय म्यूचुअल फंड उद्योग का एसेट अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) 72.20 लाख करोड़ तक पहुंच गया है। यह आंकड़ा दर्शाता है कि म्यूचुअल फंड्स अब भारतीय निवेशकों के बीच कितने लोकप्रिय हो गए हैं। इतने बड़े बाजार के लिए एक समान, पारदर्शी और कुशल प्रणाली की आवश्यकता है।

डीमैट फॉर्मेट के लाभ

म्यूचुअल फंड्स को अनिवार्य रूप से डीमैट फॉर्मेट में लाने से कई महत्वपूर्ण लाभ होंगे:

निवेशकों के लिए लाभ

1. रियल-टाइम ट्रांजैक्शन: निवेशक तुरंत ऑनलाइन रिडेम्पशन और खरीद कर सकेंगे, जिससे उन्हें उसी दिन का नवीनतम मूल्य मिलेगा, बिना एक दिन का इंतज़ार किए।

2. एकीकृत पोर्टफोलियो दृश्य: निवेशक अपने सभी निवेशों - शेयर, बॉन्ड और म्यूचुअल फंड्स - को एक ही डीमैट अकाउंट में देख सकेंगे, जिससे पोर्टफोलियो प्रबंधन आसान होगा।

3. पेपरवर्क में कमी: डीमैट फॉर्मेट में म्यूचुअल फंड्स रखने से भौतिक दस्तावेजों या पेपरवर्क की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी।समस्त कार्य पेपर लेस होने की वजह से माननीय मोदी सरकार का डिजिटल इंडिया का सपना साकार होता है ।

बाजार के लिए लाभ

1. बाजार में वॉल्यूम वृद्धि: म्यूचुअल फंड्स को ट्रेडेबल बनाने से बाजार में वॉल्यूम में तुरंत प्रभाव से वर्तमान मूल्यांकन के हिसाब से बेहतर 72 लाख करोड रुपए से भी अधिक की उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

2. रॉन्ग सेलिंग पर लगाम: एजेंट्स या डिस्ट्रीब्यूटर्स द्वारा स्कीम की गलत बिक्री की संभावनाएं खत्म हो जाएंगी।

3. ब्रोकर्स के लिए अवसर: शेयर बाजार के ब्रोकर्स के पास बड़ा वॉल्यूम आएगा, जिससे उनके व्यवसाय में वृद्धि होगी।

4. डिजिटल परिवर्तन: पूरा म्यूचुअल फंड सिस्टम डिजिटल हो जाएगा, जिससे भारत के डिजिटल वित्तीय परिवर्तन को बढ़ावा मिलेगा।

फंड मैनेजर्स के लिए लाभ

फंड मैनेजर्स पर दैनिक रिडेम्पशन और नए निवेश के मानसिक दबाव से मुक्ति मिलेगी। रिडेम्पशन के दबाव से मुक्त होकर वे बेहतर और दीर्घकालिक रणनीतियों पर काम कर पाएंगे, जिससे उनके निवेश निर्णय बेहतर होंगे।

कार्यान्वयन का प्रस्तावित मॉडल

म्यूचुअल फंड्स को ट्रेडेबल बनाने के लिए एक मॉडल प्रस्तावित किया जा सकता है:-

1. एनएसई का म्यूचुअल फंड सर्विस सिस्टम (एमएफएसएस): एनएसई पहले से ही एमएफएसएस प्रदान करता है, इसी प्रकार बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में बीएसई स्टार, जिसके माध्यम से निवेशक म्यूचुअल फंड यूनिट्स खरीद और बेच सकते हैं। इस प्रणाली को विस्तारित करके सभी म्यूचुअल फंड्स के लिए अनिवार्य किया जा सकता है।

2. डेली एनएवी के आधार पर ट्रेडिंग: जैसे आरबीआई हर दिन विदेशी मुद्राओं के लिए रेट तय करता है, वैसे ही म्यूचुअल फंड कंपनियां हर शाम अपनी एनएवी घोषित करती हैं। इसी एनएवी के आधार पर अगले दिन की ट्रेडिंग हो सकती है।

3. डिपॉजिटरी सिस्टम का उपयोग: एनएसडीएल और सीएसडीएल जैसे डिपॉजिटरीज पहले से ही म्यूचुअल फंड यूनिट्स को डीमैट फॉर्म में रखने की सुविधा प्रदान करते हैं। इस व्यवस्था को अनिवार्य बनाया जा सकता है।

सरकार और सेबी से अपेक्षा

जब सेबी ने लिस्टेड सिक्योरिटीज और प्राइवेट लिमिटेड कंपनियों के लिए डीमैट फॉर्मेट अनिवार्य कर दिया है, तो समय आ गया है कि सरकार और सेबी सभी स्टेकहोल्डर्स से चर्चा कर इस महत्वपूर्ण सुधार को लागू करें। म्यूचुअल फंड्स को अनिवार्य डीमैट फॉर्मेट में लाकर भारत के शेयर बाजार को पारदर्शिता, तरलता और निवेशकों के विश्वास का नया आधार दिया जाए। यह न केवल निवेशकों के लिए सुविधाजनक होगा, बल्कि पूरे वित्तीय बाजार के लिए एक नए युग की शुरुआत होगी। सरकार और सेबी को सभी हितधारकों - एसेट मैनेजमेंट कंपनियों, स्टॉक एक्सचेंजों, डिपॉजिटरीज और निवेशकों - के साथ मिलकर इस परिवर्तन को लागू करने के लिए एक रोडमैप तैयार करना चाहिए। यह कदम भारतीय वित्तीय बाजारों में पारदर्शिता, कुशलता और डिजिटलीकरण को बढ़ावा देगा, जिससे अंततः निवेशकों का कल्याण होगा। भारत के वित्तीय बाजारों में यह परिवर्तन एक नए जीवन, नए युग और नई दिशा की शुरुआत होगी, जो हमारे देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

सुनील दत्त गोयल,
महानिदेशक, इम्पीरियल
चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री
जयपुर।

राशिफल शनिवार 21 जून, 2025

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2082, अश्विनी नक्षत्र सायं 7:50 तक, अतिगंड योग रात्रि 8:29 तक, विष्टिकरण प्रातः 7:19 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मेष, मंगल-सिंह, बुध-मिथुन, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज भद्रा प्रातः 7:19 तक है। सायन कर्क में सूर्य प्रवेश प्रातः 8:12 पर होगा। आज योगिनी एकादशी व्रत स्मार्तों का है। आज एकादशी तिथि का क्षय हुआ है। आज सूर्य दक्षिणायन आरम्भ होगा। वर्षा ऋतु आरम्भ होगी।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ 7:20 से 9:03 तक, चर 12:38 से 2:11 तक, लाभ-अमृत 2:11 से 5:36 तक।

राहूकालः 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:19

मेष
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

वृष
मित्रों-रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

मकर
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

तुला
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

कुंभ
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सार-समाचार

भाजपा कार्यालय में योग कार्यक्रम सम्पन्न

भरतपुर (निस)। 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की श्रृंखला के तहत ''योगासंगम-2025'' में 'एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य के लिए योग' एक थीम कार्यक्रम के अंतर्गत शुक्रवार को भारतीय जनता पार्टी कार्यालय भरतपुर में भाजपा जिलाध्यक्ष षिवानीदायमा के नेतृत्व में योगाभ्यास कार्यक्रम किया गया। जिसमें सैंकड़ों की संख्या में भाजपा पदाधिकारी, गणमान्य नागरिक एवं महिलायें उपस्थित रहे। योग कार्यक्रम में जिलाध्यक्ष शिवानी दायमा ने सभी योग करने वाले नागरिकों को योग द्वारा स्वस्थ और मस्त रहने का सुझाव दिया। प्रत्येक व्यक्ति को योग ही नीरोग बनाता है। कार्यक्रम में योग दिवस के संभाग प्रभारी अरविन्दपाल सिंह ने बताया कि हमें निरंतर योग करना चाहिए, योग करने से हमारी नाड़ी तंत्र सुदृढ़ और मन एकाठाचित्त रहता है। जिला संयोजक देवेन्द्र चामड ने सभी योग करने वाले नागरिकों को जलपान कराया। जिला सह प्रभारी कुलदीप पोसवाल एवं महेष वाल्मिकी ने सभी आगन्तुकों को धन्यवाद प्रेषित किया। योग प्रषिक्षक वीरेन्द्र अठावाल, प्रेम सिंह आर्य, वीरी सिंह ने योग कार्यक्रम करवाये। कार्यक्रम में पूर्व प्रदेष मंत्री गिरधारी तिवारी, पूर्व जिलाध्यक्ष सत्येन्द्र गोयल, गिरधारी गुप्ता, राजू कटारा, श्याम सुंदर गौड़, मनोज खण्डेलवाल, जगदीष अजान, डॉ. वीरेन्द्र पचौरी, रूपेन्द्र जधीना, राकेष सर्राफ, धीरेन्द्र बिल्लू, नरेन्द्र सिंघल, संजीव शर्मा, पंकज शर्मा, दिनेष लवानिया, जीतेन्द्र सिंह, नरेष जाटव चन्द्रप्रकाश शर्मा, चिरौजा चाची, अन्नू कुमारी, प्रो. जग्गो सिंह, अमर सिंह सिनसिनवार, चन्द्रवीर जघीना, गौरव सरपंच, आकाष हथैनी, अनामिका चौधरी, नरेष जाटव, कन्हैया जादौन, अभय सिंह गुर्जर आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे। भरतपुर जिले में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून, 2025 को केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, विष्व प्रिय शास्त्री पार्क, गौरव बेटी पार्क, गंगा मंदिर, किषोरी महल, मल्टीपरपज हॉल लोहगढ़ स्टेडियम, अपना घर आश्रम बझेरा स्थानों पर 'योगासंगम कार्यक्रम' होगा। जिलाध्यक्ष षिवानी दायमा ने सभी भरतपुर वासियों से अपने नजदीकी योगस्थल पर अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने का आवहन किया है।

कई बस्तियों में घुसा पानी, लाखों का नुकसान

हिण्डौन सिटी (का.सं.)। मानसून के आगमन के साथ शहर की दुकानों व निचली बस्तियों में पानी भर गया है जिससे लोगों का घरा से निकलना मुश्किल हो गया है वही दुकानदारों के दुकानों में पानी भरने से लाखों रूपयों का नुकसान हो गया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार कटरा बाजार में हुई भारी बारिश के कारण कई दुकानों में पानी भर गया है। यह समस्या मुख्य रूप से उन दुकानों में है जो निचले इलाकों में स्थित हैं या जल निकासी की उचित व्यवस्था नहीं है। बारिश का पानी दुकानों में घुसने से न केवल दुकानों का सामान खराब हो गया है, बल्कि दुकानदारों को भी काफी नुकसान हुआ है। वही लोगों को घर से बाहर निकलना मुश्किल हो निचले इलाकों के कच्ची दलित बस्तियों में खाना बनाने व सोने तक की जगह नही बची है। पूर्व प्रदेश अध्यक्ष समता पार्टी राजस्थान के हुकमसिंह कश्यप ने बताया कि पानी की निकासी के लिए कोई उचित व्यवस्था नहीं है, जिसके कारण बारिश का पानी दुकानों में जमा हो जाता है। इसके अलवा कुछ लोगों ने यह भी कहा कि जल निकासी की नालियां भी साफ नहीं हैं, जिससे पानी का बहाव रूक जाता है और दुकानों में पानी भर जाता है। यह समस्या शहर के कई निचले इलाकों कटरा बाजार, कम्बलवाल गली, पुरानी मण्डी, ब्यानिया पाडा, धाकडपोठा, खटीक पाडा, कोली पाडा, जाट की सराय जाटव बस्ती, शीतला चौराहा, वाल्मिकी बस्ती, दुब्बे पाडा, चौबे पाड़ा, केशव मार्ग, पंजाबी कॉलोनी, माली पाडा, केशवपुरा देखी जा रही है, जिससे दुकानदरों में काफी आक्रोश है। स्थानीय लोगों सुरेश, मुकेश, राकेश, पंकज, उस्मान धर्मवीर, पप्पू वीरेन्द्र, सुरेन्द्र आदि ने प्रशासन से इस समस्या का जल्द समाधान करने की मांग की है, ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं से बचा जा सके।

नाले में गिर कर गौवंश घायल

गंगापुर सिटी । नगर परिषद की लापरवाही से एक गोवंश की जान खतरे में पड गई। गुरुवार रात 11 बजे एक गोवंश खुले नाले में गिर गया। शुक्रवार सुबह 7 बजे उदेई मोड पुलिस चौकी के सामने मौजूद लोगों ने गो सेवा समिति जिलाध्यक्ष गोविंद नारायण शर्मा को सूचना दी। गोविंद नारायण शर्मा अपनी टीम के साथ तुरंत मौके पर पहुंचे। उन्होंने नाले में फंसे गोवंश को सुरक्षित बाहर निकाला। नाले में लगभग 8-9 घंटे तक फंसे रहने से गोवंश घायल हो गया था। पशु चिकित्सक से इलाज कराने के बाद उसे गोशाला भेजा गया। स्थानीय गोसेवक हर साल बारिश से पहले नगर परिषद को खुले नालों की सफाई और ढकने के लिए सूचित करते हैं, लेकिन नगर परिषद कोई कार्रवाई नहीं करती। शहर के अधिकतर नाले गंदगी और कचरे से भरे हैं। सडकों पर पानी जमा रहता है। नालों की सफाई और मरम्मत समय पर नहीं होती। गोसेवकों ने इस मुद्दे पर कई बार नगर परिषद को ज्ञापन सौंपा है। गोविंद नारायण शर्मा ने जिला अधीक्षक को भी इस समस्या से अवगत करा दिया है। उन्होंने चेतावनी दी है कि अगर जल्द समाधान नहीं किया गया तो गौसेवक आंदोलन करेंगे। इसकी जिम्मेदारी नगर परिषद और स्थानीय प्रशासन की होगी।

एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य के लिए योग प्रतियोगिता का आयोजन

गंगापुर सिटी । 11वे योग दिवस के उपलक्ष्य में माय भारत युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार के निर्देशन में माय भारत वॉलिंटियर्स रिजुल गर्ग द्वारा गंगापुर सिटी बायपास स्थित आर एस एल डी सी बिना सॉफ्ट एजुकेशन एंड वेलफेयर सोसाइटी केंद्र पर थीम एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य के लिए योग पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कई युवाओं ने बढ चढकर हिस्सा लिया और योग क्रियाओं के बारे मे भी अवगत कराया। इसमें युवाओं सहित कर्मचारियों ने भी उत्साह से भाग लिया। स्वयंसेवक रिजुल ने बताया कि योग ऐसा ध्यान जिससे हम शारीरिक स्वस्थ रह सकते है। इस क्रम में संस्था हेड आसिम खान ने बताया की योग करे निरोग रहे और संतुलित एवं युक्ति पूर्वक आहार विहार के साथ योग क्रियाओ के अभ्यास से शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया जा सकता है। युवाओं को प्रतिदिन 3० मिनट योग अवश्य करना चाहिए जिससे उनका मानसिक विकास एवं शारीरिक विकास सही रह सके। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर नरेंद्र सैनी, द्वितीय स्थान कोमल चंद योगी व तृतीय स्थान पर विसन सिंह जादौन रहे। इस दौरान रिजुल गर्ग, खेमराज गुप्ता, राहुल जागा, आसिफ खान, देवी सिंह गुर्जर, बलवीर गुर्जर, राहुल जागा, इमरान खान एवं सभी युवा मौजूद रहे।

शिविर का आयोजन

भरतपुर (निस)। तीन दिवसीय विद्यार्थी उज्जवल भविष्य निर्माण शिविर का आयोजन युवा सेवा संघ द्वारा जघिना गेट सर्कुलर रोड स्थित संत आसाराम बापू आश्रम पर आयोजित किया गया प्रथम दो दिन पांचवी से आठवीं कक्षा के विद्यार्थी के लिए प्रात: 6 बजे से दोपहर तक तथा रविवार सुबह से शाम तक युवाओ के लिए रखा गया है।

'योग दिवस पर्यटन व धार्मिक स्थलों पर मनाया जायेगा'

भरतपुर (निस)। एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य थीम पर जिलेभर में 11वां अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस शनिवार को पर्यटन एवं धार्मिक स्थलों पर प्रात: 6 बजे से 8 बजे तक योगाभ्यास कर मनाया जायेगा। जिला स्तरीय समारोह विश्व प्रिय शास्त्री पार्क में होगा जिसमें विशेषज्ञ प्रोटोकॉल के अनुसार योगाभ्यास करायेंगे। कार्यक्रम में जल संसाधन एवं जिला प्रभारी मंत्री सुरेश सिंह रावत मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करेंगे।

जिला प्रशासन एवं आयुर्वेद विभाग के द्वारा आयोजित योगाभ्यास में विश्व प्रिय शास्त्री पार्क में आमजन भी भाग ले सकेंगे। जिला कलक्टर डॉ. अमित यादव द्वारा जारी आदेशानुसार कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन हेतु नोडल अधिकारी नियुक्त कर दायित्व सौंपे गये हैं। ब्लॉक एवं पंचायत स्तर के कार्मिक अपने क्षेत्रीय योग कार्यक्रम स्थल में भाग लेंगे। उन्होंने आमजन से अपील की है कि जिले में आयोजित होने वाले योगाभ्यास कार्यक्रमों में अधिकाधिक जुडकर लाभ उठायें।

अतिरिक्त कलक्टर शहर एवं जिला नोडल अधिकारी अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस राहुल सैनी ने बताया कि मुख्य जिला स्तरीय कार्यक्रम शनिवार को प्रात: 6 बजे से 8 बजे तक विश्व प्रिय शास्त्री पार्क में योगाभ्यास कर मनाया जायेगा। उन्होंने बताया कि प्रात: 6:30 बजे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का संबोधन, 7 बजे से 7:45 बजे तक योगक्रियायें एवं 7:45 से 8 बजे तक अतिथि द्वारा संबोधन कार्यक्रम होगा। उन्होंने बताया कि जिले के प्रमुख धार्मिक एवं पर्यटन स्थलों को सम्मिलित करते हुये केवलादेव राष्ट्रीस उद्यान, गंगा मंदिर, किशोरी महल, गौरव बेटी पार्क, लोहागढ स्टेडियम परिसर स्थित मल्टी परपज हॉल, अपना घर आश्रम बझेरा में भी योगाभ्यास कर योग दिवस मनाया जायेगा।

उन्होंने बताया कि पंचायत एवं उपखण्ड स्तर पर भी पर्यटन एवं धार्मिक स्थलों पर योग दिवस समारोह पूर्वक मनाया जायेगा।

आयुर्वेद उप निदेशक एवं योग प्रभारी डॉ. इन्दु शर्मा ने बताया कि सामान्य योगाभ्यास कार्यक्रम 45 मिनट का रहेगा जिसमें 2 मिनट प्रार्थना, 6 मिनट चालन क्रियाएं, 18 मिनट योगासन, 3 मिनट कपालभाती, 6 मिनट प्रणायाम, 8 मिनट ध्यान एवं 2 मिनट संकल्प किया जायेगा। अन्त में शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन होगा। ये 33 योगक्रियाएं करायी जायेंगी

योगाभ्यास के दौरान ताडासन, वृक्षासन, पादहस्तासन, अर्द्धवक्रासन, त्रिकोणासन, भद्रासन, वठाासन, अर्द्धउष्ट्रासन, उष्ट्रासन, शशांकासन, उत्तानमंडूकासन, वक्रासन, मकरासन, भुजंगासन, शलभासन, सेतूवंधासन, उत्तानपादासन, अर्द्धहलासन, पवनमुक्तासन, शवासन, नाडी शोधन, अनुलोम विलोम, शीतली, भ्रामरी सहित अन्य योगक्रियाएं करायी ाायेंगी।

बारिश रुक-रुक कर जारी

भुसावर भरतपुर (निस)। भुसावर कस्बे और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में प्री मानसून की बारिश रुक-रुक कर जारी है। शुक्रवार 20 जून को हुई बारिश से तापमान में गिरावट आई है। इससे लोगों को भीषण गर्मी से राहत मिली है। बारिश के कारण नीचले इलाकों में जलभराव हो गया है। इससे लोगों को आवागमन में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। जलभराव ने प्रशासन की सफाई व्यवस्था की पोल खोल दी है। यह स्थिति कस्बे और ठाम पंचायतों दोनों में देखी जा रही है। पिछले कई दिनों से भीषण गर्मी से जनजीवन अस्त-व्यस्त था। लोग बारिश के लिए भगवान से प्रार्थना कर रहे थे। वहीं किसान अब खेतों में जुताई और बुवाई के काम में जुट गए हैं।

योग दिवस पर चर्चा

मासलपुर । 21 जून को अंतर्राष्टीय योग दिवस पर कस्बे के लोगों को कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए आयुर्वेद विभाग के अधिकारी कर्मचारियों ने जागरूकता रैली निकाली और जगह-जगह बैनर लगाए साथ साथ योग क्यों आवश्यक है की जानकारी के और प्रोटोकॉल अनुसार योग कार्यक्रम के पर्चा वितरित किए। योग जागरूकता रैली को ब्लॉक शिक्षा अधिकारी इन्दरराज मीना ने हरि झंडी दिखाई रैली में महाविद्यालय के छात्र आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं, कस्बे के निवासियों के साथ साथ आयुर्वेद विभाग के ब्लॉक नोडल अधिकारी डॉ रमण स्वरूप शर्मा, ब्लॉक आयुष चिकित्सालय की डॉ विद्या कुमारी मीना, त्रिलोक सिंह, गौरव कुमार आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मासलपुर प्रधान राजकुमारी जादौन, मासलपुर की तहसीलदार कौशल गर्ग, विकास अधिकारी मोहन लाल शर्मा, तहसील के सभी कार्मिकों के साथ कस्बे के निवासी सामूहिक रूप से योग प्राणायाम करेंगे।

बरसात ने खोली नगर परिषद की पोल

- शुक्रवार को दोपहर छाये घनघोर काले बादलों के बीच करीब 1 घंटे तक हुई मूसलाधार बारिश

करौली । जिला मुख्यालय पर दो-तीन दिन से रुक-रुक कर बारिश का दौर चल रहा था लेकिन शुक्रवार को दोपहर छाये घनघोर काले बादलों के बीच करीब 1 घंटे तक हुई मूसलाधार बारिश ने नगर परिषद की पोल खोल कर रख दी। करौली में शुक्रवार को प्रात: रिमझिम बारिश के दौर से दिन की शुरुआत हुई उसके बाद उमस भरी गर्मी का लोगों को एहसास हुआ लेकिन दोपहर 2:बजे के बाद काले बादलों के बीच एक साथ मूसलाधार बारिश का दौर शुरू हुआ जो करीब 1 घंटे तक चला बारिश के चलते सड़कों पर पानी बाहर निकाल कोर्ट रोड, एसपी कार्यालय की सड़क, वजीरपुर गेट से कलेक्ट्रेट सर्किल रोड पानी से लबालब हो गई और लोगों को खासी परेशानियों का सामना करना पड़ा इसके अलावा करौली शहर की शिव कॉलोनी, कन्या महाविद्यालय के पास, शिकारगंज के अलावा ट्रक यूनियन से कृषि उपज मंडी का हाईवे सड़क मार्ग पानी से लबालब हो गया जिसके चलते लोगों को खासी परेशानी हुई वहीं दुकानों और मकान तक में पानी घुसने की नौबत आ गई पार्षद धर्म मीणा ने तुरंत नगर परिषद आयुक्त को जल भराव की सूचना दी तो तुरंत मौके पर जेसीबी मशीन भेज कर पानी निकासी का दौर शुरू हुआ देखने लायक यह है कि बरसात से पूर्व शेर की नाले नालियों की सफाई होनी थी लेकिन नगर परिषद ने कुछ स्थानों पर जेसीबी मशीन से सफाई कराकर फोटो खींचाते हुए वहा भाई लूटी यही नहीं जब से जिला मुख्यालय पर हाईवे सड़क का निर्माण हुआ है ।

तब से हाईवे किनारे बने नालों की भी सफाई नहीं होने से उनका गंदा पानी सड़कों पर बहने से लोगों को दूषित माहौल में रहना पड़ रहा है अगर यही हालात रहे तो गत वर्ष हुई आपदा और बाढ़ जैसे हालातो से इनकार नहीं किया जा सकता जिला मुख्यालय पर भारी बरसात के चलते विद्युत आपूर्ति भी सुचारू हो गई गुलाब बाग से अस्पताल मार्ग पर प्रात: 9:00 बजे विद्युत लाइन का तार टूट कर गिर गया लेकिन देर श्याम समाचार लेकर जाने तक उसे दुरुस्त कर विद्युत आपूर्ति बहाल नहीं की गई।

दस करोड़ की लागत से विधानसभा क्षेत्र में किया जायेगा 31सड़कों का निर्माण

- पूर्व विधायक व जिलाध्यक्ष मानसिंह गुर्जर की अभिशंषा पर उपमुख्यमंत्री ने दिया बजट
- उपमुख्यमंत्री एवं सार्वजनिक निर्माण विभाग मंत्री दिया कुमारी ने मंजूरी दी

गंगापुर सिटी । सरकार की ओर से गंगापुर सिटी विधानसभा क्षेत्र में करीब 10 करोड की लागत से 12.258 किलोमीटर लंबी 31 सडकों का निर्माण करने की मंजूरी दी गई है। उपमुख्यमंत्री एवं सार्वजनिक निर्माण विभाग मंत्री दिया कुमारी ने शुक्रवार को गंगापुर सिटी विधानसभा क्षेत्र में सडकों के निर्माण के लिए 10 करोड रुपए की स्वीकृति जारी की। भाजपा जिलाध्यक्ष विधानसभा प्रत्याशी पूर्व विधायक मानसिंह गुर्जर कि अभिशंसा पर सार्वजनिक निर्माण विभाग की ओर से विधानसभा क्षेत्र के आश्रय स्थल से कोलीपाडा टॉयलेट तक ०.120 किमी 7.75लाख, नंबर 3 स्कूल से महाराज की चक्की शास्त्री पार्क बायां रेलवे बाउंड्री ०.600किमी 1०7.00 लाख, भगवती कॉलेज से जगमोहन के घर बायां जोशी जी की चक्की पीएचईडी की बोरिंग तक ०.822 किमी 75.00लाख, घास मंडी से नाला की पुलिया तक ०.635 किमी 68.00लाख, जयपुर सडक (शनिदेव मंदिर) ट्रक यूनियन मानपुर सडक तक ०.325 किमी 27 लाख, एन एच 23 बाईपास से हनुमान के घर की ओर ०.120 किमी 9 लाख, जयपुर सडक (महरवाल) से महिदास बालाजी तक ०.406 किमी 35 लाख, तहसील गंगापुर सिटी से मंगलम होटल तक बायां कुशाल लेक 1.1००किमी 113.००लाख, हायर सैकंडरी स्कूल से सिंह कमला हॉस्पिटल ०.180 किमी 17.०० लाख, नादोती सडक(केशव विद्या मंदिर) जितेंद्र से घनश्याम की ओर ०.4००किमी 3०.00 लाख, नेहरू पार्क से सूरसागर चौराहा ०.340किमी 4०.00लाख, देवी स्टोर चौराहा से घास मंडी बायां चौपड ०.410 किमी 33.००लाख, छोटी शीतला से एमडीआर 249 बायां खुटमार सदन ०.500 किमी 40.00 लाख, एस एच 1ए से कीरपाडा 00नंबर स्कूल भगवान डायरेक्टर का घर ०.63०किमी 54.00 लाख,विनायक चौराहा से के सी मीना के घर तक ०.67० किमी 5०.00 लाख, गांवडी शफीपुरा सडक से विजयवर्गीय का गोदाम बायां घासीराम का घर ०.35०किमी 26.50लाख, मोहन खाती से सुमन स्कूल तक ०.1०० किमी 6.०० लाख, भवानी मानपुर का श्मशान घाट ०.400 किमी 24.00 समंदर के मकान से अमर सिंह तक बायां तुलसी ,जगराम , योगेंद्र पंडित ०.150 किमी 9.00लाख, भैरोजी मंदिर से मंगल मीना के मकान तक ०.०7० किमी 5.50लाख, काडू डिप्टी से सी सी सडक तक ०.०70 किमी 5.50लाख, मुख्य सडक से रामखिलाडी के घर तक ०.०5० किमी 3.75लाख, नादोती सडक महेंद उद्योग तक ०.1००किमी 6.००लाख, नंदू जाट के मकान से विष्णु गुप्ता के मकान तक ०.100 किमी 6.००लाख, शिवराज बालोती के मकान से प्रकाश के मकान तक ०.1००किमी 6.००लाख, एन एच 23 (पेट्रोल पंप) बाईपास से आस्ट्रोली जालोखरा सडक तक 2.5०० किमी 118.००लाख, चुंगी (गंगापुर सिटी-हिंडौन सडक) से समाज कल्याण कार्यालय की ओर ०.2०० किमी 24.००लाख, जयसिंहपुरा सडक से टोटालाई रेलवे फाटक से खिदरपुर (करौली जिला सीमा) सडक तक ०.5००किमी 32.००लाख ,सुमन जैन के घर से जीतराम के घर तक ०.1००किमी 7.००लाख, गीता देवी बैरवा से हनुमान मंदिर की ओर ०.०80किमी 6.००लाख, एन एच 23 बाईपास से रूपसिंह का मकान ०.14०किमी 9.००लाख, 12.258 किलोमीटर की 1० करोड रुपए की स्वीकृति जारी की गई है। गत दिनों उन्होंने उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी को भी इस संबंध में पत्र सौंप कर सडकों का निर्माण करने का आग्रह किया था।

अंत राष्ट्रीय योग दिवस से पहले अभ्यास कार्यक्रम आयोजित

- इं. जीवनलाल शर्मा ने बताया कि बुजुर्गों के अनुसार सुख निरोगी काया पुरानी कहावत है। यदि शरीर स्वस्थ है तो सभी कुछ अच्छा लगता है। योग प्राणायाम से शरीर निरोग रहता है तथा अच्छी सेहत के साथ अपने मस्तिष्क को भी स्वस्थ रखता है। स्वस्थ मस्तिष्क में स्वस्थ व उत्तम विचार आते हैं जो इंसान को श्रेष्ठ कार्य करने के लिए प्रेरणा देते हैं।

भरतपुर (निस)। भरतपुर के शास्त्री पार्क में राष्ट्रीय ओल्ड इस गोल्ड संस्था के पदाधिकारियों व सदस्यों द्वारा अंत राष्ट्रीय योग दिवस से पूर्व अभ्यास कार्यक्रम संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष इं.जीवनलाल शर्मा के नेतृत्व में आयोजित किया गया जिसमें सभी पदाधिकारियों व सदस्यों ने बढ चढकर भाग लिया तथा प्राणायाम व योग अभ्यास किया। जिसमें अनुलोम विलोम, कपाल भांति, बठाासन, शीर्षासन, सूर्य नमस्कार आदि का अभ्यास किया।

इं. जीवनलाल शर्मा ने बताया कि बुजुर्गों के अनुसार सुख निरोगी काया पुरानी कहावत है। यदि शरीर स्वस्थ है तो सभी कुछ अच्छा लगता है। योग प्राणायाम से शरीर निरोग रहता है तथा अच्छी सेहत के साथ अपने मस्तिष्क को भी स्वस्थ रखता है। स्वस्थ मस्तिष्क में स्वस्थ व उत्तम विचार आते हैं जो इंसान को श्रेष्ठ कार्य करने के लिए प्रेरणा देते हैं। अत: प्रत्येक व्यक्ति को अपनी दिनचर्या में से समय निकालकर प्रतिदिन योग प्राणायाम अवश्य करना चाहिए।

इस अवसर पर दिनेश शर्मा जिलाध्यक्ष, राकेश अठावाल जिला महामंत्री, शिवदयाल गुप्ता, सुरेन्द्र डंडौतिया, भारत शर्मा, डॉ. हरिओम शर्मा, दिनेश शर्मा अध्यापक, प्रदीप कुमार शर्मा, जगदीश गुप्ता, श्रीनिवास शर्मा, रमेश श्रीवास्तव, राजाराम फौजदार, बनै सिंह धावई, भूपेन्द्र सिंह, विनोद अठावाल, मुकेश अठावाल, अनिल अठावाल, अवध बिहारी भारद्वाज, महेन्द्र सिंह, छोटूराम चौधरी, मुख्त्यार सिंह, राजकुमार सिंह, नंदू सतीजा, प्रेम सिंह फौजदार, आदि ने योगाभ्यास में भाग लिया।

जल संरक्षण जन अभियान की समीक्षा

करौली, । जल शक्ति अभियान कैच द रैन कार्यक्रम के केन्द्रीय नोडल अधिकारी चितरंजन दास ने बताया कि जिले में जल शक्ति अभियान एवं वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान में आगामी समय में आमजन की सहभागिता सुनिश्चित हो जिससे अभियान को जन आंदोलन के रूप में बदला जा सके। केन्द्रीय नोडल अधिकारी शुक्रवार को कलेक्ट्रेट सभागार में अभियान की समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुए बोल रहे थे उन्होंने अभियान के दौरान कृषि विभाग, ठाामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग, शिक्षा, वाटर शैड, पीएचईडी, सानिवि, वन विभाग, नगर परिषद सहित अन्य विभागों के द्वारा किये गये कार्यों की विस्तार से समीक्षा की एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिये।

पश्चिम मध्य रेल

निविदा सूचना

सिगनल एवं दूर संचार विभाग दिनांक 18.06.2025

भारत संघ के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से वरि मं.सं.एवं दू.सं.इंजी.(सिगनल एवं दूर संचार) पश्चिम मध्य रेलवे, कोटा मंडल निम्नलिखित कार्यो Tender No.KOTA/ SNT / SIG/ 2023 / 10M, KOTA / SNT / SIG/2023/13R1, KOTA /SNT/SIG/ 2025/11 के लिये निर्धारित ई-निविदाएं आमंत्रित करते हैं टेण्डर खुलने की तारीख एवं समय टेबल में दर्शाया गया है। इस निविदा के लिये किसी भी तरह के मैनुअल प्रस्तावों की अनुमति नहीं है और किसी भी तरह के प्राप्त मैनुअल प्रस्ताव को नजरअंदाज कर दिया जायेगा। **टेन्डर सं.:** कोटा/एसएण्डटी/सिग./2023/10M, **कार्य का नाम** : प्रोवीजन ऑफ 8 व्हीलर टॉवर वेगन शेड एट छबड़ा गुगोर स्टेशन। (+) एसएण्डटी वर्क इन कनेक्शन विथ प्रोविजन ऑफ 8-व्हीलर टॉवर वैगन शेड सवाईमाधोपुर स्टेशन। **कार्य की अनुमानित लागत:** Rs. 31,11,132.95/- , **बयाना राशि** : Rs. 62,200/- **तारीख एवं समय** : दिनांक 11.07.2025 को 15.00 बजे तक, **टेन्डर सं.:** कोटा/एसएण्डटी/सिग./2023/13R1, **कार्य का नाम** : कोटा डिवीजन- रिप्लेसमेन्ट ऑफ डाटालॉगर पेरीपर्लस फॉर इनहेन्सिंग सेफ्टी एण्ड रिलायब्लिटी ऑफ डाटालॉगर सिस्टम। **कार्य की अनुमानित लागत** : Rs. 6308543.36/-, **बयाना राशि** : Rs. 1,26, 200/- **तारीख एवं समय** : दिनांक 15.07.2025 को 15.00 बजे तक, **टेन्डर सं.:** कोटा/एसएण्डटी/सिग./2025/11, **कार्य का नाम** : एनुअल मेंटेनेंस कांट्रेक्ट (ए.एम.सी) फॉर डिजीटल एक्सल काउंटर (एलडाइन मेक) इन्स्टाल्ड ऑन कोटा डिविजन। (2025) **कार्य की अनुमानित लागत** : Rs. 21,58,624.80/-, **बयाना राशि** : Rs. 43,200/- **तारीख एवं समय** : दिनांक 15.07.2025 को 15.00 बजे तक **पूर्ण** विवरण वेबसाइट http: //www.ireps.gov.in/ पर अपलोड की गई है। निविदा /बोलीदाताओं के पास कक्षा III डिजीटल हस्ताक्षर प्रमाणपत्र होना आवश्यक है और आई.आर.ई.पी.एस पोर्टल पर रजिस्टर होना चाहिये। केवल पंजीकृत निविदा/बोलीदाताओं ई-टेण्डरिग पर भाग ले सकते है। सभी आवश्यक दस्तावेज ई-निविदा में भाग लेने के समय में अपलोड किया जाना चाहियें। पंजीकृत निविदा एण्ड GSTIN रजिस्टर होना चाहिये।

(हस्ता)
वरि. मं.सं.एवं दू.सं..इंजी. (समन्वय)
पश्चिम मध्य रेलवे, कोटा

स्वच्छ भारत अभियान
एक कदम स्वच्छता की ओर

योग साधना शिविर आयोजित

भरतपुर (निस)। अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में भरतपुर जिला अठावाल पैन्शनर्स सेवा समिति के वरिष्ठजनो ने डा. अशोक अठावाल की अध्यक्षता में स्वास्थ्य मन्दिर रनजीत नगर में योग साधना शिविर लगाया गया। जिसमें योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. वीरेन्द्र अठावाल तथा आर्ट ऑफ लिविंग प्रशिक्षक पंजाव नेशनल बैंक के सेवानिव्त वरिष्ठ प्रबन्धक आर एस गुप्ता ने वरिष्ठ नागरिको को योग के पवनमुक्तासन, वक्रासन, वृक्षासन, नौकासन, हलआसन, सर्वांगआसन, उष्ट्सन, ताडासन, ध्यान व प्राणायाम आदि 20 प्रकार के आसनों का अभ्यास कराया। इस अवसर पर बोलते हुए गुप्ता ने कहा कि वरिष्ठजनो को अपने शेष जीवन प्रबन्धन के लिए नियमित योग करना चाहिए। इसके करने से मानसिक व आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त होती है तथा जीवन को दीर्घायु व निरोगी बनाया जा सकता है। इस अवसर पर लक्ष्मीनारायण गुप्ता महेश चन्द अठावाल, सी एम गुप्ता, एस पी जिन्दल, आदि मौजुद थे।

पुण्यतिथि पर भेंट की सीमेन्ट की कुर्सियां

हिण्डौन सिटी (का.सं.)। शहर के एक मेडिकल व्यवसायी द्वारा अपने पिता की 12वी पुण्य तिथि को अनुठे तरीके से मनाया गया है एवं यादगार करने के लिए उन्होंने पावर हाउस स्थित हनुमान मंदिर के प्रांगण में दो कुर्सी भेंट की। जानकारी के अनुसार शिव कुमार शर्मा व अशोक कुमार शर्मा ने अपने स्वर्गीय पिता रमेश चंद बरेडी वाले की 12वीं पुण्यतिथि पर परिजनों के साथ हनुमान मंदिर पहुंचकर दो सीमेंट की कुर्सियां भेट कर पुण्य तिथि मनाई गई।

रिमझिम बारिश से मौसम हुआ खुशनुमा

गंगापुर सिटी । शुक्रवार को दूसरे दिन भी बारिश का दौर जारी रहा। सुबह 5 बजे से शुरू हुई बारिश दिनभर रुक-रुककर होती रही। गुरुवार शाम 5 बजे से शुक्रवार दोपहर 2 बजे तक शहर में 62 मिमी बारिश दर्ज की गई। आसपास के क्षेत्रों में भी अच्छी बारिश हुई। बामनवास तहसील में 17 मिमी, वजीरपुर में 24 मिमी, तलावडा में 9 मिमी, बरनाला में 12 मिमी और भांवरा उपतहसील में 28 मिमी बारिश दर्ज की गई। बारिश के कारण कई निचले इलाकों में जलभराव की स्थिति बन गई। गुरुवार शाम को आसमान में बादल छाए और रिमझिम बारिश शुरू हुई। बाद में तेज बारिश का दौर रात भर चलता रहा। शुक्रवार को भी आसमान में बादल छाए रहे और रुक-रुक कर बारिश होती रही। बारिश से मौसम सुहाना हो गया और लोगों को भीषण गर्मी से राहत मिली। किसान इस बारिश से खुश हैं और खरीफ की बाजरा-तिल जैसी फसलों की बुवाई में जुट गए हैं। मौसम विभाग ने पहले ही बारिश की चेतावनी दी थी। गंगापुर सिटी और आसपास के क्षेत्र में दूसरे दिन शुक्रवार को भी बारिश का दौर जारी रहा। अल सुबह 5 बजे से बारिश का दौर शुरू हो गया। इसके बाद दिनभर रुक-रुककर बारिश हो रही है।

अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस आज

गंगापुर सिटी । शनिवार को योग दिवस मनाया जाएगा। गंगापुर सिटी में मुख्य कार्यक्रम हायर सेकेंडरी स्कूल के मैदान में आयोजित होगा। कार्यक्रम में भाजपा जिलाध्यक्ष और पूर्व विधायक मानसिंह गुर्जर मुख्य अतिथि होंगे।कार्यक्रम की शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वर्चुअल संबोधन से होगी। इसके बाद योग प्रशिक्षकों की देखरेख में योगाभ्यास कराया जाएगा। अतिरिक्त जिला कलेक्टर रामकिशोर मीणा, उपखंड अधिकारी बृजेंद्र मीणा और आयुर्वेद विभाग के उप निदेशक हनुमान प्रसाद शर्मा भी कार्यक्रम में मौजूद रहेंगे।आयुर्वेद विभाग ने गंगापुर सिटी में लोगों को योग के फायदों की जानकारी दी।

मंत्री बेढम ने किया शहीद नायब सूबेदार आराम सिंह की मूर्ति का अनावरण

हिंडौन सिटी /नादौती । समीपवर्ती बीलई गांव में शहीद नायब सूबेदार आराम सिंह की प्रतिमा का अनावरण किया । गृह राज्य मंत्री ने माल्यार्पण एवं पुष्प चढ़ाकर शहीद नायब सूबेदार आराम सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित की। मंत्री बेढम ने वीरांगना विमलेश देवी का शॉल उडाकर सम्मान किया ।

मूर्ति अनावरण के बाद राज्य मंत्री बेढम ने शहीद आराम सिंह की शहादत को याद किया। बेढम ने कहा कि 18 माहर रेजिमेंट के शहीद आराम सिंह सभी के लिए प्रेरणा के स्त्रोत्र है, देश सेवा में किए गए उनके प्रयास हमेशा स रहेंगे। उन्होंने कहा कि शहीद आराम सिंह की प्रतिमा सदैव यहां के छात्रों और आसपास के लोगों के लिए प्रेरणा का कार्य करती रहेगी। आज हमारे सैनिक अपनी जान की बाजी लगाकर देश की रक्षा कर रहे हैं और हम इसी वजह से सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि फौजी देश की सीमा पर सर्दी, गर्मी और वर्षा में तैनात रह कर हमारी रक्षा करते हैं। उन्हें देव तुल्य मानते हुए उनकी पूजा करना चाहिए। भूपेन्द्र खटाना ने जानकारी देते हुए बताया कि शहीद आराम सिंह अपने पीछे वीरांगना विमलेश देवी सहित दो पुत्र संजय, अवधेश गुर्जर, तीन पुत्री मनीषा, राजकुमारी, समिता छोड़ के गए है । इस दौरान गृह राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेढम, करौली विधायक दर्शन सिंह गुर्जर, टोडाभीम प्रत्याशी भामाशाह रामनिवास मीना, शिक्षा विभाग के डिप्टी डायरेक्टर नादान सिंह खटाना, डॉ. ज्ञान सिंह झाडिसा, भाजपा जिलाध्यक्ष गोवर्धन सिंह जादौन, नादौती प्रधान प्रतिनिधि बहादुर सिंह खटाना, मंडल अध्यक्ष सुमरन सिंह, डॉ. जगदीश चपराना, शेरसिंह नेता, मुरारीलाल खटाना, भूपेन्द्र खटाना, जीतेन्द्र बिलई, संजय, अवधेश सहित हज़ारो ग्रामीण मौजूद रहे ।

किशोर गृह का निरीक्षण

करौली । माननीय राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर के निर्देशानुसार आज दिनांक 20 जून 2025 को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव ममता चौधरी द्वारा राजकीय सम्प्रेषण एवं किशोर गृह, करौली का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान गृह में सफाई व्यवस्था, भोजन व्यवस्था, चिकित्सा व्यवस्था आदि की माकूल व्यवस्थाओं की बारीकी से जांच करते हुए गृह में संधारित विभिन्न रजिस्टरों का निरीक्षण किया गया। वक्त निरीक्षण गृह में 11 बच्चे आवासरत मिले जिनसे मुलाकात कर उनसे सौहार्दपूर्ण वार्ता की गई तथा उनकी दिनचर्यादि के बारे में भी जानकारी ली गई तथा आवश्यक सुधार हेतु दिशा निर्देश प्रदान किये गये।

कार्यालय ग्राम पंचायत जमूरा, पंचायत समिति मासलपुर, जिला करौली

क्रमांक: Spl-1 **ई-निविदा सूचना** 01/2025-2026 दिनांक: 20.06.2025

ग्राम पंचायत जमूरा, पं.स. मासलपुर की महात्मा गांधी नरेगा व ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग की विभिन्न योजनान्तर्गत वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए स्वीकृत निर्माण कार्यों के लिए अनुसांगिक सामग्री आपूर्ति/उपकरण व्यवस्था हेतु वाणिज्यूक कर विभाग में जी.एस.टी. अधिनियम 2017 के तहत पंजीकृत एवं अनुभवी फर्मों/सप्लायर्स/ इच्छुक बोनाफाइड विनिर्माता/थोक विक्रेता/प्राधिकृत डीलर/सोल विक्रेता/विपणन एजेन्टो से दिनांक 31.03.2026 तक के लिए दर अनुबन्ध करने के लिए ई-निविदाऐं आमंत्रित की जाती है। ई-निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण https://eproc.rajasthan.gov.in एवं https://.sppp.rajasthan.gov.in एवं कार्यालय पर देखी जा सकती हैं।

सरपंच, ग्राम पंचायत जमूरा | ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत जमूरा

चंबल नदी के राजस्थान में बने बांध लबालब, कोटा बैराज से लगातार पानी की निकासी संभव

कैचमेंट एरिया में होने वाली बारिश से लगातार पानी की आवक होने पर निकासी की जाएगी

कोटा, (निसं)। चंबल नदी के राजस्थान में बने तीनों बांध में इस बार लबालब पानी है। ऐसे में इनका कैचमेंट एरिया में होने वाली बारिश से लगातार पानी की आवक होने पर निकासी की जाएगी। इसी के चलते

- **कोटा बैराज से दो गेट खोलकर 6500 क्यूसेक पानी की निकासी की जा रही है, जिसमें एक गेट 3 फीट और दूसरा 5 फीट खोला गया है**

राणा प्रताप सागर बांध और जवाहर सागर बांध से मशीन डिस्चार्ज किया जा रहा है। बिजली उत्पादन भी शुरू हो गया है। साथ ही कोटा बैराज से गेट डिस्चार्ज भी शुरू कर दिया गया है। इन तीनों डैम के गेट खुलेंगे तो पानी का डिस्चार्ज किया जाएगा। इसके बाद चंबल नदी कोटा से लेकर धौलपुर तक अलर्ट मोड पर रहेगी। इस बार यह तीनों डैम 96.69 फीसदी फुल हैं। इन तीनों की पूरी कैपेसिटी 3084.03 मिलियन क्यूबिक मीटर है, जबकि इनमें वर्तमान में पानी 2982.23 मिलियन क्यूबिक मीटर है।

राणा प्रताप सागर बांध के सहायक अभियंता हरीश तिवाड़ी का कहना है कि मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले में स्थित चंबल नदी के सबसे बड़े बांध गांधी सागर बांध का लेवल कम किया गया था। इसके चलते वहां से पानी डिस्चार्ज गर्मी के सीजन में हुआ था। राणा प्रताप सागर बांध उस समय खाली था। ऐसे में राणा प्रताप सागर बांध से पानी छोड़ने की जगह उसे स्टोर कर लिया गया। राणा प्रताप सागर बांध का लेवल बढ़ गया है। साल 2024 में 20 जून के दिन वहां पर फुल कैपेसिटी 2904.85 की एवज में 1982.86 मिलियन क्यूबिक मीटर पानी था। यह बीते साल करीब 68 फीसदी बारिश के सीजन की शुरुआत में भरा हुआ था। जबकि इस साल 2025 में यह 97 फीसदी भरा हुआ है। वर्तमान में इसमें 2819.63 एमसीएम पानी है। इसी दिन गेट से पानी डिस्चार्ज पहली बार पिछले साल हुआ था। जबकि इस बार ऐसी स्थिति नहीं है। राणा प्रताप सागर बांध में 85 एमसीएम पानी आने के बाद यह फूल हो जाएगा। ऐसे में इस बार पूरी उम्मीद है कि जून महीने में ही डैम से पानी डिस्चार्ज कर दिया जाएगा। जबकि मशीन डिस्चार्ज शुरू हो गया है।

सहायक अभियंता हरीश तिवाड़ी के मुताबिक राणा प्रताप सागर बांध में ज्यादातर पानी की आवक गांधी सागर बांध के पानी छोड़ने से होती है। इस बार गांधी सागर बांध बीते साल की अपेक्षा इस बार ज्यादा खाली है। बीते साल वहां कैपेसिटी 7164.94 एमसीएम की तुलना में 58 फीसदी यानी 4173.85 एमसीएम पानी था। इस बार यह पानी महज 46.87 फीसदी यानी 3358.25 है। ऐसे में गांधी सागर बांध को भरने में काफी ज्यादा समय लगेगा लेकिन आरपीएस डैम के कैचमेंट एरिया में होने वाली बारिश के पानी को तुरंत निकालना पड़ेगा। जवाहर सागर बांध के केसमेंट एरिया में ब्राह्मणी नदी का भी पानी आता है। यह शुरुआत में हजारों क्यूसेक होता है और बाद में बढ़कर लाख क्यूसेक ऊपर भी चला जाता है। ऐसे में लगातार निकासी भी होगी।

कोटा बैराज से दो गेट खोलकर पानी की निकासी की जा रही है।

कोटा बैराज की कुल क्षमता 112 मिलियन क्यूबिक मीटर के आसपास ही है। जबकि जवाहर सागर डैम की क्षमता 67.12 एमसीएम है। जबकि राणा प्रताप सागर बांध इन दोनों डैम की क्षमता से 16 गुना ज्यादा बड़ा है। ऐसे में राणा प्रताप सागर बांध से पानी की निकासी होने पर इन दोनों डैम से तत्काल निकासी की जाती है क्योंकि इनमें पानी को स्टोर ज्यादा नहीं किया जा सकता है।

कोटा बैराज से छोड़ा पानी : सहायक अभियंता निकिता पारेता ने बताया कि बारिश के सीजन को देखते हुए फ्लड सेल जल संसाधन विभाग ने चालू कर दी है। इसके जरिए हर घंटे डैम और उनके पानी की आवक व डिस्चार्ज की रिपोर्ट ली जा रही है। इसे 24 घंटे जिला कलेक्टर और जयपुर मुख्यालय को अपडेट भी कराया जाता है ताकि पानी डिस्चार्ज होने पर नीचे अलर्ट जारी हो सकें। राणा प्रताप सागर बांध में 12167 क्यूसेक पानी की आवक हो रही है। मशीन के जरिए 1790 क्यूसेक डिस्चार्ज किया जा रहा है। जबकि जवाहर सागर बांध से 3800 क्यूसेक पानी आ रहा है जिसमें ब्राह्मणी नदी का पानी भी है। यहां से मशीन डिस्चार्ज किया जा रहा है। इसी तरह से कोटा बैराज से दो गेट खोलकर 6500 क्यूसेक पानी की निकासी की जा रही है। जिसमें एक गेट 3 फीट और दूसरा 5 फीट खोला गया है।

सरकारी कर्मचारी का संदिग्ध हालत में शव मिला

- **प्रथमदृष्टया आशंका जताई जा रही है कि किसी विषाक्त पदार्थ का सेवन किया हो**
- **मौत के सही कारण का पता पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही चलेगा, पुलिस ने जांच शुरु की**

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के मांडल थाना क्षेत्र में बीती शाम एक सरकारी कर्मचारी का शव संदिग्ध परिस्थितियों में सड़क किनारे पेड़ के नीचे मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। मृतक की पहचान 49 वर्षीय विष्णु पारीक पुत्र सत्यनारायण पारीक, निवासी रायपुर के रूप में हुई है। वे वर्तमान में भीलवाड़ा में राजकीय सेवा में कार्यरत थे।

सूत्रों के अनुसार, गुरुवार सुबह विष्णु पारीक अपनी स्कूटी लेकर कार्यालय के लिए निकले थे, लेकिन देर शाम तक जब वे घर नहीं लौटे, तो परिजन चिंतित हो उठे। इसी दौरान हरिपुरा-भगवानपुरा मार्ग पर राहगीरों की नजर सड़क किनारे एक पेड़ के नीचे अचेत अवस्था में पड़े व्यक्ति पर पड़ी। उन्होंने तुरंत मांडल उपजिला चिकित्सालय में सूचना दी, जहां विष्णु पारीक को लाया गया। डॉक्टरों ने स्वास्थ्य परीक्षण के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना की जानकारी मिलते ही मांडल थाना पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर कार्रवाई शुरू की। परिजनों को भी सूचना दी गई, जो मौके पर पहुंच गए।

मृतक के चेहरे पर विशेष रूप से आंखों के नीचे नीले निशान और मुंह से खून निकलने के लक्षण देखे गए हैं, जिससे प्रथमदृष्टया आशंका जताई जा रही है कि विष्णु पारीक ने किसी विषाक्त पदार्थ का सेवन किया हो। हालांकि, मौत के सही कारण का पता पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही चलेगा। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। वहीं, इस घटना से इलाके में शोक और भय का माहौल है। लोगों में इस बात को लेकर चर्चाएं हैं कि आखिर विष्णु पारीक की मौत कैसे और किन परिस्थितियों में हुई। परिजन भी स्तब्ध हैं और उन्होंने निष्पक्ष जांच की मांग की है।

मांडल थाना प्रभारी विक्रम सिंह शेरावत ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है और मामले की गहनता से जांच की जा रही है। आसपास के क्षेत्र में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज भी खंगाली जा रही है ताकि घटना से जुड़े कोई सुराग मिल सके। राजकीय कर्मचारी विष्णु पारीक की अचानक हुई मौत ने कई सवाल खड़े कर दिए हैं। पुलिस मामले को हर एंगल से जांच कर रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट से ही यह स्पष्ट हो सकेगा कि यह मामला आत्महत्या का है, दुर्घटना का या किसी साजिश का। उनकी मौत से परिवार और समाज में शोक की लहर है।

कार्यालय नगरपरिषद, जालोर (राजस्थान)

क्रमांक : नपजा/स्टोर/2025/ई–निविदा/1794 दिनाक :– 12.06.2025

:: ई–निविदा सूचना सं. 02/2025–26 ::

नगरपरिषद, जालोर क्षेत्र में **Maintenance Of Led Street Lights And Road Light Lines In Municipal Coucil (Ulb) Area (Including Material &Amp Manpower/Labour)** कार्य के लिए माल एवं सेवाओं के उपापन के लिए दर संविदा वित्तीय वर्ष 2025–26 (31.03.2026) के लिए कार्य दर (रेट कोन्टेक्ट) हेतु विभिन्न फर्मो, ठेकेदारों, अधिकृत डिलरों से एतद्द्वारा मोहरबन्द निविदा आमंत्रित की जाती है–

NIB CODE :- DLB2526A2387

आयुक्त
नगर परिषद, जालोर

राज.संवाद/सी/25/4527

टेम्पो ट्रक से 1183 किलो घी व वेज फेट जब्त

- **पाली जिले के विभिन्न गांवों में दुकान व प्रतिष्ठानों पर विक्रय हेतु जा रहा था घी**
- **खाद्य सुरक्षा अधिकारी मय दल द्वारा तेज बारिश के बावजूद देर रात 12 बजे तक कार्रवाई की**

पाली, (नि.सं.)। जिले में मिलावटखोरों के खिलाफ विशेष अभियान चलाते हुये आयुक्त खाद्य सुरक्षा औषधि नियंत्रण एच गुईटे के दिशा निर्देश पर पाली जिले के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. विकास मारवाल व खाद्य सुरक्षा अधिकारी के नेतृत्व में मिलावटी घी की सूचना पर देर रात को दबिश देकर नेशनल हाइवे-14 पर जाडन के समीप टेम्पो ट्रक से 1183 किलो घी व वेज फेट जब्त किया गया।

सीएमएचओ डॉ. विकास मारवाल ने बताया कि मुखबीर की सूचना पर खाद्य सुरक्षा अधिकारी मय दल द्वारा तेज गती से चल रहे टेम्पो ट्रक का पीछा कर उसे जाडन पेट्रोल पम्प पर रूकवाया गया, जिसकी जांच करने पर खाद्य सुरक्षा अधिकारी सुरेश चन्द्र शर्मा को बिना बिल के विक्रय होने जा रहे घी का मिलावटी होने का संदेह हुआ जिस पर विभाग द्वारा कार्रवाई करते हुये चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की आर्दश प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र जाडन पर टेम्पो ट्रक में भरे माल को खाली करवाया गया। एफएसओ द्वारा टेम्पो ट्रक के चालक शक्ति सिंह रावत से पूछताछ करने पर बताया कि श्री श्याम फुड प्रोडेक्ट अजमेर के निर्माण एवं उत्पादक इकाई से घी व वेज फेट टेम्पो ट्रक में भरवाया गया, जो पाली जिले के विभिन्न गांवों में दुकान व प्रतिष्ठानों पर विक्रय हेतु जा रहा था। मामले को गम्भीरता से लेते हुये खाद्य सुरक्षा अधिकारी व सीएमएचओ ने जब्त सभी खाद्य पदार्थ को सीज कर उनके सेम्पल लिये। कार्रवाई के दौरान खाद्य सुरक्षा अधिकारी दल के साथ फुड सैफ्टी टैक्निशियन खुशाल चन्द सैन, ऑपरेटर ओम प्रकाश प्रजापत, लक्ष्मणदान चारण उपस्थित रहे।

डॉ. विकास मारवाल ने बताया कि राज्य सरकार के शुद्ध आहार मिलावट पर वार अभियान के तहत मिलावट के रोकथाम पर कार्रवाई करते हुये टेम्पो ट्रक से 6 ब्रांड के घी व वेज फेट जब्त किये इनमे घी ब्रांड सरल, नमस्ते कृष्णा, श्री राजवंशी सुपर सारथी घी, सरल के 15 किलो टीन व वेज फेट डेयरी सरस रिफायड पॉम ऑयल सारस कुंकीग मीडियम ऑयल सहित आधा लीटर एक लीटर व पांच लीटर घी की सामग्री को सीज किया गया।

खाद्य सुरक्षा अधिकारी सुरेश चन्द्र शर्मा ने बताया कि भारतीय खाद्य सुरक्षा मानक प्राधीकरण द्वारा बनाये गये खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 विनियम 2011 कानून के तहत खाद्य पदार्थों में मिलावट का संदेह होने होने पर अजमेर के सराधना स्थित श्री श्याम फूड प्रोडेक्टस निर्माण एवं उत्पादक इकाई द्वारा बाजार में विक्रय के लिए जाने वाले घी पर खाद्य सुरक्षा अधिकारी मय दल द्वारा तेज बारीश के बावजूद देर रात 12 बजे तक कार्रवाई को अंजाम दिया गया।

तकनीकी समस्या के चलते मुंबई से जोधपुर आने वाली फ्लाइट रद्द

एयर इंडिया की फ्लाइट संख्या एआई 645 को तकनीकी समस्या के चलते रद्द करना पड़ा

- **यात्रियों ने एयर इंडिया की ओर से समुचित जानकारी और वैकल्पिक व्यवस्था नहीं मिलने की शिकायत एयरपोर्ट प्रशासन और एयर इंडिया अधिकारी से की, रिफंड जल्द उपलब्ध कराने की मांग की, यात्रियों ने नाराजगी जताई**

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर आने वाले यात्रियों के लिए शुक्रवार की सुबह निराशाजनक रही, जब एयर इंडिया की फ्लाइट संख्या एआई 645 को तकनीकी समस्या के चलते रद्द करना पड़ा। यह फ्लाइट मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से सुबह 9.15 बजे उड़ान भरने वाली थी और इसे जोधपुर में सुबह 11.05 बजे लैंड करना था लेकिन उड़ान से कुछ देर पहले ही एयरलाइंस को विमान में तकनीकी खराबी की सूचना मिली। सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए एयर इंडिया प्रबंधन ने तत्काल उड़ान रद्द करने का निर्णय लिया।

इस फैसले के बाद यात्रियों को खासी परेशानी का सामना करना पड़ा। खासकर उन्हें जिनको जरूरी कार्यों के लिए यात्रा करनी थी। फ्लाइट के रद्द होने की जानकारी यात्रियों को अंतिम समय में मोबाइल मैसेज के माध्यम से दी गई, जिससे कई यात्री असमंजस की स्थिति में आ गए। कुछ यात्री पहले से एयरपोर्ट पहुंच चुके थे, जिनमें वरिष्ठ नागरिक, महिलाएं और बच्चे भी शामिल थे। उन्हें वैकल्पिक उड़ान की तलाश करनी पड़ी या फिर अन्य माध्यमों से यात्रा के लिए रवाना हुए।

यात्रियों ने एयर इंडिया की ओर से समुचित जानकारी और वैकल्पिक व्यवस्था नहीं मिलने की शिकायत एयरपोर्ट प्रशासन और एयर इंडिया अधिकारी से की।

यात्रियों ने एयर इंडिया से वैकल्पिक उड़ान की सुविधा या पूरा रिफंड जल्द से जल्द उपलब्ध कराने की मांग की है। कई यात्रियों का कहना है कि उन्हें न तो काउंटर पर सही जानकारी मिल पाई और न ही हेल्पलाइन से कोई संतोषजनक जवाब मिला। कुछ यात्रियों ने सोशल मीडिया पर भी अपनी नाराजगी जाहिर की और एयरलाइन की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए।

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड-चित्तौडगढ

क्रमांक-टी.एस./2025-26/डी-632 दिनांक-07.06.2025

NOTICE INVITING BID - 11/2025-26

Bids for Construction of Atal Pragati Path Satpura Road to Retuliya Chowk (Ghosunda) in Division Chittorgarh Procurement are invited from interested Bidders upto 6.00 PM of 23.06.2025 Other particulars of the Bid may be visited on the Procurement Portal (http://sppp.rajasthan.gov.in, http://eproc.rajasthan.gov.in) of the state website. The approximate value of the Procurement in Rs. 15797033.00

NIB CODE-PWD2526A1182
UBN No.-PWD2526WSOB04031

Executive Engineer
PWD Dn. Chittorgarh

DIPR/C/7858/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड मालपुरा

क्रमांक : 420 दिनांक : 9-6-2025

निविदा सूचना संख्याः 08/2025-26 खण्ड मालपुरा

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से खण्ड मालपुरा में सडक/ भवन निर्माण हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान एवं राज्य सरकार के अन्य विभागों तथा केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के "ए" एवं "एए", "बी", "सी", "डी" श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से कार्यो हेतु ई-टेण्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में प्राप्त की जावेगी। निविदा से संबंधित विवरण बेवसाईट साईट www.dipronline.org व www.eproc.rajasthan.gov.in एवं www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

NIB code	PWD2526A1187	6	PWD2526WSRC04064
1	PWD2526WLOB04051	7	PWD2526WSRC04065
2	PWD2526WSOB04053	8	PWD2526WSRC04066
3	PWD2526WSOB04057	9	PWD2526WSRC04067
4	PWD2526WSRC04062	10	PWD2526WSRC04068
5	PWD2526WSRC04063	11	PWD2526WSRC04069

DIPR/C/7797/2025 अधिशाषी अभियन्ता सा.नि.वि. खण्ड मालपुरा

इंग्लिश मीडियम स्कूलों को 10 महीने बाद भी शिक्षक नहीं मिले

- **आक्रोशित शिक्षकों माध्यमिक शिक्षा निदेशालय में विरोध प्रदर्शन किया**

बीकानेर, (निसं)। प्रदेश के महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में ऑनलाइन आवेदन के बाद अभ्यर्थियों को सीटों का आवंटन हो गया है। पिछले साल 25 अगस्त को हुई परीक्षा में सिलेक्ट हुए शिक्षकों को अभी तक इंग्लिश मीडियम स्कूलों में पोस्टिंग नहीं मिली है। पदस्थापन में विलंब से शिक्षकों में नाराजगी है।

आक्रोशित शिक्षकों माध्यमिक शिक्षा निदेशालय में विरोध प्रदर्शन किया। शिक्षक संघ एलिमेंट्री सेकेंडरी टीचर एसोसिएशन (रेसटा) के प्रदेशाध्यक्ष मोहर सिंह सलावद के नेतृत्व में शिक्षकों की विभिन्न मांगों को लेकर माध्यमिक शिक्षा निदेशालय के मुख्य प्रशासनिक भवन पर प्रदर्शन करके स्टाफ ऑफिसर डॉ. अशोक कुमार शर्मा, उप निदेशक (प्रशासन) वीणा सोलंकी को मुख्यमंत्री व शिक्षा मंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में जल्द पदस्थापन की प्रक्रिया शुरू करने, शिक्षा विभाग में तबादलों के लिए स्थाई तबादला नीति बनाने, तीन सत्रों की वरिष्ठ अध्यापक से व्याख्याता की बकाया पदोन्नति व अध्यापक से वरिष्ठ अध्यापक की बकाया सभी सत्रों पदोन्नति अतिशीघ्र करवाने व समग्र शिक्षा के कार्यालय के 1382 पदों के लिए इंटरव्यू का परिणाम जल्द जारी करने से संबंधित मांग शामिल हैं। उधर, शिक्षक संघ रेसला के प्रदेशाध्यक्ष गिरधारी गोदारा के नेतृत्व में भी शिक्षकों ने माध्यमिक शिक्षा निदेशालय पर विरोध प्रदर्शन कर अंग्रेजी माध्यम में स्कूलों में चयनित शिक्षकों को जल्द से जल्द पोस्टिंग देने की मांग की। वार्ता में सहमति नहीं बनने पर शिक्षक संघ रेसला ने शिक्षा निदेशालय पर अनिश्चितकालीन धरना लगाने का निर्णय लिया है।

जोधपुर में डॉक्टर्स का पूर्ण कार्य बहिष्कार

जोधपुर, (कासं)। डॉ. एसएन मेडिकल कॉलेज के फार्मेसी विभाग के रेजिडेंट डॉ. राकेश विश्नोई के 13 जून को सेल्फाश खाकर आत्महत्या किए जाने का मामला सातवें दिन शुक्रवार को भी नहीं सुलझ पाया। जयपुर के एसएमएस अस्पताल के बाहर धरना प्रदर्शन जारी है। साथ ही अब जोधपुर में डॉक्टर्स ने पूर्ण कार्य का बहिष्कार आज से कर दिया। मामले में अभी तक डॉ. एसएन. मेडिकल कॉलेज प्रशासन और सरकार की ओर से कोई कार्रवाई नहीं होने से जोधपुर में रेजिडेंट डाक्टर्स भी हड़ताल पर उतर गए हैं। रेजिडेंट डॉक्टर्स एसोसियेशन के अध्यक्ष हीरालाल और महासचिव रंजीत चौधरी आपात स्थिति में सेवाएं दे रहे हैं। रेजिडेंट डॉक्टर डॉ. राकेश विश्नोई के आत्महत्या प्रकरण में न्याय की मांग को लेकर जोधपुर रेजिडेंट डाक्टर्स एसोसियेशन जोधपुर से जुड़े करीब पांच छह सौ डॉक्टर्स हड़ताल पर उतर गए हैं।

रिश्वत मांगने के मामले में मोकलसर सरपंच निलंबित

- **एबीसी ने 10 हजार की रिश्वत लेते ट्रेप किया था**
- **निलंबन अवधि के दौरान किसी भी पंचायत कार्य या कार्रवाई में भाग नहीं ले सकेगा सरपंच**

सूरतगढ़, (निसं)। उपखंड की ग्राम पंचायत मोकलसर के सरपंच गणेशाराम गोदारा को प्रधानमंत्री आवास योजना की राशि स्वीकृत करने के बदले रिश्वत मांगने के आरोप में निलंबित कर दिया गया है। यह कार्रवाई राजस्थान पंचायतीराज अधिनियम 1994 की धारा 38(4) के तहत की गई है। निलंबन आदेश अतिरिक्त आयुक्त एवं शासन उप सचिव इन्द्रजीत सिंह ने जारी किया।

मामले की शिकायत मोकलसर के वार्ड नंबर पांच के निवासी गणेशाराम कुम्हार ने दर्ज करवाई थी। शिकायत में कहा गया था कि सरपंच गणेशाराम गोदारा ने उनके पिता गोविंदराम कुम्हार से प्रधानमंत्री आवास योजना की स्वीकृति के लिए 12,000 की रिश्वत मांगी थी। शिकायत के अनुसार 24 मई 2025 को सरपंच ने 10,000 नकद ले लिए थे। इस मामले को एसीबी ने गंभीरता से लिया और सरपंच को कर्तव्यों में लापरवाही और अपकीर्तिकर आचरण का दोषी पाया। जिसके बाद उसे रंगे हाथ ट्रेप करने के लिए जाल बिछाया गया और कार्रवाई को अंजाम देते हुए गिरफ्तार कर लिया गया। निलंबन के बाद सरपंच को आरोप पत्र जारी किया गया है और वे निलंबन अवधि के दौरान किसी भी पंचायत कार्य या कार्रवाई में भाग नहीं ले सकेंगे।

एसीबी की हनुमानगढ़ और बीकानेर की टीमों ने 24 मई को बड़ी कार्रवाई अंजाम देते हुए सूरतगढ़ पंचायत समिति की ग्राम पंचायत मोकलसर के सरपंच गणेशाराम गोदारा को 10,000 रुपए रिश्वत लेते पुराना हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी स्थित आवास से रंगे हाथों गिरफ्तार किया था।

एसीबी के महानिदेशक के मुताबिक एबीसी हनुमानगढ़ चौकी को शिकायत मिली थी कि मोकलसर सरपंच गणेशाराम गोदारा पंचायत क्षेत्र के निवासी परिवादी के पिता के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना की राशि स्वीकृत करवाने के बदले 12,000 रुपए रिश्वत मांग रहा था। शिकायत की सत्यता जांचने के बाद एसीबी ने जाल बिछाया और सरपंच गणेशाराम को 10,000 रुपए रिश्वत लेते मौके पर गिरफ्तार किया था।

ENGINEERING COLLEGE BHARATPUR HOSTEL
(A Constituent College of Rajasthan Technical University, Kota)
Village-Shyorana, Near Sewar & National Highway-11, Bharatpur

क्रमांक : GECBH/HOSTEL/2025-26/11 दिनांक : 19.06.2025

निविदा आमंत्रण सूचना

अभियांत्रिकी महाविद्यालय भरतपुर के छात्रावासों में मैस संचालन मय खाद्य सामग्री हेतु निविदा आमंत्रित की जाती है जिसकी विस्तृत जानकारी के लिए महाविद्यालय की बेवसाइट www.ecbharatpur.ac.in एवं कार्यदिवस पर महाविद्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

-प्राचार्य

आयोजना एवं परिवेक्षण निदेशालय
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

क्रमांक-डीपीएम/सीसी/मप्रकृप्रौविवि/निविदा-01/2025-26/6095 दिनांक : 20.06.2025

ई-निविदा सूचना-01 (2025-26)

माननीय कुलपति महोदय, म.प्र.कृ.प्रौ.वि.वि. उदयपुर की ओर से कलर प्रिन्टिंग कार्य करने हेतु (अनुमानित लागत रू. 20 लाख), मुहरबन्द निविदाएँ आंमत्रित की जाती है। समस्त शर्तें एवं विस्तृत विवरण www.eproc.rajasthan.gov. in, www.sppp.rajasthan.gov.in व www.mpuat.ac.in पर देखा जा सकता हैं।

UBN No. ATU2526SLRC00109 निदेशक, आयोजना एवं परिवेक्षण निदेशालय

Office of the Superintendent Engineering and Project Manager WCDC, Karauli

No. 742 Date: 13-06-2025

NOTICE INVITING BID
NIB No 14/2025-26

Bids for Gabian stracture work Project PMKSY2.0 Block - Mandrail of estimated value INR 224.17 Lacs [01 Package] are invited from interested bidders up to 06.00 PM, 23-06-2025, Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (https://eproc.rajasthan.gov.in or https://sppp.rajasthan.gov.in/) of the state, departmental website.

NIB CODE:- WSC2526A0304
UBN NO- WSC2526WSRC00504

Superitending Engineer
and Project Manger
WCDC Zila Parishad Karauli

DIPR/C/8227/2025

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता एवं परियोजना प्रबंधक वाटरशेड सेल कम डाटा सेन्टर जिला परिषद जालोर

क्रमांक-एफ( )/निविदा/2025-26/628 दिनांक-11.06.2025

NOTCE INVITING BID NIT NO 05/2025-26

Bids for NRM Works Under PMKSY 2.0 project area in Ahore of estimated Value INR 27.99 Lacs are invited from interested bidders Up to 3.00 PM 24-06-2025, Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (https//eproc.rajasthan.gov.in or https://Sppp. rajasthan.gov.in) of the state.

NIT NO.	Work Name & Block	NIB NO.	UBN NO.
NIT-05/ 2025-26	Open Air Gym, Tine shed & Stage in play Ground and balvatika (Ahore)	WSC2526 A0287	WSC2526 WSRC00483

(Laxman Singh Sandu) SE &
PMWCDC, ZILA PARISHAD JALORE
DDO CODE NO. 28606

DIPR/C/8207/2025

Office of the Superintendent Engineering and Project Manager WCDC, Karauli

No. 739 Date: 12-06-2025

NOTICE INVITING BID
NIB No 13/2025-26

Bids for Talab, talai, Periferal band work Project PMKSY2.0 Block - Mandrail of estimated value INR 68.50 Lacs [01 Package) are invited from interested bidders up to 06.00 PM, 22-06-2025, Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (https://eproc.rajasthan.gov.in or https://sppp.rajasthan.gov.in/) of the state, departmental website.

NIB CODE:- WSC 2526 A0294
UBN NO- WSC, 2526 WSRC00491

Superitending Engineer
and Project Manger
WCDC Zila Parishad Karauli

DIPR/C/8123/2025

राजस्थान सरकार
कार्यालय आबकारी आयुक्त, राजस्थान, उदयपुर

क्रमांक-F.32(B) (Model Shop)EX/L/2025-26-05066/170 दिनांकः 18.06.2025

मॉडल शॉप्स (Model Shops) के अनुज्ञापत्र हेतु ई-नीलामी आमंत्रण सूचना-

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि राज्य सरकार की आज्ञा कमांक प.4 (1) वित्त/आब/2025 दिनांक 29 जनवरी, 2025 के द्वारा जारी आबकारी एवं मद्य-संयम नीति वर्ष 2025-29 के प्रावधानानुसार मॉडल शॉप्स की ऑनलाईन ई-नीलामी के लिये विभागीय वेबसाईट https://iems.rajasthan.gov.in पर निम्नानुसार ई-बोली आमंत्रित की जाती है :-

क्र.सं.	नीलामी की दिनांक	नीलामी का समय
1	07-07-2025	प्रातः 11.00 बजे से सांय 4.00 बजे तक

1. ई-नीलामी में भाग लेने के इच्छुक बोलीदाता द्वारा विभागीय वेबसाइट https://iems.rajasthan.gov.in से अपने के माध्यम से लॉगइन करते हुए विभागीय ई-ऑक्शन पोर्टल में निर्धारित प्रकियानुसार दिनांक 20.06.2025 प्रातः 11.00 बजे से एक बारीय पंजीकरण करने उपरान्त ऑनलाइन नीलामी में भाग लिया जा सकेगा। इच्छुक बोलीदाता को ई-नीलामी में भाग लेने से पूर्व सर्वप्रथम राजस्थान सरकार के पोर्टल https://sso.rajasthan.gov.in पर ""Citizen"" केटेगरी के अन्तर्गत SSO ID बनाना होगा।
2. नीलामी एक कार्य दिवस में न्यूनतम पांच घण्टे की होगी एव उसके पश्चात् जब तक बोली लगती रहे तब तक 10 मिनट के अनन्त विस्तार (indefinite extension) तक जारी रहेगी।
3. बोलीदाता को कम से कम रू. 10,000/- अथवा रू. 10,000 के गुणांक मे बढाकर बोली लगानी होगी।
4. राज्य में शहरीय क्षेत्र जयपुर शहर में 05, जोधपुर में 02, उदयपुर में 02, माउन्ट आबू व आबूरोड एवं अन्य शहरों में एक-एक मॉडल शॉप आवंटित की जायेगी।
5. मॉडल शॉप की न्यूनतम रिजर्व प्राईस जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, माउन्ट आबू तथा आबूरोड के लिये राशि रूपये 1 करोड प्रति मॉडल शॉप तथा अन्य शहरों के लिये राशि रूपये 50 लाख प्रति मॉडल शॉप निर्धारित है।
6. बोलीदाता एक बार में रिजर्व प्राइस / पिछली बोली से 10 प्रतिशत से अधिक राशि बढाकर बोली नही लगा सकेगा।
7. ऑनलाईन नीलामी प्रक्रिया में भाग लेने हेतु प्रति मॉडल शॉप का आवेदन शुल्क रूपये 50,000/- निर्धारित है, जो की अप्रतिदेय (Non-refundable) होगा।
8. मॉडल शॉप्स का जिलेवार एवं उनके आवेदन शुल्क, न्यूनतम रिजर्व प्राईस एवं अमानत राशि का विवरण विभागीय वेबसाईट https://iems.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध रहेगा।
9. ऑनलाईन नीलामी में SSO ID के माध्यम से भाग लेने हेतु इच्छुक आवेदक द्वारा मॉडल शॉप का चयन कर आवेदन शुल्क एवं अमानत राशि यथासंभव नीलामी की तिथि से एक दिवस पहले रात 11.59 तक https://iems.rajasthan.gov.in वेबसाईट पर बोलीदाता के ऑनलाईन भुगतान द्वारा इस वेबसाईट पर जमा हो जानी चाहिये। ऐसा करने से बोलीदाता विभिन्न प्रकार की तकनीकी समस्याओं से बच सकेंगे। ऑनलाईन भुगतान नही होने या अन्यथा तकनीकी कारणों से निर्धारित राशियां जमा नही होने के कारण बोली में भाग नहीं ले पाने के लिये आवेदक स्वंय जिम्मेदार होगा।
10. प्रत्येक मॉडल शॉप के लिये ऑनलाईन नीलामी में भाग लेने हेतु निर्धारित न्यूनतम रिर्जव प्राईस की 2 प्रतिशत राशि अमानत राशि के रूप में आवेदन के साथ जमा करायी जानी है। बिड राशि के अनुसार अतिरिक्त अमानत राशि (Dynamic Earnest Money) भी जमा करानी होगी
11. सफल बोलीदाता को धरोहर राशि, अग्रिम वार्षिक गारन्टी राशि एवं वार्षिक लाईसेन्स ई-नीलामी के संबंध में विस्तृत दिशा निर्देश एवं शर्तों, जो विभागीय वेबसाईट पर उपलब्ध है के अनुसार जमा करानी होगी।
12. निर्धारित समय में वांछित राशियाँ यथा-धरोहर राशि, स्वीकृत वार्षिक गारंटी राशि एवं वार्षिक लाईसेंस फीस जमा न कराने पर स्वीकृति निरस्त कर समस्त जमा राशि खारिज की जायेगी।
13. वर्ष 2025-26 के पात्र अनुज्ञाधारियों को वर्ष क्रमशः 2026-27, 2027-28 व 2028-29 के लिये निर्धारित शर्तो पर अनुज्ञापत्र नवीनीकरण का अवसर दिया जायेगा।
14. बोलीदाता को ई-नीलामी में भाग लेने से पूर्व विभागीय वेबसाईट https://iems.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध आबकारी एवं मद्यसंयम नीति वर्ष 2025-29, समस्त दिशा-निर्देश, प्रक्रिया एवं शर्तों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कर लिया जाना चाहिये।
15. मॉडल शॉप के बन्दोबस्त हेतु वे ही व्यक्ति ई-नीलामी में भाग ले सकेंगें, जो राजस्थान आबकारी अधिनियम, 1950 एवं इसके अन्तर्गत बनाए गए नियमों, आबकारी एवं मध्यसंयम नीति वर्ष 2025-29 व भारतीय संविदा अधिनियम के तहत अनुबन्ध करने की योग्यता रखते हो। इस सम्बन्ध में विस्तृत दिशा निर्देश https://iems.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है। अन्य जानकारी हेतु संबंधित अतिरिक्त आयुक्त जोन, जिला आबकारी अधिकारी एवं जिला आबकारी अधिकारी कार्यालय से सम्पर्क किया जा सकता है।
16. ई-नीलामी के संबंध में अन्य सभी प्रावधान आबकारी एवं मद्यसंयम नीति वर्ष 2025-29 तथा राजस्थान आबकारी अधिनियम, 1950 एवं इसके अन्तर्गत बने नियम के अनुसार रहेगे।

(शिवप्रसाद नकाते)
आबकारी आयुक्त, राजस्थान

DIPR/C/8151/2025

आर.पी.एस.सी के पूर्व सदस्य बाबूलाल कटारा के खिलाफ चलेगा ट्रायल

एसओजी ने ईडी मामलों की विशेष अदालत में पेश की अभियोजन स्वीकृति की प्रति

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। द्वितीय श्रेणी शिक्षक भर्ती-2022 पेपर लीक मामले में एसओजी ने ईडी मामलों की विशेष अदालत में आरपीएससी के पूर्व सदस्य बाबूलाल कटारा के खिलाफ अभियोजन स्वीकृति की प्रति पेश की।

कटारा को एसओजी ने 18 अप्रेल 2024 को गिरफ्तार किया था। कटारा पर आरोप है कि वह आयोग से पेपर अपने घर ले गया था। वहां उसने अपने भांजे विजय डामोर की मदद से पेपर को रजिस्टर में उतारा। बाद में पेपर 60 लाख में सरगना अनिल मीणा को बेच दिया। मीणा ने 80 लाख में पेपर भूपेन्द्र सारण को बेच दिया। एसओजी ने कटारा सहित अन्य आरोपियों के खिलाफ आरोप पत्र पेश किया था। बाद में ईडी की ओर से प्रकरण दर्ज करने पर मामले को सुनवाई के लिए ईडी कोर्ट भेजा गया। लेकिन अभियोजन स्वीकृति नहीं मिलने के कारण मामले में कटारा के खिलाफ ट्रायल नहीं चल पा रहा था। लेकिन सरकार ने कुछ दिन पहले ही कटारा के खिलाफ अभियोजन स्वीकृति जारी करने की अनुमति दी थी।

चलती बस में पेपर हल करवा रहे थे

पेपरलीक के सरगना चलती बस में अभ्यर्थियों को परीक्षा से पहले पेपर हल करवा रहे थे। लेकिन उदयपुर जिले के बेकरिया थाना पुलिस ने 24 दिसम्बर 2022 को इस बस को पकड़ा था। बस में द्वितीय श्रेणी शिक्षक भर्ती के 49 अभ्यर्थी परीक्षा से पहले पेपर हल कर रहे थे। इसके बाद पूरे घटनाक्रम का खुलासा हुआ। एसओजी के अनुसार कटारा को इस परीक्षा के पेपर और उत्तर कुंजी तैयार करने का दायित्व मिला था। लेकिन उसने पेपरलीक कर दिया। कटारा के घर से 51.20 लाख रुपए नकद व 541 ग्राम सोने के 9 आभूषण बरामद हुए थे।

30 जून को होगी मामले की सुनवाई

एसओजी की ओर से विशेष लोक अभियोजक बीएस चौहान की ओर से अदालत में प्रार्थना पत्र पेश कर आरोपी के खिलाफ अभियोजन स्वीकृति जारी करने वाले कार्मिक विभाग के अधिकारी को भी अभियोजन पक्ष का गवाह बनाने की अनुमति मांगी हैं। अदालत मामले में तीस जून को सुनवाई करेगी।

पुलिसकर्मियों ने किया योगाभ्यास

जयपुर। अंतरराष्ट्रीय योग सप्ताह में शुक्रवार को पुलिस कमिश्नरेट में पुलिस अधिकारियों एवं पुलिसकर्मियों ने योगाभ्यास किया।पुलिस कमिश्नरेट में ब्रह्मकुमारीज संस्थान के योग प्रशिक्षकों ने योगाभ्यास करवाया। योगाभ्यास को बढावा देने के लिए पुलिसकर्मियों को योगाभ्यास करवाकर मानसिक तनाव दूर करने का प्रयास किया गया। योग भारतीय परम्परा एवं संस्कृति की विश्व को अनुपम देन है। प्राचीन भारतीय पद्धितयाँ शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य को लेकर हमारी सभी की आवश्यकताओं का सम्पूर्ण जवाब है। पुलिसकर्मियों में विषम परिस्थितियों में कार्य करने को लेकर शारीरिक एवं मानसिक तनाव को दूर करने में योगाभ्यास की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस अवसर पर पुलिस उपायुक्त (मुख्यालय) देवेन्द्र कुमार विश्नोई, अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त (मुख्यालय) शिल्पा चौधरी सहित पुलिस अधिकारी व पुलिसकर्मी उपस्थित थे।

स्व. विजय रूपाणी हम सभी के लिए प्रेरणास्त्रोत : मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शुक्रवार को गांधी नगर पहुंचकर गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. विजय रूपाणी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

गांधीनगर/जयपुर । मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शुक्रवार को गांधीनगर में गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. विजय रूपाणी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुख्यमंत्री ने रूपाणी के देहावसान पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने पार्षद, मेयर से लेकर गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में समर्पित होकर काम किया, जो हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। उनका निधन पूरे देश के लिए अपूरणीय क्षति है। मुख्यमंत्री ने ईश्वर से दिवंगत पुण्यात्मा को अपने परम धाम में स्थान देने की प्रार्थना की तथा शोक संतप्त परिजनों को ढांढस बंधाया। प्रार्थना सभा में केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा, केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री सी. आर. पाटिल व गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं गणमान्यजन मौजूद रहे।

शातिर वाहन चोर किशन वर्मा गिरफ्तार

जयपुर। शास्त्रीनगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दुपहिया वाहन चुराने वाले एक शातिर वाहन चोर किशन वर्मा को गिरफ्तार किया है और उसके पास से चुराई गई चार मोटरसाइकिल बरामद की है। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपित के खिलाफ एक दर्जन से अधिक आपराधिक मामले दर्ज है। आरोपी नशे का आदि है नशा करने के लिए चोरी करता है और जहां चुराए गए वाहनों को पेट्रोल खत्म होने पर वही पर छोड कर दूसरा वाहन चोरी कर ले जाता है।

आरोपित ने जयपुर शहर के अन्य थाना इलाके से दर्जनों वाहन चोरी करना कबूल किया है। जो एक माह पूर्व ही जेल से छूटा था और पून: वाहन चोरी की वारदात में लग गया। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है।

अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त जयपुर (उत्तर-सैंकड) बजरंग सिंह शेखावत ने बताया कि शास्त्री नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दुपहिया वाहन चुराने वाले एक शातिर वाहन चोर किशन वर्मा निवासी नाहरी का नाका शास्त्री नगर जयपुर हाल हरमाड़ा जयपुर को गिरफ्तार किया है। जिसके पास से चोरी की गई चार मोटरसाइकिल बरामद की है और वहीं भट्टा बस्ती से चुराई गई एक्टिवा अपने दोस्त शाहरुख एवं मुन्ना निवासी भट्टा बस्ती को देना बताया है। पुलिस पूछताछ में और भी कई वारदातें खुलने की आशंका जताई जा रही है।

तंबाकू नियंत्रण में राजस्थान रहा देशभर में अव्वल

जयपुर। तंबाकू की लत के खिलाफ छेड़े गए जंग में राजस्थान ने पूरे देश में सबसे प्रभावी प्रदर्शन करते हुए राष्ट्रीय तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम के तहत वर्ष 2024-25 की गतिविधियों में देशभर में पहला स्थान प्राप्त किया है। केंद्र सरकार ने इस सफलता के लिए राजस्थान को 'बेस्ट परफॉर्मेंस अवार्ड' से नवाजा है, जो राज्य के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य तंत्र की संगठित और प्रतिबद्ध कार्यप्रणाली का प्रमाण है।

नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की अतिरिक्त सचिव वी हेकली झिमोमी एवं अतिरिक्त उप महानिदेशक डॉ. एल स्वास्थिचरण द्वारा यह सम्मान प्रदान किया गया। राजस्थान की ओर से यह पुरस्कार राज्य नोडल अधिकारी डॉ. एसएन धौलपुरिया, एएसपीओ नरेंद्र सिंह, एवं एसपीओ डॉ. जकारिया चौहान ने प्राप्त किया।

राज्य सरकार की ओर से चलाए गए तंबाकू विरोधी अभियानों में मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा एवं चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर की सक्रिय भूमिका रही है। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़ ने इस उपलब्धि पर तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम से जुड़े समस्त अधिकारियों व कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि, यह सम्मान टीमवर्क, सतत प्रयासों और जन-जागरूकता की सशक्त रणनीति का परिणाम है। उन्होंने बताया कि 24 सितम्बर 2024 को टोबैको फ्री यूथ कैंपेन 2.0 की शुरुआत की गई थी, जिसके तहत प्रदेश के कोने-कोने में तंबाकू के दुष्प्रभावों को लेकर जागरूकता फैलाई गई।

नई दिल्ली में आयोजित समारोह में राजस्थान की ओर से यह पुरस्कार राज्य नोडल अधिकारी डॉ. एसएन धौलपुरिया, एएसपीओ नरेंद्र सिंह, एवं एसपीओ डॉ. जकारिया चौहान ने प्राप्त किया।

- राष्ट्रीय तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम में प्रथम स्थान
- केंद्र सरकार ने दिया 'बेस्ट परफॉर्मेंस अवार्ड'

निदेशक जनस्वास्थ्य डॉ. रवि प्रकाश शर्मा ने बताया कि तम्बाकू मुक्त शिक्षण संस्थान संस्थान के अंतर्गत 14 हजार 725 जागरूकता कार्यक्रम, 11,850 आईईसी गतिविधियां, कोटपा 2003 की धारा 4 के अंतर्गत प्राधिकृत अधिकारियों के द्वारा 40,232 चालान कार्यवाही, धारा 6 (ए) के अंतर्गत 4020 चालान कार्यवाही, धारा 6 (ब) के अंतर्गत 1123 चलान कार्यवाही की गई। साथ ही, तम्बाकू मुक्ति की दिशा में 15,765 व्यक्तियों की काउन्सलिंग तथा 7539 का उपचार किया गया। टोबैको फ्री यूथ कैंपेन के अंतर्गत तंबाकू से जुड़ी गलत धारणाओं को तोड़ने और युवाओं को इसके दुष्प्रभावों से बचाने के लिए व्यापक कार्यशालाएं, पेंटिंग प्रतियोगिताएं, डिजिटल प्रचार और ग्राम स्तर पर नोडल वालंटियर्स की नियुक्ति की गई।

नशीली कोल्डड्रिंक पिलाकर दुष्कर्म

जयपुर। नशीली कोल्ड ड्रिंक पिलाकर परिचित युवक द्वारा कार में एक महिला से दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। विरोध करने पर गाली-गलौच कर मारपीट की। भांकरोटा थाने में पीड़ित महिला ने आरोपी परिचित के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करवाई है। मामले की जांच थानाधिकारी मनीष गुप्ता कर रहे हैं। पुलिस ने बताया कि भांकरोटा इलाके में रहने वाली महिला ने मामला दर्ज करवाया कि परिचित होने के कारण आरोपी से उसकी बातचीत थी। आरोप है कि भांकरोटा जाने के दौरान उसे आरोपी परिचित मिला। बातचीत के दौरान आरोपी ने उसके अपनी कार में बैठा लिया। कार में बैठाकर आरोपी परिचित ने उसे कोल्ड ड्रिंक पीने के लिए ऑफर की। कोल्ड ड्रिंक में नशा मिला होने के कारण बेहोशी छाने लगी। बेहोशी की हालत में आरोपी ने कार में ही उसके साथ रेप किया।

ऑनलाइन ठगी के आरोपियों को जश्न नहीं मनाने की शर्त पर जमानत

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । राजस्थान हाईकोर्ट ने ऑनलाइन ठगी के आरोप में न्यायिक अभिरक्षा में चल रहे दो आरोपियों को जमानत पर रिहा करने के आदेश दिए हैं। अदालत ने दोनों आरोपियों पर शर्त लगाई है कि वे जमानत पर रिहा होने के बाद सार्वजनिक रूप से जश्न नहीं मनाएंगे।

अदालत ने कहा कि, यदि आरोपी सार्वजनिक रूप से जश्न करते मिले तो राज्य सरकार उनकी जमानत को रद्द कराने के लिए याचिका दायर कर सकती है। जस्टिस गणेश राम मीणा की अवकाशकालीन एकलपीठ ने यह आदेश सौरभ और सौरभ गोस्वामी की जमानत याचिकाओं पर संयुक्त रूप से सुनवाई करते हुए दिए।

जमानत याचिकाओं में अदालत को बताया गया कि प्रकरण में आरोपियों को झूठा फंसाया है। याचिकाकर्ता बीते 25 मार्च से न्यायिक अभिरक्षा में चल रहे हैं। पुलिस ने प्रकरण में विस्तृत जांच कर आरोप पत्र भी संबंधित अदालत में पेश कर दिया है। जिसकी सुनवाई पूरी होने में समय लगने की संभावना है। ऐसे में उन्हें जमानत पर रिहा किया जाए। इसका विरोध करते हुए राज्य सरकार की ओर से कहा गया कि याचिकाकर्ताओं पर ऑनलाइन ठगी करने का गंभीर आरोप है। इसके साथ ही अदालत के सामने आया कि यदि आरोपियों को जमानत दी गई तो ये सार्वजनिक रूप से अपनी रिहाई का जश्न मनाएंगे। मामले की सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने आरोपियों को जमानत पर रिहा करने के आदेश देते हुए उन्हें सार्वजनिक रूप से जश्न नहीं मनाने को कहा है। गौरतलब है कि करौली निवासी इन आरोपियों पर गत मार्च माह में स्थानीय थाने में ऑनलाइन ठगी का मामला दर्ज कराया गया था।

'स्वस्थ तन-मन के लिए योग जरूरी'

जयपुर । राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने शुक्रवार को सेंट्रल पार्क में स्वयं योग करके आम जन को योग क्रियाएं करवाई। उन्होंने युवाओं और 50 वर्ष के ऊपर के लोगों के लिए योग और गति से जुड़ी विभिन्न शारीरिक मुद्राओं का प्रदर्शन कर प्रतिदिन इन्हें कर स्वस्थ जीवन जीने का संदेश दिया।

- योग हजारों सालों से चली आ रही हमारी संस्कृति है : बागड़े

उन्होंने कहा कि योग हजारों साल से चली आ रही हमारी संस्कृति है। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के लिए 21 जून को इसलिए चुना गया की वर्ष के 365 दिन में यह सबसे बड़ा दिन होता है। उन्होंने कहा कि मूलत: योग भारत का हैं। महर्षि पतंजलि ने इसकी शुरुआत की। जो योग नियमित करता है, वह जीवन पर्यंत स्वस्थ रहता है और उसकी आयु बढ़ती है।

राज्यपाल ने शुक्रवार को सेंट्रल पार्क में राजस्थान कॉपरेटिव फेडरेशन, सरस डेयरी द्वारा आयोजित सामूहिक योग एवं स्वास्थ्य शिविर कार्यक्रम में भाग लेने के साथ ही योग शिक्षकों, कलाकारों और योग शिक्षण से जुड़े प्रतिभावान बच्चों को प्रशस्ति पत्र और अपनी ओर से नकद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित भी किया।

इस अवसर पर उद्योग, खेल एवं युवा मामले विभाग मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने कहा कि योग मन, बुद्धि और शरीर की एकता स्थापित करता है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी लगातार काम करते हैं और इसकी प्रेरणा योग को बताते हैं। उन्होंने कहा कि भागमभाग की इस जिंदगी में योग से ही स्वस्थ रहा जा सकता है।

विधायक गोपाल शर्मा ने योग की भारतीय परंपरा और योगेश्वर श्री कृष्ण की चर्चा करते हुए प्रधानमंत्री के नेतृत्व में सीमा पर आतंकवाद के ठिकाने नष्ट करने को महती बताते हुए कहा कि यह भी योग से संभव हुआ।

आरंभ में महाप्रबंधक श्रुति भारद्वाज ने स्वागत उद्बोधन में सरस की गतिविधियों और योग संस्कृति के लिए किए जा रहे कार्यों के बारे में अवगत कराया। सरस डेयरी के अध्यक्ष ओमप्रकाश पुनिया भी उपस्थित रहे। इससे पहले तन्मय सिंह राव और अंकुश ने दुर्लभ योग मुद्राओं का प्रदर्शन किया। डॉ. महेंद्र सिंह राव के नेतृत्व में लोगों ने सामूहिक योग, व्यायाम भी किया।

सी.ए.जी. द्वारा गठित 'वर्किंग ग्रुप' में आई.ए.एस. संदीप वर्मा भी शामिल

जयपुर । भारत के नियंत्रक व महालेखा परीक्षक (सी.ए.जी.) ने सार्वजनिक खरीद की व्यवस्था में सुधार लाने और इसकी ऑडिट में पारदर्शिता बढ़ाने के लिए सभी पक्षकारों के साथ मिलकर एक वर्किंग ग्रुप का गठन किया है। इस समूह में पूरे देश में सिर्फ राजस्थान कैडर के वरिष्ठ आई.ए.एस. और अतिरिक्त मुख्य सचिव संदीप वर्मा को शामिल किया गया है।

गौरतलब है कि इस सात सदस्यीय समूह में अतिरिक्त उप नियंत्रक व महालेखापरीक्षक (ए.डी.ए.आई) प्रमोद कुमार, राजस्थान के अतिरिक्त मुख्य सचिव संदीप वर्मा, राष्ट्रीय राजमार्ग रसद प्रबंधन लि. के पूर्व सीईओ प्रकाश गौड, नीति आयोग के कार्यक्रम निदेशक पार्थ सारथी रेड्डी, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के सी.ई. शैलेन्द्र सिंह, राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास निगम के सीएफओ पी.के.अग्रवाल, आर्थिक सलाहकार के. सुब्रमण्यम शामिल होंगे।

यह समूह सार्वजनिक खरीद प्रक्रिया के मौजूदा नियम-कायदों के अभाव अथवा ऑडिट के दौरान पाई गई खामियों को अंगीकृत करेंगे, ताकि सरकार उन्हें दुरुस्त कर सके। क्या खरीद होनी चाहिए और किस प्रकार से होनी चाहिए, इस बारे में भी सही सलाह और सिफारिश भी पेश करेंगे। अंकेक्षण (ऑडिट) के दौरान दुनियाभर में अपनाई जा रही सर्वोत्तम नीत्तियों अथवा प्रथाओं को सी.ए.जी. के ऑडिटर्स की ट्रेनिंग में भी लागू करने का सुझाव देंगे। यह ग्रुप प्रत्येक 3माह में एक बार रिव्यू मीटिंग बुलायेगा।

आई.ए.एस. संदीप वर्मा

- यह 7 सदस्यीय समूह सार्वजनिक खरीद की व्यवस्था में सुधार लाने और इसकी ऑडिट में पारदर्शिता बढ़ाने के लिए काम करेगा
- राजस्थान कैडर के अतिरिक्त मुख्य सचिव संदीप वर्मा, पूरे देश में इकलौते आई.ए.एस.अफसर हैं, जो इस समूह का हिस्सा बने हैं।

दो लोगों से 7 लाख रुपए की साइबर ठगी

जयपुर। शहर में दो अलग-अलग थाना इलाके में दो लोगों से सात लाख रुपए की साइबर ठगी का मामला सामने आया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच पड़ताल में जुटी है। जवाहर नगर थाना इलाके में साइबर ठगों ने एक युवक के खाते से पांच लाख रुपए निकाल लिए। पुलिस के अनुसार जवाहर नगर निवासी नानकराम ने मामला दर्ज करवाया कि साइबर ठगों ने उसके खाते से पांच लाख रुपए निकाल लिए। यह ठगी 19 जून को हुई है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। जांच में सामने आया कि ठगों ने उसके मोबाइल को हैक किया था और फिर उसके खाते से यह राशि निकाल ली गई। दूसरी घटना में करधनी थाना इलाके में साइबर ठगों ने एक युवक के फोन पे एप को हैक कर उसके खाते से 2 लाख रुपए निकाल लिए। पुलिस के अनुसार निवारू एनक्लेव आर्मी कैम्प निवासी धन्नजंय कुमार ने मामला दर्ज करवाया कि किसी ने उसके फोन पे एप को हैक कर लिया और फिर उसके खाते से ऑनलाइन दो लाख रुपए निकाल लिए गए।

खान विभाग ने ढाई माह में सर्वाधिक 1670 करोड़ रुपए राजस्व कमाया

मुख्यमंत्री भजन लाल के नेतृत्व में खनिज खोज में ए.आई. के उपयोग का पायलट प्रोजेक्ट

जयपुर । खान एवं भूविज्ञान विभाग के प्रमुख सचिव टी. रविकान्त ने बताया कि चालू वित्तीय वर्ष में 17 जून तक 1670 करोड़ रुपए का राजस्व अर्जित हुआ है, जो इसी अवधि का अब तक का सर्वाधिक राजस्व है।

उन्होंने विभागीय गतिविधियों में पारदर्शिता लाने की दिशा में आगे कदम बढ़ाते हुए माइनिंग से जुड़ी सभी एप्लीकेशंस को ऑनलाईन करने के निर्देश दिए हैं ताकि किसी को भी कार्य विशेष के लिए विभाग के कार्यालयों में अनावश्यक नहीं आना पड़े। शुक्रवार को प्रमुख सचिव टी. रविकान्त उदयपुर खनिज भवन में हाईब्रिड मोड पर विभागीय अधिकारियों की बैठक ले रहे थे।

उन्होंने कहा कि विभाग द्वारा माइनिंग प्लान के ऑन लाईन अनुमोदन की व्यवस्था कर दी है इसी तरह से लीज इन्फोर्मेशन और डिमाण्ड सिस्टम की संपूर्ण प्रक्रिया को ऑनलाईन करने से समय व धन की बचत के साथ ही खानधारकों को बड़ी राहत मिलने लगी है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री श्री भजन लाल शर्मा के निर्देशन में अब पायलट आधार पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मशीन लर्निंग सिस्टम का उपयोग मिनरल एक्सप्लोरेशन के लिए शुरु किया जा रहा है। पायलट प्रोजेक्ट के परिणामां का विश्लेषण कर इसे और अधिक विस्तारित किया जाएगा।

इसी तरह से डीएमएफटी को और अधिक व्यावहारिक बनाते हुए खनन प्रभावित क्षेत्र में स्वास्थ्य, षिक्षा, कौषल विकास, महिला बाल विकास सहित सीधे आम आदमी से जुड़े कार्यों को प्राथमिकता दी है।

रविकान्त ने खनिज प्लाट और ब्लॉक तैयार करने के डेलिनियेशन व अन्य कार्यों के निष्पादन में तेजी लाने के साथ ही माइनिंग व जियोलोजी विंग में बेहतर समन्वय पर जोर दिया ताकि अधिक से अधिक माइनर व मेजर मिनरल के ब्लॉक तैयार कर ऑक्शन किया जा सके। इससे माइनिंग सेक्टर में निवेश, रोजगार और राजस्व की बढ़ोतरी तो होगी ही साथ ही अवैध खनन पर भी रोक लग सकेगी। उन्होंने राजस्व लक्ष्यों की पूर्ति सुनिश्चित की जाएगी। उन्होंने फील्ड अधिकारियों से कहा कि राजस्व लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए वित्तीय वर्ष के अंतिम महिनों तक प्रतीक्षा करने के स्थान पर निर्धारित पुरानी व करन्ट बकाया राशि की वसूली के और अधिक कारगर प्रयास करने को कहा।निदेशक माइंस दीपक तंवर ने कहा कि अधीक्षण खनि अभियंता स्तर पर राजस्व वसूली, डेलिनियेशन, प्लॉट ऑक्षन, आरसीसी/ईआरसीसी ठेकों की नीलामी व रायल्टी वसूली आदि प्रमुख बिन्दुओं पर नियतकालीन समीक्षा होनी चाहिए।

खान एवं भूविज्ञान विभाग के प्रमुख सचिव टी. रविकान्त ने शुक्रवार को उदयपुर के खनिज भवन में हाईब्रिड मोड पर विभागीय अधिकारियों की बैठक ली।

- सभी एप्लीकेशंस होगी ऑनलाईन- पारदर्शिता, समय व धन की होगी बचत : टी. रविकांत
- अधिक से अधिक मिनरल प्लाटों के डेलिनियेशन कर ऑक्शन पर जोर

उन्होंने खान धारक पर सरकारी राजस्व की बकाया ड्यू होते ही उसे जमा कराने का नोटिस चले जाना चाहिए ताकि समय पर राजस्व आ सके।

तंवर ने विश्वास दिलाया कि विभाग द्वारा राज्य सरकार द्वारा तय लक्ष्यों के अनुसार प्रतिमाह वसूली की जाये।समीक्षा बैठक में न्यायालयों में विचाराधीन प्रकरणों, विधानसंभा के लंबित प्रकरणों, मुख्यमंत्री व मुख्य सचिव स्तर से प्राप्त पत्रों और अभाव अभियोगों के तयसमय सीमा में निष्पादन के निर्देष दिए गए।

बैठक में संयुक्त सचिव आशु चौधरी, ओएसडी श्रीकृष्ण शर्मा, एसजी सुनील वर्मा, जेएलआर गजेन्द्र सिंह, विभाग के अतिरिक्त निदेशक माइनिंग और भूविज्ञान, अधीक्षण खनिज अभियंता, एमई-एएमई व अधीक्षण भूवैज्ञानिक अधिकारियों ने हिस्सा लिया।

राजधानी जयपुर में शुक्रवार को लगातार दूसरे दिन झमाझम बारिश हुई। करीब एक घंटे की तेज बारिश ने शहर की सड़कों को दरिया में तब्दील कर दिया, जिससे वहां वाहन चालकों और राहगीरों को आवाजाही में काफी परेशानी उठानी पडी।

खाजूवाला ट्रिपल मर्डर केस में तांत्रिक समेत आठ आरोपी गिरफ्तार

'तंत्र-मंत्र से रुपए डबल करने के अंधविश्वास में दो तांत्रिकों समेत तीन लोगों की मौत हो गई थी'

बीकानेर, (निसं)। खाजूवाला में सात दिन पहले हुए ट्रिपल मर्डर केस का पुलिस ने खुलासा कर दिया। पुलिस ने मामले में तांत्रिक समेत आठ लोगों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस पूछताछ में सामने आया कि 50 लाख रुपए पर तांत्रिक की नीयत बिगड़ गई थी। इसलिए उसने सभी को ठिकाने लगाकर रकम लेकर भागने का प्लान बनाया। 12 जून की रात तीन बजे तांत्रिक ने जहरीला हलवा तैयार किया। उसने यह हलवा सभी लोगों गफ्फार, तांत्रिक शैतान सिंह और विक्रम सिंह, इनके अलावा तांत्रिक रामस्वरूप चौधरी, राजेंद्र पूनिया, डॉ. मनोज वर्मा और गफ्फार के बेटे सलमान को खिलाया। हलवा खाकर सलमान को छोड़ बाकी सभी बेहोश हो गए थे। सलमान ने पिता की हालत बिगड़ती देख उसने अपनी मां, घरवालों और रिश्तेदारों को बुला लिया। इसके बाद अपने परिजनों के साथ मिलकर तांत्रिक के पास रखे 50 लाख रुपए गायब करने का प्लान बनाया। सलमान ने 40 लाख रुपए कार में छुपा दिए और 10 लाख रुपए अपने जीजा मुश्ताक को दे दिए थे।

एसपी कार्वेंद्र सिंह सागर ने बताया कि खाजूवाला में तंत्र-मंत्र से रुपए डबल करने के अंधविश्वास के चक्कर में दो तांत्रिकों समेत तीन लोगों की मौत हो गई थी। यहां वार्ड 16 में रहने वाला गफ्फार (40) और चौधरी मेडिकल का मालिक राजेंद्र पूनिया तंत्र-मंत्र से रुपए डबल कराना चाहते थे। जोधपुर निवासी एक तांत्रिक शैतान सिंह के झांसे में आकर उन लोगों ने 50 लाख की रकम जुटा ली थी। यह रकम गफ्फार, राजेंद्र और दो-तीन अन्य लोगों की थी। 11 जून की रात गफ्फार के घर तांत्रिकों का जमावड़ा लग गया। इसमें तेलंगाना का तांत्रिक बी शिवा भी था। रुपयों के लालच में बी शिवा ने सभी लोगों को जहरीला हलवा खिला दिया, जिससे सभी लोग बेहोश हो गए। एसपी कार्वेंद्र सिंह सागर ने बताया कि गफ्फार के परिजन ने बी शिवा से उसके दोनों मोबाइल ले लिए

- **पुलिस पूछताछ में सामने आया कि 50 लाख रुपए पर तांत्रिक की नीयत बिगड़ गई थी, इसलिए उसने सभी को ठिकाने लगाकर रकम लेकर भागने का प्लान बनाया**

और उसे पीटकर भगा दिया। सुबह पांच बजे गफ्फार के भांजे (साली के बेटे) युसूफ निवासी बेरियांवाली ने बी शिवा को अपनी बाइक पर बैठाकर राजीव सर्किल (खाजूवाला) छोड़ दिया। वहां से वह तेलंगाना फरार हो गया। इसके बाद सलमान ने दोनों तांत्रिकों शैतान सिंह और विक्रम सिंह को सलमान ने प्राइवेट टैक्सी से रवाना कर दिया। 50 किलोमीटर दूर जाकर दोनों ने दम तोड़ दिया। रामस्वरूप चौधरी और डॉ. मनोज वर्मा को होश आया तो सलमान और उसके घरवालों ने दोनों को बस में बैठाकर रवाना कर दिया। वे बीकानेर होते हुए मेड़ता रोड पहुंचे।

सलमान और उसके परिवार ने सभी को यही बताया कि बी शिवा 50 लाख रुपए और घर से गहने लेकर भाग गया है। सभी को भगाने के बाद वे सुबह गफ्फार को ईश्र हॉस्पिटल ले गए, जहां डॉक्टर ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। पिता की मौत के बाद भी सलमान अपने झूठ पर अड़ा रहा और बताया कि सभी को जहर देकर बी शिवा पैसे लेकर भाग गया। मामले में तेलंगाना के निजामाबाद से तांत्रिक बी शिवा और उसके ड्राइवर रामू माला की गिरफ्तारी के बाद सलमान और उसके परिवार का सच सामने आ गया। पुलिस ने मामले में अब तक तांत्रिक बी शिवा, उसके ड्राइवर रामू माला, तांत्रिक टीम के सदस्य रामस्वरूप चौधरी, डॉ. मनोज वर्मा, जितेंद्र तिवारी, धर्मेंद्र कुमार राम, सलमान और मुश्ताक को गिरफ्तार किया है।

जानकारी में यह भी सामने आया कि तांत्रिक शैतान सिंह अजमेर में तंत्र-मंत्र के नाम पर ठगी की कोशिश कर चुका था, लेकिन सफलता नहीं मिली। फिर उसने गफ्फार को रुपए डबल करने का झांसा दिया था। कहा था कि 50 लाख का इंतजाम कर लो, फिर करोड़ों में खेलेंगे। रकम जुटाने के बाद गफ्फार ने शैतान सिंह और विक्रम सिंह को पैसों का इंतजाम होने के बारे में बताया था। इसके बाद गफ्फार ने शैतान सिंह को खाजूवाला बुलाया। 9 जून को शैतान सिंह, विक्रम सिंह, कर्नाटक निवासी बी शिवा, रामस्वरूप चौधरी, डॉ. मनोज वर्मा सभी गफ्फार के घर पहुंच गए। महिलाओं को दूसरे घर भेज दिया गया। इसके बाद बी शिवा ने 50 हजार रुपए को डबल करके दिखाया। गफ्फार और राजेंद्र पूनिया (जिन्हें रकम डबल करानी थी) को विश्वास हो गया। खाजूवाला में चौधरी मेडिकल का मालिक राजेंद्र पूनिया पांच लाख रुपए लेकर आया था। यह रकम उसने गफ्फार को दे दी थी। बाकी के 45 लाख गफ्फार ने अलग-अलग जगह से इकट्ठा किए थे।

964 पाक विस्थापितों को नागरिकता प्रमाण पत्र दिये

जोधपुर, (कासं)। जनगणना कार्य निदेशालय, राजस्थान के निदेशक विष्णु चरण मल्लिक ने अपने दो दिवसीय दौरे के दौरान शनिवार को पाक विस्थापितों को नागरिकता प्रमाण पत्र वितरण करेंगे। इससे पहले गुरुवार को डॉ. एस.एन. मेडिकल कॉलेज, जोधपुर के सभागार में आयोजित नागरिकता प्रमाण पत्र वितरण शिविर में 964 पाक विस्थापितों को भारतीय नागरिकता के प्रमाण पत्र सौंपे। जैसे ही नागरिकता प्रमाण पत्र हाथों में आया, दशकों पुराना इंतज़ार आँखों से बह निकला। चेहरे पर संतोष और हृदय में भारत माता से जुड़ाव की अनुभूति स्पष्ट झलक रही थी। विस्थापन की पीड़ा अब भारतीय नागरिक होने के गर्व में परिवर्तित हो गई।

- **नागरिकता प्रमाण पत्र पाकर कई पाक विस्थापितों की आंखें छलकी**

मल्लिक ने इस ऐतिहासिक क्षण को विस्थापितों के संघर्ष, धैर्य और उम्मीद की जीत बताते हुए सभी नव-नागरिकों को बधाई दी और कहा कि आज आपने केवल काग़ज़ नहीं, बल्कि अपनी पहचान पाई है। जिला कलेक्टर गौरव अग्रवाल ने उपस्थित लाभार्थियों को संबोधित करते हुए कहा, आज आपकी भारतीय नागरिकता की औपचारिक शुरुआत है। केंद्र और राज्य सरकारें आपके कल्याण के लिए निरंतर कार्यरत हैं। ये 964 प्रमाण पत्र केवल संख्या नहीं, बल्कि 964 संघर्ष और साहस की कहानियाँ हैं। उन्होंने संविधान प्रदत्त अधिकारों के साथ-साथ नागरिक कर्तव्यों के निर्वहन की भावना को आत्मसात करने का आग्रह किया।

अतिरिक्त जिला कलेक्टर (शहर प्रथम) उदयभानु चारण ने बताया कि दो दिवसीय यह नागरिकता प्रमाण पत्र वितरण शिविर शनिवार को प्रातः नौ बजे से सायं छह बजे तक जारी रहेगा। उन्होंने बताया कि गुरुवार को कुल 964 पाक विस्थापितों को नागरिकता प्रमाण पत्र प्रदान किए गए हैं। उल्लेखनीय है कि यह शिविर केंद्र और राज्य सरकारों की मानवीय संवेदना और दूरदर्शी सोच का प्रत्यक्ष उदाहरण है, जहाँ वर्षों के संघर्ष को सम्मान और स्थायित्व की सौगात मिली है।

दुष्कर्म मामले में फरार दो आरोपी गिरफ्तार

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर जिले के रूपवास थाना क्षेत्र में सामूहिक दुष्कर्म के एक गंभीर मामले में पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए दो फरार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस तीसरे आरोपी की तलाश कर रही है। यह कार्रवाई जिला पुलिस अधीक्षक मृदुल कच्छावा के निर्देशन में चलाए जा रहे वांछित अपराधियों की धरपकड़ अभियान के तहत की गई।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बयाना हरीराम आरपीएस के सुपरविजन और वृताधिकारी रूपवास नीरज भारद्धाज आरपीएस के नेतृत्व में गठित टीम ने यह कार्रवाई की। थाना रूपवास पर दर्ज प्रकरण के अनुसार, 10 जून 2025 को पीड़िता द्वारा तीन आरोपियों के विरुद्ध सामूहिक दुष्कर्म की रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी। पुलिस द्वारा की गई त्वरित जांच एवं अनुसंधान के दौरान नामजद आरोपी रोहित पुत्र राजाराम और रिंकू पुत्र प्रेम सिंह को गिरफ्तार किया गया है। तीसरे आरोपी की तलाश अभी जारी है।

डोडा-पोस्त के साथ एक तस्कर गिरफ्तार

पुलिस की गाड़ी देखकर भागा था, पूछताछ में कई खुलासे होंगे

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले को नशा मुक्त बनाने के लिए चलाए जा रहे अभियान ऑपरेशन सीमा संकल्प के तहत पुलिस ने एक नशा सप्लायर को दबोचा है। गजसिंहपुर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 4 किलो 200 ग्राम डोडा-पोस्त के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। प्रारंभिक पूछताछ में आरोपी ने मादक पदार्थ की तस्करी में संलिप्तता स्वीकार की है। पुलिस अब इस नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों की पड़ताल में जुट गई है।

पुलिस अधीक्षक गौरव यादव ने बताया कि शुक्रवार को गजसिंहपुर थानाधिकारी उप निरीक्षक सीर कौर मय जाब्ता रोही 25 आरबी क्षेत्र में गश्त पर थी। इसी दौरान एक व्यक्ति पुलिस वाहन को देखकर घबरा गया और मौके से भागने की कोशिश करने लगा। संदेह के आधार पर पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए घेराबंदी कर उसे पकड़ लिया। तलाशी के दौरान उस व्यक्ति के पास एक थैले में 4 किलो 200 ग्राम अवैध डोडा पोस्त मिला। पूछताछ में आरोपी की पहचान सुखबीर सिंह (40) पुत्र प्यारा सिंह, निवासी 23 आरबी, हाल निवासी 25 आरबी के रूप में हुई। आरोपी से मौके पर ही प्रारंभिक पूछताछ की गई, जिसमें उसने नशे के कारोबार में संलिप्तता स्वीकार की। पुलिस ने मौके पर ही आरोपी को गिरफ्तार कर लिया और एनडीपीएस एक्ट की धाराओं में मामला दर्ज किया गया है। मामले की आगे की जांच थाना घमूड़वाली के थानाधिकारी पृथ्वीराज को सौंपी गई है। इस कार्रवाई में थानाधिकारी सीर कौर के साथ कॉन्स्टेबल पवन कुमार, महावीर प्रसाद, दयाराम और सुरेन्द्र कुमार शामिल थे।

मानव जीवन को खतरे में डाल रील बनाने वाला युवक कमलेश निरूद्ध

बालोतरा, (नि.सं.)। बालोतरा पुलिस ने रेलवे पटरी पर सोकर ट्रेन अपने ऊपर से गुजरने की रील बनाने का सोशल मीडिया पर वीडियो सामने आने के मामले में आरोपी को निरूद्ध किया है।

- **रेलवे पटरी पर सोकर ट्रेन अपने ऊपर से गुजरने की रील बनाई थी**
- **बालोतरा पुलिस द्वारा सोशल मीडिया पर पैनी नजर रखी जा रही है**

अमित जैन आईपीएस पुलिस अधीक्षक जिला बालोतरा ने बताया कि सोषल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म्स पर गहन साइबर पेट्रोलिंग कर सोशल मीडिया पर कड़ी निगरानी रखने एवं सोशल मीडिया पर किसी भी प्रकार की फैक/भ्रामक पोस्ट, गलत टिप्पणी, आपसी सौहार्द व कानून व्यवस्था बिगाड़ने सम्बन्धी एवं गैर-कानूनी पोस्ट करने वालों को चिन्हित कर उनके विरूद्ध कड़ी कानूनी कार्रवाई के विशेष अभियान के तहत दिए गए दिशा-निर्देशानुसार गोपालसिंह भाटी आरपीएस, नोडल अधिकारी, सोशल मीडिया सेल एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बालोतरा व सुशीलमान आरपीएस वृताधिकारी बालोतरा के निकट सुपरवीजन में चेलसिंह नि. थानाधिकारी बालोतरा के नेतृत्व में पुलिस टीम द्वारा एक युवक द्वारा रेलवे पटरी पर सोकर अपने जीवन को खतरे में डालकर ऊपर से रेल गुजरने की रील बनाकर वायरल करने के मामले को गंभीरता से लेकर त्वरित कार्रवाई करते हुए शख्स कमलेश को निरूद्ध करने में सफलता हासिल की है। जानकारी के अनुसार 20 जून को एक युवक द्वारा रेलवे पटरी पर सोकर अपने जीवन को खतरे में डालकर अपने ऊपर से रेल गुजरने की रील बनाकर इंस्टाग्राम पर अपलोड करना ज्ञात हुआ। रेलवे ट्रेक पर इस तरह की रील का खतरनाक तरीके से बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल करने के मामले को गंभीरता से लेते हुए उक्त शख्स की इंस्टाग्राम आईडी के आधार पर कमलेश (21) पुत्र शिवलाल मेघवाल निवासी तिलवाड़ा पुलिस थाना जसोल के रूप में पहचान कर थाना बालोतरा की टीम राकेश कुमार सउनि. मय जाब्ता द्वारा कस्बा बालोतरा से दस्तयाब किया गया। घटनाक्रम रेलवे पुलिस क्षेत्र का होने से अग्रिम कार्रवाई के लिए आरपीएफ बालोतरा को सुपुर्द किया गया।

एक गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। नान्ता पुलिस टीम ने मुखबीर की सूचना पर अवैध देशी रिवाल्वर सहित आरोपी को गिरफ्तार किया है। नान्ता थाने के उपनिरीक्षक थानाधिकारी नवल किशोर शर्मा ने बताया कि थाने के सहायक उपनिरीक्षक शिवराज सिंह मय जाप्ता इलाके में गश्त कर रहे थे, गश्त के दौरान मुखबीर से सूचना मिली कि मोनीबाबा के आश्रम की तरफ वाली रोड़ पर पॉवरहाउस की दीवार के पास एक व्यक्ति अवैध हथियार लेकर खड़ा है। थानाधिकारी ने बताया कि उक्त सूचना पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची और मुखबीर द्वारा बताये गये हुलिये के आधार पर खड़े व्यक्ति को डिटेन कर उसकी तलाशी ली।

नसीराबाद में सेल्फी पॉइंट का लोकार्पण

नसीराबाद, (निसं)। छावनी क्षेत्र नसीराबाद में पर्यटन को बढ़ावा देने और शहर की सुंदरता में चार चांद लगाने के उद्देश्य से विकसित किए गए 'सेल्फी पॉइंट' का शुक्रवार को लालडिग्गी परिसर में भव्य लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर स्थानीय नागरिक, जनप्रतिनिधि और अधिकारी उपस्थित रहे। इस आकर्षक स्थल का उद्घाटन छावनी परिषद अध्यक्ष ब्रिगेडियर हरीश कुमार द्वारा किया गया। उनके साथ छावनी परिषद सीईओ नीतीश कुमार गुप्ता तथा नगरपालिका सीईओ पिंटू जाट विशेष रूप से उपस्थित रहे। 'सेल्फी पॉइंट' नसीराबाद की सांस्कृतिक विरासत, प्राकृतिक सौंदर्य और आधुनिकता का समन्वय प्रस्तुत करता है। यह स्थान विशेष रूप से युवाओं के लिए एक नया हॉटस्पॉट बनेगा, जहाँ वे अपनी यादों को कैमरे में कैद कर सकेंगे।

नापासर सरपंच सरला देवी को पद से हटाया

सरपंच पर नियम विरुद्ध भुगतान करने के आरोप लगाए गए थे

बीकानेर, (निसं)। यहां ग्राम पंचायत नापासर की सरपंच सरला देवी को पद से हटा दिया गया है। राज्य सरकार के आदेश पर निलंबन के आदेश जारी किए गए हैं। सरला देवी पर नियम विरुद्ध भुगतान करने के आरोप लगाए गए थे। जिसकी जांच के बाद ये कार्रवाई की गई है।

नगर पालिका अधिनियम 2009 की धारा 39(6) के अंतर्गत नगर पालिका नापासर के अध्यक्ष एवं सदस्य पद से तत्काल प्रभाव से हटाने के आदेश जारी किए गए हैं। जांच में पाया गया कि सरला देवी ने अपने कार्यकाल में बिना अनुमोदन के तीन कर्मचारियों की नियुक्ति की, जो नियम विरुद्ध पाई गई। इस मामले में कई स्तर पर जांच हुई है। स्थानीय स्तर पर छानबीन के बाद प्रकरण को स्थानीय निकाय विभाग के मुख्यालय भेजा गया था, जहां की रिपोर्ट तैयार हुई। इसी आधार पर सरपंच को सस्पेंड किया गया है। जांच के बाद दी गई रिपोर्ट में दिए गए स्पष्टीकरण का जवाब संतोषजनक नहीं मिलने पर विभाग ने नियमानुसार यह निर्णय लिया। सरपंच ने भुगतान नियमों के तहत बताया था लेकिन उसके लिए उपलब्ध साक्ष्य नहीं थे। आदेश में कहा गया है कि इस प्रकरण में आवश्यक कानूनी प्रक्रिया का पालन करते हुए कार्यवाही की जाएगी।

युवक का शव मिला

बीकानेर, (निसं)। जिले के श्रीडूंगरगढ़ कस्बे में हौद में युवक का शव मिला है। मौके से गुजर रहे राहगीर की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची थी। शव को बाहर निकाला गया। युवक की उम्र करीब 30 से 35 के करीब है।

पुलिस के अनुसार कालूबास में स्थित एक बाड़ी में बने होद के भीतर पानी में एक युवक का शव मिला है। हौद को पट्टी और टीनशेड से ढका हुआ था। हौद के पास से एक युवक गुजर रहा था। तब उसके ऊपर से टीनशेड हटा हुआ था। युवक ने अंदर झांका तो शव दिखा। इसके बाद श्रीडूंगरगढ़ पुलिस को सूचना दी गई। एसआई मोहन मीणा दल के साथ मौके पर पहुंचे और शव को बाहर निकाला। मृतक की पहचान कस्बे के आडसर बास में रहने वाले अमित डागा (40) पुत्र भीखमचंद डागा के रूप में हुई है। उनके पिता की बाजार में दुकान है। डागा के एक जवान बेटे की मौत पहले हार्टअटैक से हो चुकी है। ये दूसरा बेटा था।

रूपयों के लेनदेन की मानसिक प्रताड़ना के चलते युवक ने आत्महत्या की

सुसाइड नोट मिला, जिसमें कुछ लोगों से रूपये उधार लेने पर रूपयों के लेन-देन को लेकर मानसिक रूप से प्रताड़ित करने का आरोप लगाया है

कोटा, (निसं)। बोरखेड़ा थाना इलाके के देवाशीष सिटी में रूपयों के लेन-देन की मानसिक प्रताड़ना के चलते युवक ने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतक युवक ने आत्महत्या से पहले मौके पर सुसाइड नोट भी छोड़ा जिसमे कुछ लोगों से रूपये उधार लेने पर रूपयों के लेन-देन को लेकर मानसिक रूप से प्रताड़ित करने का आरोप लगाया। पुलिस ने सुसाइड नोट के आधार पर मामला दर्ज कर कुछ जनो के खिलाफ जांच शुरू कर दी है।

बोरखेड़ा थानाधिकारी देवेश भारद्वाज ने बताया कि देवाशीष सिटी निवासी दुष्यंत पांडे (35) ने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। थानाधिकारी ने बताया कि दुष्यंत ने सुसाईड से पहले एक सुसाईड नोट छोड़ा है जिसमें रूपयों के लेन-देन के बारे में लिखा है। थानाधिकारी ने बताया कि दुष्यंत ने सुसाइड नोट में कोटा निवासी नरेन्द्र नागर, रवि तिवारी सहित दो जनों के खिलाफ रूपयों के लेन-देन को लेकर मानसिक प्रताड़ना देते हुए अपनी मौत का जिम्मेदार बताया है। परिजनों को घटना का पता उस समय चला जब गुरूवार को दुष्यंत अपने कमरे में सोने गया और शुक्रवार सुबह काफी देर तक कमरे से बाहर नहीं आया जिस पर परिजनों ने दरवाजा खटखटाया तो कुंडी अंदर से लगी हुई थी। जिसकी सूचना परिजनों ने पुलिस को दी। सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची और दरवाजा तोड़ा तो युवक फांसी के फन्दे पर लटका हुआ मिला।

- **सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और दरवाजा तोड़ा तो युवक फन्दे पर लटका हुआ मिला**

थानाधिकारी ने बताया कि मृतक के शव का पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया, मृतक के पास मिले सुसाइड नोट के आधार पर मामला दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है। जांच के बाद ही स्पष्ट होगा कि मृतक के ऊपर कोई कर्जा बाकि था या कर्जा देने वाले रूपया वसूलने के बाद उसको रूपयों के लिये ब्लैकमेल कर रहे थे।

पिता-पुत्र पर बदमाशों ने एसिड फैंका

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के गंगापुर थाना क्षेत्र में बेखौफ बदमाशों ने बीती रात दुकान से घर जा रहे बाइक सवार पिता-पुत्र पर एसिड फैंक दिया। इससे पिता-पुत्र झुलस गये, जिन्हें जिला अस्पताल में भर्ती करवाया गया है।

जानकारी के अनुसार भरक निवासी जमनालाल (37) पुत्र नंदलाल बैरवा गुरुवार रात्रि को करीब 8.30 बजे सहाड़ा से अपनी दुकान बंदकर बाइक पर बेटे धनराज (17) के साथ घर जा रहा था। इस दौरान माताजी का खेड़ा तिराहे पर एक अन्य बाइक से आये दो बदमाशों ने उन पर एसिड फैंका, जिससे पिता-पुत्र झुलस गये। इसके बाद हमलावर मौके से फरार हो गये। जैसे-तैसे वह अपने बेटे के साथ घर पहुंचा और एंबुलेंस को सूचना दी। इसके बाद एंबुलेंस से उन्हें पहले गंगापुर और बाद में एमजी अस्पताल ले जाया गया। एमजी अस्पताल में पिता-पुत्र का उपचार किया जा रहा है। दूसरी और पुलिस हमले के आरोपियों की तलाश में जुटी हुई है।

केवलादेव पक्षी विहार में ''बया वीवर'' पक्षी की बुनाई कला आकर्षण का केन्द्र बनीं

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर का केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, जिसे पक्षी विहार के नाम से भी जाना जाता है, पक्षी प्रेमियों के लिए स्वर्ग समान है। यहां की हरी-भरी हरियाली और शांत तालाबों के बीच देश-विदेश के रंग-बिरंगे पक्षी आकर्षण का केंद्र हैं। मानसून के मौसम में यहां का प्राकृतिक परिवेश अपनी अनुपम छटा बिखेरता है। इन सबके बीच, छोटा सा ''बया वीवर'' पक्षी, जिसे ''बुनकर पक्षी'' भी कहा जाता है, अपनी अनोखी घोंसला बुनाई की कला से सभी का मन मोह लेता है।

वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर और नगर निगम पार्षद दीपक मुद्गल ने दो माह के अथक प्रयास और गहन अवलोकन के बाद ''बया वीवर'' के जीवन, व्यवहार और कारीगरी को अपनी तस्वीरों और अध्ययन में खूबसूरती से उकेरा है। प्रजनन काल में नर ''बया वीवर'' का सिर और गला चमकीला पीला-नारंगी, चेहरा काला और शरीर भूरा होता है, जो उसे अत्यंत आकर्षक बनाता है। अन्य समय में नर और मादा दोनों गौरैया जैसे भूरे और धारीदार दिखते हैं। इनकी छोटी, मजबूत चोंच बीज, अनाज और कीट खाने के लिए उपयुक्त होती है।

''बया वीवर'' खजूर और बबूल के पेड़ों पर, विशेषकर जल स्त्रोतों के निकट, घास, पत्तियों और पौधों के रेशों से बोतलनुमा लटकते घोंसले बनाते हैं। नर अथक परिश्रम से इन जटिल घोंसलों को बुनता है, जिनमें एक लंबी प्रवेश नली होती है। ये घोंसले शिकारियों, जैसे साँपों, और बारिश से सुरक्षा प्रदान करते हैं। मादा इन घोंसलों का बारीकी से निरीक्षण करती है और सबसे उत्कृष्ट घोंसले का चयन करती है। नर द्वारा बनाए गए घोंसले यदि मादा को पसंद नहीं आते, तो वह उन्हें तोड़कर नए सिरे से निर्माण करता है। यह प्रक्रिया उसकी मेहनत और समर्पण का प्रतीक है। ''बया वीवर'' बीज, चावल, अनाज और कीटों का सेवन करते हैं। प्रजनन काल में ये कीटों का अधिक भक्षण करते हैं, जो पर्यावरण में कीट नियंत्रण में महत्वपूर्ण योगदान देता है। समूह में रहने की उनकी आदत उनकी सामाजिकता को दर्शाती है। नर अपनी बुनाई कला से मादाओं को आकर्षित करते हैं और कई घोंसले बनाकर अपनी कुशलता का प्रदर्शन करते हैं।

वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर दीपक मुद्गल ने ''बया वीवर'' की कारीगरी को तस्वीरों में उकेरा है।

- **छोटा सा ''बया वीवर'' पक्षी, जिसे ''बुनकर पक्षी'' भी कहा जाता है, अपनी अनोखी घोंसला बुनाई की कला से सभी का मन मोह लेता है**

स्थानीय संस्कृति में ''बया वीवर'' के घोंसले मेहनत, कला और प्रकृति की रचनात्मकता के प्रतीक माने जाते हैं। प्रजननकाल के बाद खाली हो चुके इन मजबूत घोंसलों को लोग सजावट के लिए उपयोग करते हैं। प्रत्येक प्रजनन काल में ये पक्षी नए घोंसले बनाते हैं, जो उनकी निरंतर रचनात्मकता को दर्शाता है। दीपक मुद्गल का यह प्रयास न केवल ''बया वीवर'' की कारीगरी और सुंदरता को उजागर करता है, बल्कि जैव-विविधता और पर्यावरण संतुलन के महत्व को भी रेखांकित करता है। उनके अनुसार, अजान बांध, कुम्हेर रोड, बृज विश्वविद्यालय और रूपवास जैसे क्षेत्रों में ''बया वीवर'' के दर्शन और उनकी कला को निहारने का अनुपम सुख प्राप्त किया जा सकता है। यह कारीगरी प्रकृति की अनमोल देन है, जो हमें पर्यावरण संरक्षण और जैव-विविधता के प्रति जागरूक होने की प्रेरणा देती है।

मंदिर के ताले तोड़कर छत्र, जेवर व नकदी चुराई

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के मांडल थाना क्षेत्र में गुरुवार देर रात्रि को मांडल कस्बे की ऐतिहासिक धरोहर मीनार पर स्थित यक्षणी माता मंदिर को चोरों ने बीती रात निशाना बनाया।

अज्ञात चोरों ने मंदिर के ताले तोड़कर अंदर प्रवेश किया और माता की प्रतिमाओं पर लगे छत्र व जेवरात, साथ ही दानपेटी में रखी नकदी चोरी कर ली। सबसे हैरानी की बात यह रही कि शातिर चोर मंदिर परिसर में लगे सीसीटीवी कैमरों का डीवीआर भी अपने साथ ले गए, जिससे उनकी पहचान नहीं सके। सुबह मंदिर पहुंचे पुजारी भारमल माली जब आरती की तैयारी में लगे थे, तब उन्होंने मंदिर में टूटे ताले और बिखरी हालत देखकर तत्काल घटना की सूचना

- **ऐतिहासिक धरोहर मीनार पर स्थित यक्षणी माता मंदिर को चोरों ने निशाना बनाया**

मंदिर समिति अध्यक्ष बिहारीलाल सारस्वत को दी। अध्यक्ष सारस्वत ने पुलिस को सूचित कर मौके पर बुलाया। मंदिर समिति अध्यक्ष बिहारी लाल ने बताया कि पुजारी द्वारा सूचना मिली कि माताजी के मंदिर चोरी हो गई है। पुजारी की सूचना मिलते ही पुलिस को सूचित कर दिया। यहां मौके पर आए तो ताले टूटे हुए मिले, सबसे पहले कैमरे और डीवीआर कमरे के ताले टूटे हुए देखे गए। उसके बाद मेन गेट का ताला टूटा और माता जी के गेट के यहां ताले टूटे थे, दानपात्र का ताला टूटा हुआ दिखाई दिया। माता जी के चांदी के दो मुकुट, दानपात्र जिसमें 25-30 हजार कैश था, कमरे में लगा कैमरा और डीवीआर भी चोर ले गए। घटना की जानकारी मिलते ही समिति पदाधिकारियों में आक्रोश फैल गया। समिति सदस्यों ने पुलिस गश्त को लेकर नाराजगी जताई और चोरों की जल्द गिरफ्तारी की मांग की। मंदिर प्रांगण में श्रद्धालुओं और स्थानीय लोगों की भीड़ जुट गई, सभी ने घटना को लेकर गहरी चिंता जताई। पुलिस ने अज्ञात चोरों के खिलाफ मामला दर्ज कर जाच शुरू कर दी है। स्थानीय लोगों ने पुलिस से रात्रिकालीन गश्त बढ़ाने की मांग की है।

लूट की वारदात करने वाले गिरफ्तार

नोखा, (निसं)। स्थानीय पुलिस ने पेट्रोल पंप लूट के मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। थानाधिकारी अमित स्वामी ने बताया कि मकराना निवासी मनीष भाकर, नागौर निवासी प्रेम मेघवाल, गजनेर निवासी अर्जुन कुम्हार को गिरफ्तार किया है। इन्होंने 11 अप्रैल को बिना नंबर की स्विफ्ट कार से कई पेट्रोल पंपों पर लूट की वारदातों को अंजाम दिया था। पहले

- **11 अप्रैल को कार से कई पेट्रोल पंपों पर लूट की वारदातें की थी**

श्रीबालाजी थाना क्षेत्र के गंठीलासर गांव के पेट्रोल पंप पर लूट का प्रयास किया। सेल्समैन की सतर्कता से वहां असफल रहे। इसके बाद बीकानेर-नागौर राजमार्ग पर नोखा थाना क्षेत्र के चरकड़ा गांव के पेट्रोल पंप से रुपए और मोबाइल लूटे। बदमाशों ने नोखा, मुकाम और काकड़ा होते हुए जसरासर के जसनाथ पेट्रोल पंप पर भी लूट की। फिर उड़सर कैंप, झाड़ेली और थावरिया होते हुए मैनसर पेट्रोल पंप पर वारदात की। लालगढ़ पेट्रोल पंप पर भी लूट की। जोगलसर में पेट्रोल पंप का शीशा तोड़ा, लेकिन सुबह होने के कारण भाग गए।

इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और साउथ अफ्रीका यानि देशों में टेस्ट सीरीज जीतना उनके लिए खिताब से बड़ा है। हर साल आता है, लेकिन इंग्लैंड जैसी जगह पर टेस्ट सीरीज खेलने का मौका करियर में 2-3 बार ही मिलता है।

- शुभमन गिल

भारतीय टेस्ट कप्तान, अपने खेल के बारे में बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी ▶ सचिन तेंदुलकर

दिग्गज बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने कहा- मुझे खुशी है कि उनके (टाइगर पटौदी) के सम्मान में एक पदक देने का फैसला किया गया है। पटौदी ट्रॉफी के रिटायरमेंट पर विवाद हो गया था। ऐसे में तेंदुलकर ने पटौदी की विरासत को कायम रखने की पहल की। इस बार भारत-इंग्लैंड टेस्ट सीरीज के विजेता को एक नई ट्रॉफी दी जाएगी, जो सचिन तेंदुलकर और जेम्स एंडरसन के नाम पर होगी। यह दोनों दिग्गज खिलाड़ियों के सम्मान में एक नई पहल है।

क्या आप जानते हैं ?... भारत और इंग्लैंड के बीच टेस्ट अगस्त 2021 में हुआ था, अब इंग्लैंड ने एक पारी और 76 रनों से बड़ी जीत दर्ज की थी।

ऑस्ट्रेलिया की टेस्ट टीम में बड़ा बदलाव

विंडीज के खिलाफ टेस्ट से लाबुशेन बाहर

नई दिल्ली, 20 जून। बारबाडोस में 25 जून से वेस्टइंडीज के खिलाफ शुरू होने वाले टेस्ट से पहले ऑस्ट्रेलिया ने अपनी टीम में दो बड़े बदलाव किए हैं। मार्नस लाबुशेन को खराब फॉर्म के कारण टीम से बाहर किया गया है, जबकि स्टीव स्मिथ चोट के कारण नहीं खेल पाएंगे। उनकी जगह सैम कोंस्टस और जोश इंग्लिस को टीम में शामिल किया गया है।

ऑस्ट्रेलिया ने अपनी बल्लेबाजी क्रम में बदलाव करने का फैसला वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल में साउथ अफ्रीका के खिलाफ हार के बाद लिया है। लाबुशेन फाइनल में दोनों पारियों में 39 रन ही बना पाए थे लाबुशेन को फाइनल में ओपनिंग की जिम्मेदारी दी गई थी, लेकिन वह 17 और 22 रन ही बना सके। पिछले दो सालों से उनका फॉर्म खराब चल रहा है।

चयन समिति के अध्यक्ष जॉर्ज बेली ने कहा,मार्नस अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन में टीम के लिए अहम हो सकते हैं। हम उनके साथ उनकी कमजोरियों को सुधारने पर काम करेंगे। हमें उनकी क्षमता पर भरोसा है और उम्मीद है कि वह इस चुनौती का सकारात्मक जवाब देंगे। कोंस्टस को तीसरा टेस्ट खेलने का मौका कोंस्टस को तीसरा टेस्ट खेलने का मौका मिलेगा, जिन्होंने भारत के खिलाफ मेलबर्न में डेब्यू पर 65 गेंदों में 60 रन बनाए थे। वहीं, इंग्लिस ने इस साल गाले में श्रीलंका के खिलाफ डेब्यू टेस्ट में शतक जड़ा था।

स्मिथ फाइनल में चोटिल हो गए थे स्मिथ को लॉर्ड्स में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीसरे दिन टेम्बा बवुमा का कैच पकड़ने का प्रयास करने के दौरान दाहिने हाथ की छोटी उंगली में चोट लगी थी। सर्जरी से बचने के लिए उन्हें आठ सप्ताह तक स्प्लिंट पहनना होगा। हालांकि, उम्मीद है कि वह वेस्टइंडीज सीरीज के बाद के मैचों में वापसी कर सकते हैं। बेली ने कहा,स्टीव को घाव ठीक होने के लिए और समय चाहिए। हम एक हफ्ते बाद उनकी स्थिति की समीक्षा करेंगे।

बेली ने कोंस्टसऔर इंग्लिस को मौका देने पर उत्साह जताया। उन्होंने कहा, जोश ने श्रीलंका में अपने डेब्यू टेस्ट में शानदार प्रदर्शन किया था। वह विपक्षी गेंदबाजों पर दबाव बनाने की क्षमता रखते हैं। प्लेइंग इलेवन और बल्लेबाजी क्रम की घोषणा टेस्ट के करीब होगी, लेकिन कोंस्टस के उस्मान ख्वाजा के साथ ओपनिंग करने की संभावना है। पिच की स्थिति के आधार पर ऑस्ट्रेलिया दो स्पिनरों – नाथन लियोन और मैट कुह्नमैन – को उतार सकता है।

गेंदबाजों ने दिलाई बांग्लादेश को 10 रनों की बढ़त

गॉले (श्रीलंका), 20 जून। नईम हसन (पांच विकेट) और हसन महमूद (तीन विकेट) ने शानदार गेंदबाजी का मुजाहिरा करते हुए पहले टेस्ट मैच के चौथे दिन शुक्रवार को दूसरे सत्र में श्रीलंका की पहली पारी को 485 रन रोकने के बाद बंगलादेश ने 10 रनों की मामूली बढ़त ले ली है। श्रीलंका ने कल के चार विकेट पर 368 रनों के स्कोर से आगे खेलना शुरु किया। श्रीलंका का आज सुबह के सत्र में पांचवां विकेट कप्तान धनंजय डीसिल्वा (19) के रूप में गिरा। उन्हें नईम हसन महमूद ने विकेटकीपर लिटन कुमार दास के हाथों कैच आउट कराया। इसके बाद बंगलादेश की गेंदबाजी आक्रमण के आगे श्रीलंका के बल्लेबाज अधिक देर तक नहीं टिक सके। कुसल मेंडिस (पांच) को हसन महसमूद ने आउट किया। मिलन रत्नायके (39), थरिंडु रत्नायके (शून्य) और असिता फर्नांडो (चार) रन बनाकर आउट हुये।

सुद्रासन की नौ बेटियों ने रचा इतिहास

राजकीय बालिका फुटबॉल अकादमी कोटा के लिए सुद्रासन की 9 बालिका खिलाड़ियों का चयन

डीडवाना, 20 जून। । जिले के सुद्रासन गांव की नौ बेटियों ने एक साथ राज्य स्तरीय फुटबॉल अकादमी में चयनित होकर इतिहास रच दिया है। कोटा स्थित राजकीय बालिका फुटबॉल एकेडमी में इन होनहार बेटियों का चयन हुआ है। इस अभूतपूर्व सफलता के पीछे हैं कोच शादाब उस्मानी, जिन्होंने अपनी मेहनत से एक छोटे गांव को राज्य स्तरीय पहचान दिलाई है।

सुद्रासन गांव प्रदेश में चर्चा का विषय बन गया है। इस गांव में आज जश्न का माहौल है। वजह भी खास है – गांव की एक-दो नहीं, बल्कि नौ बेटियों ने राजकीय बालिका फुटबॉल एकेडमी कोटा में अपना स्थान पक्का किया है। इन बेटियों की इस उपलब्धि के पीछे डीडवाना के कोच शादाब उस्मानी की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है।

शादाब ने अपनी मेहनत, लगन और समर्पण भाव से सुद्रासन गांव की बालिकाओं को ना केवल खेल के लिए प्रोत्साहित किया, बल्कि वे रोजाना 35 किलोमीटर का सफर तय कर गांव जाते ओर बेटियों को फुटबॉल का प्रशिक्षण देते रहे। अब उनकी मेहनत रंग लाई है और बीते दिनों जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में बालिका फुटबॉल चयन ट्रायल प्रक्रिया में सुद्रासन गांव की करीब दस बालिका खिलाड़ियों में से 9 खिलाड़ियों का राजकीय बालिका फुटबॉल एकेडमी कोटा के लिए चयन हुआ है। अब यह बेटियां राष्ट्रीय स्तर की ट्रेनिंग के लिए कोटा जाएंगी।

बेटियों के चयन और उपलब्धि पर बलदेव राम मिर्धा स्टेडियम में स्वागत समारोह आयोजित किया, जिसमें मारवाड़ फुटबॉल एकेडमी के डायरेक्टर डॉक्टर सोहन चौधरी ने कोच शादाब उस्मानी के साथ ही चयनित सभी 9 बालिकाओं का भी स्वागत कर हौंसला अफजाई की। इस मौके पर डॉक्टर सोहन चौधरी ने कहा कि सुद्रासन गांव की बेटियों ने अपनी मेहनत के दम पर खेल की दुनिया में अपनी पहचान बनाई है और डीडवाना सहित देशभर के लिए एक मिसाल बनी है। इसलिए जरूरत है ऐसे ही प्रयासों को प्रोत्साहन देने की, ताकि हर गांव से प्रतिभाएं उभरती रहे और देश का नाम रोशन करती रहे।

विश्व पैरा एथलेटिक्स चैम्पियनशिप के शुभंकर 'विराज' का हुआ अनावरण

नई दिल्ली, 20 जून। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और अभिनेत्री सांसद कंगना रनौत ने शुक्रवार को विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप के शुभंकर 'विराज' का अनावरण किया। आज यहां आयोजित एक समारोह में दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप की ब्रांड एंबेसडर कंगना रनौत ने 27 सितंबर से जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में शुरु होने वाले इस टूर्नामेंट के शुभंकर 'विराज' का अनावरण किया गया।

इस अवसर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि यह आयोजन केवल भारत की खेल शक्ति का प्रतीक नहीं है, बल्कि पैरा खिलाड़ियों के अदम्य साहस, जज़्बे और जुझारूपन का महोत्सव है। उन्होंने कहा कि बीते 11 वर्षों में आदरणीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में खेल जगत में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। विशेषकर पैरा खिलाड़ियों को दी गई विश्वस्तरीय सुविधाओं और सम्मान ने भारत को पैरा गेम्स में नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। उन्होंने विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2025 में हिस्सा लेने वाले सभी पैरा खिलाड़ियों को शुभकामनाएँ दी। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार सभी खेलों और खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने और इस आयोजन को सफल बनाने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ खड़ी है। इस अवसर पर भारतीय पैरा ओलंपिक समिति के अध्यक्ष देवेंद्र झाझरिया, मुख्य संरक्षक वनाठी श्रीनिवासन और दिल्ली सरकार के कैबिनेट मंत्री आशीष सूद और अनय गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

सभी जिला संघ के क्रिकेट मैदान, क्रिकेट एकेडमी पर अनुभव योगा टीचर द्वारा योग दिवस आयोजित करे : बिहानी

जयपुर, 20 जून। भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 11 वर्ष पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस आयोजित करने की घोषणा के साथ हर वर्ष 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पूरे भारत वर्ष में आयोजित किया जा रहा है। इसी तरह राज्य स्तरीय योग दिवस का आयोजन खुहडी सैंड हुन्स, जैसलमेर में किया जा रहा है जिसके मुख्य अतिथि राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा योग दिवस में शामिल होंगे। जयदीप बिहाणी, संयोजक तदर्थ समिति, आरसीए द्वारा समस्त जिला संघो से निवेदन किया है कि सभी जिला संघ के क्रिकेट मैदान, क्रिकेट एकेडमी पर कल प्रातकाल अनुभव योगा टीचर द्वारा योग दिवस आयोजित कर खिलाड़ियों को स्वास्थ्य के प्रति प्रोत्साहित करें।

गली क्रिकेट टीम बनी चैम्पियन

रतनगढ़, 20 जून। शहर के न्यू लिंक रोड पर चौधरी मुक्तिधाम के सामने स्तिथ केडी स्पोटर्स ग्राउंड पर चल रही रात्रिकालीन क्रिकेट प्रतियोगिता का सम्मापन गुरुवार देर रात हुआ। आयोजक सुनील वर्मा ने बताया कि। एक सप्ताह तक चली प्रतियोगिता में कुल 16 टीमो ने भाग लिया। गुरूवार रात गली क्रिकेट टीम व आर स्टार के मध्य फाइनल मैच खेला गया। जिसमें गली क्रिकेट टीम ने शानदार जीत दर्ज करते हुए ट्रॉफी पर अपना कब्जा जमाया। मैच समापन पर बीसीएमओ डॉ मनीष तिवाड़ी के मुख्य अतिथ्य में पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। जिसमें समाजसेवी राजेंद्र सिंह बिदावत, नर्सिंग ऑफिसर गौरीशंकर सैनी, अमित सैनी चूरू एंव गजेन्द्र सिंह शेखवात चूरू मंचस्थ थे। इस दौरान विजेता टीम को ट्रॉफी के साथ 11 हजार नगद, एंव उप विजेता टीम को ट्रोफी के साथ 5 हजार नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए बीसीएमओ डॉ मनीष तिवाड़ी ने कहा कि खेल युवाओं के लिए अति आवश्यक है, खेल से युवा वर्ग फिट रहता है। और युवा वर्ग फिट रहेगा तभी देश ओर समाज आगे बढ़ेगा। विजेता व उप विजेता टीम को ट्रॉफी का वितरण संजीवनी हॉस्पिटल के आर्थिक सौजन्य से किया गया। सफल अयोजन के लिए आयोजक सुनील वर्मा,चंद्रप्रकाश सुईवाल,अनिल वर्मा व अशोक वर्मा ने सभी का आभार जताया। मैच का आंखों देखा हाल देवीसिंह पंवार व कान्हा ने संयुक्त रूप से किया।

के.एल. सैनी क्रिकेट अकादमी जीती

जयपुर, 20 जून। अंडर-16 अरावली कप में राजीव गांधी क्रिकेट अकादमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 38 ओवर में 153 रन 10 विकेट के नुकसान पर बनाएं। पुनीत यादव ने 34 और रौनक राकेश गुप्ता ने 31 रनों का योगदान दिया! के एल सैनीक्रिकेट अकादमी की ओर से गोरांश शर्मा ने चार और सतवीर जाट ने तीन विकेट लिया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी के एल सैनीक्रिकेट अकादमी ने 154 रन 8 विकेट के नुकसान पर बनाकर जीत हासिल कर ली। साइओम ने 29, धनुष ने 28 और दीनदयाल सैनी ने 24 रनों का योगदान दिया।राजीव गांधी क्रिकेट अकादमी की ओर से अथर्व सिंह और शुभम गुर्जर ने दो-दो विकेट लिए। मैन ऑफ़ द मैच सतवीर जाट को चुना गया।

राजस्थान राज्य जूनियर बालक फुटबाल प्रतियोगिता कल से कोलीडा सीकर में

जयपुर, 20 जून। राजस्थान फुटबाल संघ के तत्वाधान मेंराजस्थान राज्य जूनियर बालक फुटबाल प्रतियोगिता 22 जून से 24 जून 2025 कोलीडा जिला सीकर में आयोजित की जा रही है। राजस्थान फुटबॉल एसोसिएशन के सचिव दिलीप सिंह शेखावत ने बताया कि प्रतियोगिता में 23 जिले ओर राजस्थान खेल परिषद की अकादमी जोधपुर की टीम भाग लेगी जिसमें लगभग 400 खिलाड़ी भाग लेगे।

प्रतियोगिता के मैच कोलीडा ओर जेरथी के फुटबाल मैदानों में खेले जाएंगे। प्रतियोगिता में से चुने हुए खिलाड़ी राष्ट्रीय फुटबाल प्रतियोगिता में भाग लेगे जो कि अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ के द्वारा आयोजित की जाएगी। जिला फुटबाल संघ सीकर के सचिव सुरेन्द्र मील जी ने बताया कि प्रतियोगिता की सभी तैयारी पूरी कर ली गई है। राजस्थान के विभिन्न जिलों से पहुंचने वाले खिलाड़ियों का जिला फुटबाल संघ की तरफ से स्वागत है।

अध्यक्ष कर्नल मानवेन्द्र सिंह जसोल ओर महिला विंग चेयरपर्सन रोशनी टॉक ने बताया कि राजस्थान फुटबाल संघ के द्वारा गत वर्षों से सभी आयु वर्गों बालक व बालिका में प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाया जा रहा है जिससे अधिक से अधिक खिलाड़ियों को खेलने का मौका मिले और राष्ट्रीय फुटबाल प्रतियोगिताओं में गत वर्ष की भाती अच्छे परिणाम मिले। प्रतियोगिता का ड्रा राजस्थान फुटबाल कार्यालय में सचिव दिलीप सिंह शेखावत, कृष्ण अवतार उपाध्यक्ष राजस्थान फुटबाल संघ जसवंत सिंहा अंतर्राष्ट्रीय फुटबाल खिलाड़ी व अब्दुल जब्बार राष्ट्रीय खिलाड़ी की मौजूदगी में निकाला गया।

राजस्थान जूनियर स्टेट तैराकी 12 जुलाई से कोटा में

जयपुर, 20 जून। राजस्थान तैराकी संघ और कोटा जिला संघ की संयुक्त मेजबानी में राजस्थान जूनियर स्टेट तैराकी प्रतियोगिता का आयोजन 12 से 14 जुलाई तक कोटा के विजयराजे सिंधिया तरणताल पर किया जाएगा। राजस्थान तैराकी संघ के अध्यक्ष अनिल व्यास ने आज यहां बताया कि इस प्रतियोगिता में प्रदेशभर से तैराक हिस्सा लेंगे।

व्यास ने बताया कि स्वीमिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया के जूनियर स्तर पर किए बदलाव के बाद अब राज्य चैंपियनशिप में जूनियर ग्रुप-2 में जहां 13 और 14 वर्ष आयु के तैराक हिस्सा ले सकेंगे, वहीं जूनियर ग्रुप-1 में 15, 16 और 17 वर्ष के तैराक शामिल होंगे। व्यास ने बताया कि एक तैराक अधिकतम पांच स्पर्धाओं में अपनी एंट्री भेज सकता है।

जूनियर चैंपियनशिप के लिए कोटा के प्रमोद यादव को आयोजन सचिव नियुक्त किया गया है।

प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले तैराक अपनी एंट्री आयोजन सचिव को 28 जून तक भेज सकते हैं। प्रतियोगिता में फेडरेशन के डाटाबेस पर रजिस्टर्ड और यूआईडी धारक तैराक ही हिस्सा ले सकेंगे। अनिल व्यास ने बताया कि फ्रीस्टाइल वर्ग में 50, 100, 200, 400, 800 और 1500 मीटर की स्पर्धाएं होंगी, जबकि बैक स्ट्रोक में 50, 100 और 200 मीटर, ब्रेस्टस्ट्रोक में 50, 100 और 200, बटरफ्लाई में 50, 100 और 200, व्यक्तिगत मेडले में 200 और 400 मीटर, फ्रीस्टाइल रिले में 4 गुणा 100 और 4 गुणा 200 मीटर तथा मेडले रिले में 4 गुणा 100 मीटर की स्पर्धा होगी। इस तरह 20 स्पर्धाओं में स्वर्ण, रजत और कांस्य पदकों के लिए मुकाबला होगा।

व्यास ने बताया कि स्टेट चैंपियनशिप में प्रदर्शन के आधार पर ही 10 अगस्त से अहमदाबाद में होने वाली जूनियर नेशनल चैंपियनशिप के लिए राजस्थान टीम का चयन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि स्टेट चैंपियनशिप में फेडरेशन द्वारा निर्धारित मापदंड को पूरा करने, नया कीर्तिमान स्थापित करने और अपनी स्पर्धा में व्यक्तिगत चैंपियन बनने वाले तैराक ही राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए पात्र होंगे।

कार्यालय नगरपालिका देवली (टोंक) राज.
Office of The Municipal Board, Deoli (Tonk) Rajasthan
Tel.- (01434) 232013, E-mail : npdeoli@gmail.com

क्रमांक/न.पा.दे./विकास/ई निविदा/2025-26/2339 दिनांक : 17.06.2025

अल्पकालीन ई-निविदा सूचना संख्या (03/2025-26)

नगरपालिका देवली (टोंक) द्वारा नगर निकाय देवली एवं राजस्थान सरकार के समुचित वर्ग के सूचीबद्व ठेकेदारों/संवेदको एवं केन्द्रीय सरकार/राज्य सरकार व उनके अधिकृत संगठनो में पंजीकृत संवेदकों जो कि राजस्थान सरकार के विभिन्न उपयुक्त श्रेणी के संवेदको के समकक्ष हो, उनके निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑन-लाईन निविदा **दिनांक 18.06.2025 को प्रातः 9.00 बजे से 23.06.2025** को सायं 06.00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित निविदा प्रोसेसिंग शुल्क एवं निविदा शुल्क जरिये RTGS/NEFT द्वारा HDFC Bank Account Number 25991450000134 IFSC Code HDFC0002599 में दिनांक 23.06.2025 को सायं 6.00 बजे तक जमा करवाकर Transction ID सहित बैंक स्टेटमेन्ट की प्रति ऑनलाईन अपलोड करनी होगी। तकनीकी बिड दिनांक 24.06.2025 को एवं वित्तीय बिड तकनीकी निविदा सफल होने के बाद खोली जावेगी। निविदा फार्म एवं ई-निविदा से सम्बन्धित विवरण व शर्तें वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.gov.in एवं कार्यालय समय में उपलब्ध है। 01 कार्य की कुल लागत 24.95 लाख है।
NIB Code – DLB2526A2586
UBN No. - DLB2526WSLB08164

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका देवली
राज.संवाद/सी/25/4471

MUNICIPAL BOARD, NATHDWARA DIST.- RAJSAMAND
S.No./M.B.Nath/Nit/Cont./25/ 7739 Date : 17-06-2025

Notice Inviting Bid

Bids for different works Nit No. 20 /2025-26 of Municipal Board Nathdwara are invited from interested bidders upto date 03-07-25 on18:00 Hours. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in) of the state govt.
UBN No. – 1. DLB2526WSOB08325, 2. DLB2526WSOB08326

Commissioner,
Municipal Board Nathdwara
Raj.Samwad/C/25/4599

कार्यालय नगर पालिका मण्डल बांदीकुई (दौसा)
Email: bandikui.jaipur@gmail.com

क्रमांक :- न.पा.बा./2025/947 दिनांक :- 16.06.2025

BID सूचना

समस्त पंजीकृत संवेदक/सामाजिक संस्थाओ को सूचित किया जाता है कि नगर पालिका बांदीकुई NIB Code. DLB2526A2575 तथा UBN No. DLB2526WSRC08145 कार्य करवाना चाहती है अतः इच्छुक व्यक्ति नियत दिनांक 25.06.2025 को साय: 06:00 बजे तक अपनी दर ऑनलाईन प्रस्तुत कर सकते है। निविदा आनलाईन बेबसाईट http://sppp..goverment.gov.in व https://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है। निविंदा से संबंधित शर्ते उपरोक्त वेबसाईट पर देखी जा सकती है।

अधिशाषी अधिकारी
नगर पालिका बांदीकुई
राज.संवाद/सी/25/4470

कार्यालय जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर
क्रमांक :- जो.वि.प्रा./पश्चिम/2025-26/राजकाज 15964873 दिनांक :- 18/06/2025

ई-बिड सूचना संख्या :- जोन पश्चिम/03/2025-26

जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर की ओर से प्राधिकरण एवं राजकीय विभाग में नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से सिविल कार्यों हेतु मुहरबंद बिड आमंत्रित की जाती हैं। इन कार्यों की अनुमानित लागत, बिड बेचे जाने तथा प्राप्त करने की दिनांक, बिड शर्तें आदि सम्पूर्ण विवरण वेबसाईट http://www.eproc.rajasthan.gov.in, www.joda.rajasthan.gov.in, www.sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है।
NIB Code : JOD2526A0051,
UBN No. : JOD2526WSOB00126 & JOD2526WSOB00127

राज.संवाद/सी/25/4652 अधिशाषी अभियंता (पश्चिम)

कार्यालय बीकानेर विकास प्राधिकरण, बीकानेर
Near Collector Office, Bikaner (Rajasthan) Fax :- 91-151-2226012, Phone :-91-151-2226012, 91-151-2226013
E-Mail Address:- uitbikaner@yahoo.co.in Web Site :- urban.rajasthan.gov.in/uitbikaner

क्रमांक - बीविप्रा./बीका/अ.अभि/2025-26/2754 दिनांक :- 17/06/2025

ई - बिड सूचना संख्या 14-III-2025-26

बीकानेर विकास प्राधिकरण, बीकानेर की ओर से Council of Architecture (COA) में नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत फर्म से Consultancy कार्य हेतु मुहरबंद निविदा आमंत्रित की गई है। इन कार्यों की अनुमानित लागत, निविदा बेचे जाने प्राप्त करने व खोलने की दिनांक एवं निविदा शर्तों आदि सम्पूर्ण विवरण वेबसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in & www.urban.rajasthan.gov.in/uitbikaner पर देखा जा सकता है।
(UBN No. :- ITB2526WSOB00080)

राज.संवाद/सी/25/4650 अधिशाषी अभियन्ता

Rajasthan State Pollution Control Board
Headquarter, 4, Institutional Area, Jhalana Doongri, Jaipur-302004
Phone 0141-27168049, 2716800, E-mail : member-secretary@rpcb.nic.in

F.12(Project-38)/RSPCB/ Date :

Inviting Applications for engagement of Young Interns purely on contract basis at Rajasthan State Pollution Control Board

Rajasthan State Pollution Control Board invites applications for Young Interns at RSPCB purely on contract basis for a period of one year, which is extendable up to a maximum period of one year based on satisfactory performance. Further details are available at RSPCB website:
https://environment.rajasthan.gov.in/content/environment/en/rajasthan-state-pollution-control-board.html#

Application addressed to the MS, RSPCB with application form, CV having details of address, mobile and email for correspondence with relevant supporting documents, experience certificates, etc., shall be submitted to the Member Secretary, Rajasthan State pollution Control board, 4 Institutional Area, Jhalana Doongri, Jaipur by 25.06.2025 physically or by email at interns2025rspcb@gmail.com.

Raj.Samwad/C/25/4639 Member Secretary

कार्यालय नगरपालिका दूनी (टोंक) राज.
Office of the Municipal Board, Dooni (Tonk) Rajasthan

क्रमांक : न.पा.दू./ई-निविदा/2025-26/721 दिनांक : 16.06.2025

-: निविदा सूचना संख्या (02/2025-26) :-

नगरपालिका दूनी (टोंक) द्वारा नगर निकाय दूनी एवं राजस्थान सरकार के समुचित वर्ग के सूचीबद्व ठेकेदारों/संवेदको एवं केन्द्रीय सरकार/राज्य सरकार व उनके अधिकृत संगठनो में पंजीकृत संवेदकों जो कि राजस्थान सरकार के विभिन्न उपयुक्त श्रेणी के संवेदको के समकक्ष हो, उनके निर्धारित प्रपत्र में ई- प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदा दिनांक 18.06.2025 से 30.06.2025 को दोपहर 2.00 बजे तक दरें आमंत्रित की जाती है। तकनीकी बिड दिनांक 30.06.2025 को सायं 04.00 बजे एवं वित्तिय बिड तकनीकी निविदा सफल होने के बाद खोली जावेगी। निविदा फार्म एवं निविदा से ई-निविदा सम्बन्धित विवरण व शर्ते वेबसाईट http://sppp.rajasthan.gov.in, www.eproc.rajasthan.gov.in एवं कार्यालय समय में कार्यालय में उपलब्ध है। 01 कार्य की कुल लागत 40.00 लाख है।
NIB Code – DLB2526A2592
UBN No. – DLB2526SLRC08183

प्रशासक (RAS) नगरपालिका दूनी (टोंक) अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका दूनी (टोंक)
राज.संवाद/सी/25/4466

नगरपालिका मण्डल, रतनगढ़ (राजस्थान)
क्रमांक-निर्माण शाखा/निविदा/2025/934-36 दिनांक : 17.06.2025

निविदा सूचना

नगर पालिका रतनगढ़ की और से नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजिकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र मे ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से ऑन लाईन निविदाऐ आमंत्रित की जाती है जो दिनांक 16.06.2025 से दिनांक 26.06.2025 शाम 6 बजे तक अनुसार डाऊनलोड तथा अपलोड एंव दिनांक 27.06.2025 को सांय 5 बजे खोली जायेगी। समस्त कार्यो के लिए धरोहर राशि कार्य की अनुमानित लागत पर नगर पालिका रतनगढ़ में पंजिकृत सक्षम संवेदको द्वारा 1/2 प्रतिशत राशि एवं अन्य विभागो में पंजिकृत सक्षम संवेदको द्वारा 2 प्रतिशत राशि का डी.डी. अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका रतनगढ़ के नाम व रूपये 500/- का चालान **"M.D. RISL Jaipur"** के नाम जयपुर में देय से ऑन लाईन निविदा खोलने से पूर्व नगर पालिका रतनगढ़ में प्रस्तुत करना होगा।

निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट www.sppp.raj.nic.in http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।
NIB code- DLB2526A2525
UBN :- DLB2526WSOB07970, DLB2526WSOB07974, DLB2526WSOB07981, DLB2526WSOB07983, DLB2526WSOB07992, DLB2526WSOB07993, DLB2526WSOB07994, DLB2526WSOB07995, DLB2526WSOB07996, DLB2526WSOB07997, DLB2526WSOB07998, DLB2526WSOB07999, DLB2526WSOB08000, DLB2526WSOB08001, DLB2526WSOB08002, DLB2526WSOB08003, DLB2526WSOB08004, DLB2526WSOB08006, DLB2526WSOB08007, DLB2526WSOB08008

राज.संवाद/सी/25/4512 अधिशाषी अधिकारी

कार्यालय नगर निगम, कोटा दक्षिण, राजस्थान
राजीव गांधी भवन, दशहरा मैदान, सी.ए.डी. सर्किल-कोटा
email :nnksouth@gmail.com, websites : www.urban,rajasthan.gov.in/nnks, Ph.: 0744-2502142

क्रमांक :- ननिको/दक्षिण/निर्माण/2025/343-357 दिनांक :-18.06.2025

ई-निविदा सूचना संख्या :19/2025-26

नगर निगम कोटा (उत्तर/दक्षिण) द्वारा विभिन्न अभियान्त्रिकी विभागों "A" एवं "AA" श्रेणी एवं नगर निगम कोटा (उत्तर/दक्षिण) में उपर्युक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों सेनिम्नांकित कार्यो हेतु कुल राशि 132.38 लाख रूपये की ऑन लाईन निविदायें दिनांक 23.06.2025 से दिनांक 30.06.2025 तक आमन्त्रित की जाती हैं। टेन्डर बेचे जाने, प्राप्त करने की तिथि व निविदा की शर्ते इत्यादि नगर निगम की वेबसाईट www.urban.rajasthan.gov.in/nnks http://sppp.raj.nic.in, http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती हैं।

क्र. सं.	कार्य का नाम	अनु. लागत (लाखों में)
1	132 केवी महावीर नगर जी.एस.एस. से नया बस स्टेण्ड सुभाष नगर तक 33 केवी केबल का रेस्ट्रोरेशन का कार्य।	7.43
2	नगर निगम कोटा दक्षिण के वार्ड संख्या 71 तलवण्डी सेक्टर 02 व 03 में आर.सी.सी. नाला निर्माण एवं विभिन्न स्थानो पर विभिन्न प्रकृति के सिविल निर्माण/मरम्मत कार्य।	95.00
3	नगर निगम कोटा दक्षिण की सीमा क्षेत्र में आने वाले एस.एन. पारीक हॉस्पिटल से मोदी कॉलेज पुलिया होते हुये धोकड़े वाले हनुमान जी तक नाले की दिवारों पर प्लास्टर मरम्मत, रंगाई, पुताई एवं पैन्टिंग का कार्य।	29.95

NIB Code No.DLB2526A2623 UBN No.DLB2526WSOB08319
UBN No.DLB2526WSOB08320 UBN No.DLB2526WSOB08321

अधिशाषी अभियन्ता
नगर निगम कोटा दक्षिण
राज.संवाद/सी/25/4616

जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड
प्रभास्मि शशि सूर्ययोः रजि. ऑफिस.- विद्युत भवन, ज्योति नगर, जयपुर-302005
Website : http://energy.rajasthan.gov.org/jvvnl, कार्यालय मुख्य अभियन्ता (कोटा संभाग)
नयापुरा पॉवर हाऊस, खाई रोड़, कोटा- 324001, दूरभाष नं. 0744- 2320881, 2450066, ईमेल :- zcekz@jvvnl.org

ई - निविदा सूचना

जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड द्वारा विभिन्न कार्यों हेतु दो भागों में ई-निविदा (तकनीकी-वाणिज्यिक) एआरसी 2023 पर योग्य निविदादाताओं से श्रम दर पर आमंत्रित किये जाते है। झालावाड़ वृत में सहायक अभियन्ता (पवस), बकानी के अन्तर्गत 33/11 केवी बकानी-।। सब स्टेशन व इसके अंतर्गत 33 केवी व 11 केवी लाईन के निर्माण कार्य करने हेतु (टीएन-17/2025-26) (UBN:VVN2526WSOB00111), सहायक अभियन्ता (पवस), सुनेल के अन्तर्गत 33/11 केवी ओसाव सब स्टेशन व इसके अंतर्गत 33 केवी लाईन के निर्माण कार्य करने हेतु (टीएन-18/2025-26) (UBN:VVN2526WSOB00112), सहायक अभियन्ता (पवस), डग के अन्तर्गत 33/11 केवी धतूरीया सब स्टेशन व इसके अंतर्गत 33 केवी लाईन के निर्माण कार्य करने हेतु (टीएन-19/2025-26) (UBN:VVN2526WSOB00113), बारां वृत में सहायक अभियन्ता (पवस), शाहबाद के अन्तर्गत 33/11 केवी संदोकड़ा सब स्टेशन व इसके अंतर्गत 33 केवी व 11 केवी लाईन के निर्माण कार्य करने हेतु (टीएन-20/2025-26) (UBN:VVN2526WSOB00114), सहायक अभियन्ता (पवस), मांगरोल के अन्तर्गत परवन परियोजन सिंगोना प्रोजेक्ट के नवीन कनेक्शन हेतु 3.60 किमी 3 फेज़ 11 केवी लाईन, सबस्टेशन व 33/11 केवी ईश्वरपुरा में 11 केवी बे एक्सटेंशन के निर्माण कार्य करने हेतु (टीएन-21/2025-26) (UBN:VVN2526WSOB00115), बूंदी वृत में सहायक अभियन्ता (पवस), तालेड़ा के अन्तर्गत 33/11 केवी गुवार सब स्टेशन व इसके अंतर्गत 33 केवी व 11 केवी लाईन के निर्माण कार्य करने हेतु (टीएन-22/2025-26) (UBN:VVN2526WSOB00116). योग्य निविदादाता सम्पूर्ण निविदा सम्बन्धित दस्तावेज ई-प्रोक्योरमेन्ट पोर्टल http://www.eproc.rajasthan.gov.in पर दिनांक 20.06.2025 से डाउनलोड कर सकते है। निविदाऐं ऑनलाईन ई-पोर्टल पर दिनांक 30.06.2025 को सांय 05:00 बजे तक ही स्वीकार की जावेगी। निविदा सम्बन्धी जानकारी, कार्य का विवरण इत्यादि जयपुर विद्युत वितरण निगम की वेबसाईट http://energy.rajasthan.gov.in/jvvnl, http://www.sppp.rajasthan.gov.in & http://www.eproc.rajasthan.gov.in से प्राप्त की जा सकती है।

राज.संवाद/सी/25/4625 जेपीआर - 3010 (2025) संभागीय मुख्य अभियंता (कोटा संभाग)
बिजली शिकायतों के लिए टोल फ्री नम्बर 1800 180 6507

जनजाति क्षेत्र में बिजली कनैक्शन समय पर जारी करें : मुख्यमंत्री

अनुसूचित जनजाति परामर्शदात्री परिषद में मुख्यमंत्री भजनलाल ने सरकारी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन पर जोर दिया

जयपुर, 20 जून। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार अनुसूचित जनजातियों के कल्याण एवं ट्राइबल सब प्लान एरिया (टी.एस.पी. क्षेत्र) के सर्वांगीण विकास के लिए पूर्ण प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि राजस्थान अनुसूचित जनजाति परामर्शदात्री परिषद केन्द्र एवं राज्य सरकार की महत्वूपर्ण योजनाओं का सफल क्रियान्वयन सुनिश्चित कर रही है।

शर्मा शुक्रवार को मुख्यमंत्री निवास पर जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग की ओर से आयोजित राजस्थान अनुसूचित जनजाति परामर्शदात्री परिषद की बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि स्थानीय जनप्रतिनिधि प्रशासन के साथ समन्वय स्थापित कर भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के अवसर पर 15 से 30 जून तक चलाए जा रहे धरती आबा जन-भागीदारी अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाते हुए इसे सफल बनाएं। उन्होंने वनाधिकार अधिनियम-2006 के तहत लंबित व्यक्तिगत एवं सामुदायिक दावों का शीघ्र निस्तारण कर अधिकारपत्र जारी करने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने जलसंसाधन विभाग की परियोजनाओं तथा कृषि एवं उद्यानिकी विभाग की गतिविधियों में प्रगति लाने के निर्देश दिए, और जनजाति क्षेत्र में बिजली कनेक्शन समय पर जारी करने के भी निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने टीएसपी क्षेत्र में प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत रोगियों की पहचान और उपचार सहायता पर विशेष ध्यान देने के लिए कहा।

इस अवसर पर जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी, राजस्व मंत्री हेमन्त मीणा, विधायक समाराम, फूल सिंह मीणा, प्रताप लाल भील, श्रीमती शान्ता अमृत लाल मीणा, गोपीचंद मीणा, ललित मीणा, महेन्द्र पाल मीणा, हंसराज मीणा, राजेन्द्र मीणा, रामबिलास, शंकर लाल डेचा एवं मुख्य सचिव सुधांश पंत सहित विभिन्न विभागों के अतिरिक्त मुख्य सचिव, प्रमुख शासन सचिव, शासन सचिव एवं वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शुक्रवार को जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग की ओर से आयोजित राजस्थान अनुसूचित जनजाति परामर्शदात्री परिषद की बैठक को संबोधित किया।

- **मुख्यमंत्री भजनलाल ने बिरसा मुंडा की 150वीं जयन्ती पर 15 से 30 जून तक चलाये जा रहे, ''धरती आबा जन भागीदारी अभियान'' में जन प्रतिनिधियों को सक्रिय भागीदार निभाने को कहा।**

'महाप्रभु की धरती पर आना था इसलिए नहीं गया अमेरिका'

भुवनेश्वर, 20 जून। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि उन्होंने अमेरिका आने का राष्ट्रपति ट्रंप का निमंत्रण इस कारण स्वीकार नहीं किया क्योंकि उन्हें महाप्रभु की धरती ओडिशा आना था।

मोदी ने ओडिशा में भारतीय जनता पार्टी की सरकार के एक वर्ष पूरा होने के अवसर पर यहां आयोजित कार्यक्रम में कहा कि दो दिन पहले वह कनाडा में जी7 देशों की शिखर बैठक में भाग लेने गये थे और अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप ने उन्हें फोन कर अमेरिका आने का न्योता दिया। प्रधानमंत्री ने कहा, ट्रंप ने मुझ से कहा कि आप कनाडा तो आए ही हैं, तो वॉशिंगटन होकर के जाइए, साथ में खाना खाएंगे, बातें करेंगे। उन्होंने बड़े आग्रह से निमंत्रण दिया। मैंने अमेरिका के राष्ट्रपति को कहा कि आपका निमंत्रण के लिए धन्यवाद, मुझे तो महाप्रभु की धरती पर जाना बहुत जरूरी है। और इसलिए मैंने उनके निमंत्रण को नम्रतापूर्वक मना किया और आपका प्यार, महाप्रभु की भक्ति मुझे इस धरती पर खींच करके ले आई है।

'अंग्रेजी जंजीर नहीं जंजीर तोड़ने का जरिया है, यह शर्म नहीं शक्ति है'

नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने अमित शाह के, अंग्रेजी भाषा के खिलाफ दिए गए बयान पर पलटवार करते हुए कहा

- **राहुल ने कहा अगर आप अंग्रेजी सीख जाते हैं तो कहीं भी घुस सकते हैं। आपके लिए बड़ी नौकरियों के दरवाजे खुल सकते हैं।**
- **राहुल ने कहा, भाजपा व आरएसएस वाले नहीं चाहते कि गरीब के बच्चे अंग्रेजी सीखें।**

नई दिल्ली, 20 जून। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के अंग्रेजी बोलने वाले बयान पर कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने पलटवार किया है। कांग्रेस सांसद ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) नहीं चाहते कि गरीब के बच्चे अंग्रेजी सीखे।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने एक्स पर पोस्ट किया कि अंग्रेजी बांध नहीं, पुल है। अंग्रेजी शर्म नहीं, शक्ति है। अंग्रेजी जंजीर नहीं – जंजीरें तोड़ने का औजार है। इसके साथ ही उन्होंने लिखा, भाजपा-आरएसएस वाले नहीं चाहते हैं कि गरीब के बच्चे पढ़ -लिखकर सवाल पूछें, आगे बढ़ें और बराबरी करें। आज के समय में अंग्रेजी उतनी ही जरूरी है जितनी आपकी मातृ भाषा – क्योंकि यही रोजगार दिलाएगी और आत्मविश्वास बढ़ाएगी।

राहुल ने कहा कि भारत की हर भाषा में आत्मा है, संस्कृति है, ज्ञान है। हमें उन्हें संजोना है – और साथ ही हर बच्चे को अंग्रेजी सिखानी है। यही रास्ता है एक ऐसे भारत का, जो दुनिया से मुकाबला करे, जो हर बच्चे को बराबरी का मौका दे।

राहुल ने पोस्ट के साथ एक वीडियो भी शेयर किया है। जिसमें वह बता रहे हैं कि अंग्रेजी एक हथियार है। आप अगर अंग्रेजी सीख जाते हैं तो कहीं भी घुस सकते हैं। आप अमेरिका, जापान और कहीं भी जा सकते हैं। आप कहीं भी काम कर सकते हैं। अंग्रेजी के खिलाफ जो लोग हैं वो नहीं चाहते हैं कि आपको करोड़ों रुपये की नौकरी मिले। वो चाहते हैं कि दरवाजा आपके लिए बंद रहे।

बता दें कि केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा था कि जल्द ही भारत में ऐसा समय आएगा जब अंग्रेजी बोलने वाले खुद को शर्मिंदा महसूस करेंगे। ऐसे समाज का निर्माण अब दूर नहीं है। किसी विदेशी भाषा में आप अपनी संस्कृति, धर्म और इतिहास को नहीं समझ सकते हैं। गृहमंत्री ने यह बात आशुतोष अग्निहोत्री की किताब के विमोचन के मौके पर कही थी।

एयर इंडिया ने चार इंटरनैशन फ्लाइट्स सहित आठ फ्लाइट्स कैंसल कीं

नई दिल्ली, 20 जून। एअर इंडिया ने एक बार फिर अपनी कई उड़ान सेवाएं रद्द कर दी हैं। एयरलाइन की ओर से अब तक चार अंतरराष्ट्रीय उड़ानों सहित आठ फ्लाइट्स को रद्द करने की सूचना दी गई है।

एयरलाइन ने बताया कि शुक्रवार को रखरखाव और परिचालन संबंधी कारणों से एअर इंडिया ने चार अंतरराष्ट्रीय सेवाओं सहित आठ उड़ानें रद्द कर दी हैं। यात्रियों के लिए जल्द से जल्द अपने गंतव्यों तक उड़ान भरने के लिए ग्राउंड पर उसकी टीमें वैकल्पिक व्यवस्था कर रही हैं।

एयरलाइन ने कहा कि उसने यात्रियों से, टिकट रद्द करने पर पूरे पैसों की वापसी या यात्रा को फिर से निर्धारित करने की पेशकश की है।

एयरलाइन ने यात्रियों को सलाह दी है कि वे अपनी उड़ान की स्थिति अपनी वेबसाइट पर देखें या अपडेट के लिए ग्राहक सेवा नंबर पर कॉल करें। बयान में आगे कहा गया, ''विमानों पर बढ़ी जांच, हवाई क्षेत्र प्रतिबंध और खराब मौसम के कारण हम कुछ व्यवधानों से जूझ रहे हैं, जिसके बारे में यात्रियों को उचित रूप से सूचित किया जाएगा। यात्रियों से अनुरोध है कि वे अपनी उड़ानों की स्थिति यहां हमारी वेबसाइट पर देखें।''

इससे पहले एअर इंडिया ने गुरुवार को कहा था कि 21 जून से 15 जुलाई के बीच 16 अंतरराष्ट्रीय मार्गों पर उड़ानें कम की जाएंगी और तीन विदेशी गंतव्यों पर उड़ानें निलंबित रहेंगी। टाटा समूह के स्वामित्व वाली एयरलाइन ने कहा था कि इसका उद्देश्य यात्रियों को अंतिम समय में होने वाली असुविधा को कम करना है। दरअसल, अहमदाबाद हादसे के बाद एयरलाइन ने अपने विमानों की जांच बढ़ा दी है और एहतियातन कई कदम उठा रही है।

'आरक्षण की 50 ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में शामिल करने का आव्हान किया

उन्होंने कहा, यह काम 1994 में नरसिम्हा राव सरकार द्वारा तमिलनाडु में 69 प्रतिशत आरक्षण की रक्षा के लिए किया गया था।

उन्होंने संविधान में संशोधन करने की भी मांग की ताकि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, ओबीसी और ईबीसी के लिए आरक्षण की 50 सीमा को पार किया जा सके।

रमेश ने कहा कि यह सीमा पिछले छह दशकों में सुप्रीम कोर्ट के विभिन्न फैसलों के कारण ही लागू हुई है।

उन्होंने कहा, अनुच्छेद 15(5) निजी शैक्षिणक संस्थानों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, ओबीसी और ईबीसी के लिए आरक्षण की अनुमति देता है। यह पिछले 11 वर्षों से लागू नहीं हो पाया है, जबकि सुप्रीम कोर्ट ने 2006 में डॉ. मनमोहन सिंह सरकार द्वारा लाए गए इस संवैधानिक संशोधन को मान्यता दी था।''

रमेश ने कहा कि कांग्रेस निश्चित रूप से 21 जुलाई 2025 से शुरू हो रहे मानसून सत्र में सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण से जुड़े इन तीनों महत्वपूर्ण मुद्दों को उठाएगी।

पासपोर्ट ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पासपोर्ट तय समय में जारी करें। याचिकाकर्ता की शादी 2023 में हुई थी, लेकिन पति-पत्नी के बीच विवाद शुरू हो गया था। तलाक का केस चल रहा है। रेवती ने इस साल अप्रैल में क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय (आरपीओ) में पासपोर्ट के लिए आवेदन किया था। जब उसका आवेदन आगे नहीं बढ़ा तो उसने जानकारी ली, जिसके बाद उसे बताया गया कि उसे फॉर्म-जे में पति के हस्ताक्षर लेने होंगे, तभी पासपोर्ट आवेदन पर आगे कार्रवाई की जाएगी। आरपीओ ने यह भी कहा कि चूंकि पति-पत्नी के बीच कोर्ट में विवाद चल रहा है, इसलिए यह हस्ताक्षर जरूरी हैं।

रेवती ने इसके खिलाफ हाई कोर्ट में याचिका दायर की। जज ने अपने फैसले में कहा कि कोर्ट के विचार में यह स्पष्ट है कि याचिकाकर्ता द्वारा दिया गया पासपोर्ट आवेदन की स्वतंत्र रूप से प्रक्रिया की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि किसी पत्नी को पासपोर्ट के लिए आवेदन करने से पहले पति की अनुमति या उसके हस्ताक्षर की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। जज ने कहा कि आरपीओ की यह मांग यह दिखाती है कि हमारे समाज में विवाहित महिलाओं को अब भी पति की संपत्ति की तरह देखा जाता है। यह चौंकाने वाली बात है कि पासपोर्ट ऑफिस पति की अनुमति और एक विशेष फॉर्म में उसके हस्ताक्षर पर ही पासपोर्ट की प्रक्रिया आगे बढ़ा रहा था। उन्होंने कहा कि जब पति-पत्नी के बीच रिश्ते पहले से ही बिगड़े हुए हैं, तब आरपीओ की ओर से पति के हस्ताक्षर की मांग करना याचिकाकर्ता से असंभव चीज की उम्मीद करने जैसा है।

राहुल गांधी, अब देश का ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मुलाकात की, जिन्होंने उन्हें शुभकामनाएं दीं और गुलदस्ते भेंट किए।

मुख्यधारा के समाचारपत्रों में उनके जन्मदिन पर पूरे पन्ने के विज्ञापन प्रकाशित किए गए, जो आमतौर पर प्रधानमंत्री के लिए आरक्षित रहते हैं।

राहुल गांधी लंबे समय से बेरोजगारी की समस्या और इस दिशा में नरेंद्र मोदी सरकार की निष्क्रियता की बात कर रहे हैं। इसी मुद्दे पर एक रोज़गार मेला आयोजित किया गया, जिसमें कई कंपनियों को आमंत्रित किया गया और 3000 से अधिक युवाओं को मौके पर ही नियुक्ति पत्र दिए गए।

संदेश साफ़ था, यदि विपक्ष के नेता पद पर रहते हुए वह इतना कुछ कर सकते हैं, तो यह समझा जा सकता है कि देश के प्रधानमंत्री के रूप में वह युवाओं और बेरोजगारों के लिए कितना ज्यादा कर सकते हैं।

राहुल गांधी जातीय जनगणना के अपने एजेंडे को लगातार आगे बढ़ा रहे हैं, जिसे अब सरकार ने भी स्वीकार कर लिया है, और यह उनके नेतृत्व के लिए एक बड़ी सफलता के रूप में देखा जा रहा है।

राहुल गांधी ने एक समिति गठित की है, जिसमें मुख्य रूप से ओबीसी और दलित नेता शामिल हैं। इस समिति के अध्यक्ष कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया हैं, जो इस एजेंडे को और आगे बढ़ाएंगे।

दिलचस्प बात यह है कि सचिन पायलट और अशोक गहलोत दोनों ही इस समिति के सदस्य हैं।

कांग्रेस के सूत्रों का कहना है कि राहुल गांधी का यह आकलन है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आधार खिसक रहा है। भाजपा और संघ परिवार के भीतर गंभीर समस्याएं हैं। अमेरिका और डॉनल्ड ट्रंप अब नरेंद्र मोदी के समर्थक नहीं रहे।

इसके अलावा, बिहार को एनडीए से वापस जीतने की पूरी संभावना है, और इसका मुख्य कारण नीतीश कुमार को माना जा रहा है, जो एक कमज़ोर कड़ी बन गए हैं। सूत्रों का यह तक कहना है कि राहुल गांधी अब प्रधानमंत्री बनने की जल्दबाज़ी में हैं और उन्हें विश्वास है कि उनका पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक आधारित एजेंडा आने वाले समय में उन्हें बड़ा राजनीतिक लाभ दिलाएगा। यह राहुल गांधी 2004 के राहुल गांधी से एकदम अलग हैं, जो उस समय राजनीति की असल दुनिया और उसके तंत्र से पूरी तरह कटे हुए लगते थे।

राजनीति को स्वीकार करना उनके लिए एक लंबी प्रक्रिया रही है, लेकिन अब ऐसा लगता है कि वह परिवार की विरासत को आगे ले जाना चाहते हैं, जिसका इंतज़ार उनकी मां सोनिया गांधी लंबे समय से कर रही थीं।

विशाखापट्टनम ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

से ज़्यादा लोगों के भाग लेने की उम्मीद है।

आंध्र प्रदेश सरकार इस अवसर को यादगार बनाने के लिए गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने के प्रयास का भी समन्वय कर रही है। इसके अतिरिक्त, आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा पंजीकृत प्रतिभागियों को 50 लाख से ज़्यादा योग प्रमाणपत्र दिए जाएँगे, जिससे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का यह संस्करण देश की स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती की यात्रा में एक ऐतिहासिक क्षण बन जाएगा।

इज़रायल खुशी मना रहा है, ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

एयर डिफैंस सिस्टम नष्ट कर दिया है जो कि अब तक ईरान के फोर्दो और नतांज जैसे परमाणु केन्द्रों को बचाए हुए था। इज़रायल की सफलता ने इन ठिकानों को असुरक्षित कर दिया है। पर इज़रायल की यह सफलता ईरान को अपनी रणनीति बदलने को बाध्य कर सकती है और वह अब पारम्परिक प्रतिरोध के बजाय अंधाधुंध प्रतिशोध की नीति अपना सकता है।

यह बदलाव पहले से ही दिखने लगा है। लेबनान में हिज़बुल्लाह ने सीमा पार हमले तेज कर दिए हैं, यमन में हूथियों ने सऊदी और इज़रायली ठिकानों पर मिसाइल और ड्रोन हमले फिर से शुरू कर दिए हैं, और यूएई में तेल इन्फ्रास्ट्रक्चर पर साइबर हमलों की रिपोर्ट सामने आई है, जिनके पीछे ईरान का हाथ माना जा रहा है।

ईरान समर्थित तथाकथित 'प्रतिरोध धुरी' (एक्सिस ऑफ रैज़िस्टैंस) सक्रिय हो रही है, बहुत बड़े-बड़े हमलों से नहीं बल्कि छोटे-छोटे हमलों से, जो धीरे-धीरे नुकसान पहुँचाएं और डर पैदा करें।

इस बीच, खाड़ी देशों की राजशाहियों को एक नाज़ुक भू-राजनीतिक संतुलन साधना पड़ रहा है। सऊदी अरब और यूएई, भले ही ईरान को नियंत्रित करने के इज़रायली रणनीतिक लक्ष्य से सहमत हों, लेकिन वे खुद को पूर्ण युद्ध में झोंकने से बचना चाहते हैं।

2019 में अरामको रिफाइनरी पर हुए हमलों की यादें अभी भी ताज़ा हैं, और दोनों देशों ने चुपचाप इज़रायल और अमेरिका से संयम बरतने का आग्रह किया है, हालाँकि वे चुपचाप अपनी जमीन को पश्चिमी अभियानों के लिए लॉजिस्टिक आधार के रुप में इस्तेमाल होने दे रहे हैं।

इस पूरी स्थिति को वैश्विक शक्तियों की संभावित भागीदारी और जटिल बना रही है। यदि अमेरिका ईरान के, गहराई में स्थित परमाणु स्थलों पर सीधा हमला करता है, तो रूस या चीन की प्रतिक्रिया सामने आ सकती है, शायद सैन्य नहीं, लेकिन हथियारों की आपूर्ति, संयुक्त राष्ट्र में कूटनीतिक विरोध, या दक्षिण चीन सागर जैसे इलाकों में गतिविधियों के जरिए।

इस तरह, इज़रायल की सामरिक (टैक्टिकल) जीत, रणनीतिक (स्ट्रैटेजिक) रूप से भारी पड़ सकती है। फिलहाल ईरान की पारंपरिक सैन्य शक्ति को सीमित कर दिया गया है, लेकिन क्षेत्र को अस्थिर करने की उसकी क्षमता अब भी बरकरार है। यह इलाका एक नए चरण में प्रवेश कर चुका है, जहाँ असुरक्षा, आर्थिक कमज़ोरी और भू-राजनीतिक पुनर्गठन की आशंका है।

अगर इज़रायल और उसके सहयोगियों का लक्ष्य ईरान के परमाणु खतरे को समाप्त करना है, तो उन्हें यह समझना होगा कि ईरान को सैन्य रूप से कमज़ोर करना तो आसान काम था। असली चुनौती अब उस क्षेत्रीय तूफ़ान को संभालने की है जो इस कार्रवाई के बाद उठ सकता है, एक ऐसा संकट जिसे दुनिया की तेल-निर्भर अर्थव्यवस्थाएँ बिल्कुल भी झेल नहीं सकतीं।

ईडी ने वरिष्ठ ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

न्यायाधीश को पत्र लिखा, जिसमें ईडी की कार्रवाई की निंदा की गई और वेणुगोपाल को समन जारी करने के मामले में सीजेआई से स्वत: संज्ञान लेने का आग्रह किया गया। पत्र में कहा गया कि ईडी की इस कार्रवाई का ''कानूनी पेशे की स्वतंत्रता'' और ''वकील-क्लाइंट गोपनीयता के मौलिक सिद्धांत'' पर गंभीर प्रभाव पड़ेगा। पत्र में निम्नलिखित अनुरोध किए गए।

पहला, कानूनी पेशेवरों द्वारा अच्छी भावना से दी गई सलाह के लिए उन्हें दिए गए सम्मन की वैधता व औचित्य की जांच की जाए।

दूसरा, वकील-क्लाइंट गोपनीयता के और अधिक क्षरण को रोकने तथा बार की स्वतंत्रता बनाए रखने के लिए उचित दिशा-निर्देश निर्धारित करना। तत्पश्चात, ईडी के असिस्टेंट डायरेक्टर (मुंबई) ने तत्काल प्रभाव से उक्त समन को वापस ले लिया, जिसके अनुसार वेणुगोपाल को 24 जून को एजेंसी के सामने उपस्थित होने के लिए कहा गया था।

क्या वियतनाम, अफगानिस्तान, क्यूबा और ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

- **पश्चिमी देशों ने बाद में दो बार, पश्चिमी देशों की समर्थक सरकारें बनाने का प्रयास किया था ईरान में, पर, दोनों बार मुँह की खायी थी।**
- **क्या इन असफल प्रयासों से सबक लेकर अमेरिका दोबारा ईरान में अपनी पिट्ठु सरकार बैठाने का प्रयास करने से पहले गंभीरता से सोचेगा।**

लेकिन इसने लंदन और वॉशिंगटन में खलबली मचा दी।

ब्रिटेन, जो अपने आर्थिक हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध था, ने शाह के साथ मिलकर, मोसद्देग को संसदीय माध्यमों से हटाने की कोशिश की, लेकिन विफल रहा। इसके बाद उन्होंने गुप्त तरीकों की ओर रुख किया।

''एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका'' के अनुसार, मोसद्देग की साम्यवाद विरोधी विचारधारा के बावजूद, ब्रिटिश खुफिया एजेंसी ने अमेरिका को यह विश्वास दिलाया कि वे सोवियत प्रभाव के प्रति संवेदनशील हैं। तथा इसलिए अमेरिका को इसमें दखल देना चाहिए।

सीआईए ने ब्रिटिश सीक्रेट इंटेलिजेन्स सर्विस, जिसे एम आई 6 के नाम से जाना जाता था, के साथ मिलकर मोसद्देग को हटाने के लिए एक गुप्त अभियान शुरू किया।

सीआईए ने इसे ''टी पी ए जे ए एक्स'' नाम दिया और एमआई6 ने इसे ''ऑपरेशन बूट'' कहा।

इस तख्तापलट की तैयारी के दौरान, सीआईए और एमआई6 ने मोसद्देग विरोधी माहौल तैयार किया। उन्होंने दुष्प्रचार अभियान चलाया, प्रमुख राजनीतिक और धार्मिक नेताओं को डराया-धमकाया और जनता में अशांति फैलाई।

''द गार्जियन'' की रिपोर्ट के अनुसार, 2013 में सार्वजनिक किए गए सीआईए दस्तावेज़ों में इस तख्तापलट का एक अंदरूनी मसौदा इतिहास भी है, जिसका शीर्षक है: ''ईरान में एक पश्चिम समर्थक सरकार को स्थापित करने का अभियान''। इसका उद्देश्य था: ''कानूनी या गैर-कानूनी तरीकों से मोसद्देग सरकार को हटाना और उसकी जगह शाह के नेतृत्व में पश्चिम समर्थक बनाकर, जनरल ज़ाहेदी को प्रधानमंत्री बनाना।''

इन प्रयासों के परिणामस्वरूप, 1953 में तेहरान में शाह समर्थक प्रदर्शनकारियों जिसे सेना का समर्थन प्राप्त था तथा अमेरिका और ब्रिटेन से वित्तपोषित थे-के बीच झड़पें हुईं, जिनमें लगभग 300 लोग मारे गए।

यह तख्तापलट सफल रहा। मोसद्देग को गिरफ्तार कर लिया गया, उन्हें तीन साल जेल में और फिर जीवनभर नजरबंद रखा गया। जनरल फज़ल्लाह ज़ाहेदी को नया प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया।

सीआईए ने ज़ाहेदी को सत्ता संभालने के दो दिन के भीतर 50 लाख डॉलर की गुप्त मदद भी दी।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, जी-1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौन सिटी, जिला करौली से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2008/27147 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908